3 | राजधानी
नाइट लाइफ में शामिल होंगी 83 और दुकानें

6 | अभिमत
रोजगार योग्य कौशल प्रशिक्षण

10 | विदेश
दुबई में नए साल का जश्न की तैयारी शुरू

11 | राष्ट्रीय
नागरिक ही बना सकते है विकसित राष्ट्र

RNI NO.DELHIN/2012/48369
वर्ष 12 अंक 28
नई दिल्ली, शनिवार, 02 दिसंबर, 2023
पृष्ठ 12 मूल्य ₹ 3
नगर संस्करण

नई दिल्ली, लखनऊ, रायपुर और फरीदाबाद से प्रकाशित

पायनियर

www.dailypioneer.com

टी-20 विश्व कप तक कप्तान रहें रोहित शर्मा
स्पोर्ट्स-12

गलतियों को सुधारने के लिए ज्यादा समय नहीं: पीएम मोदी

- मोदी ने संयुक्त राष्ट्र जलवायु वार्ता में ग्रीन क्रेडिट पहल की शुरुआत की
- 2028 में संयुक्त राष्ट्र जलवायु सम्मेलन या सीओपी33 की भारत द्वारा मेजबानी का प्रस्ताव भी रखा
- कहा-भारत दुनिया की 17 फीसदी आबादी का घर लेकिन वैश्विक कार्बन उत्सर्जन में इसकी हिस्सेदारी चार फीसदी से कम

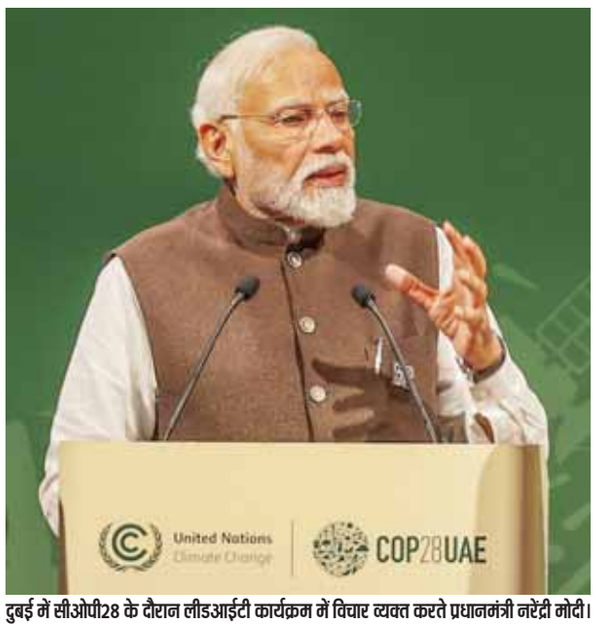

दुबई में सीओपी28 के दौरान लीडआईटी कार्यक्रम में विचार व्यक्त करते प्रधानमंत्री नरेंद्री मोदी।

एजेंसी। दुबई

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शुक्रवार को यह उल्लेख करते हुए कि दुनिया के पास पिछली सदी की गलतियों को सुधारने के लिए ज्यादा समय नहीं है, लोगों की भागीदारी के माध्यम से कार्बन सिंक बनाने पर केंद्रित ग्रीन क्रेडिट पहल की घोषणा की।

उन्होंने 2028 में संयुक्त राष्ट्र जलवायु सम्मेलन या सीओपी33 की भारत द्वारा मेजबानी का प्रस्ताव भी रखा। संयुक्त राष्ट्र जलवायु सम्मेलन (सीओपी28) के दौरान राष्ट्राध्यक्षों और सरकारों के प्रमुखों के उच्च स्तरीय सत्र को संबोधित करते हुए मोदी ने पृथ्वी अनुकूल सक्रिय और सकारात्मक पहल का आह्वान करते हुए कहा कि ग्रीन क्रेडिट पहल कार्बन क्रेडिट से जुड़ी व्यावसायिक मानसिकता से परे है। उन्होंने कहा, यह लोगों की भागीदारी के माध्यम से कार्बन सिंक बनाने पर केंद्रित है और मैं आप सभी को इस पहल में शामिल होने के लिए आमंत्रित करता हूं।

उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि दुनिया के पास पिछली सदी की गलतियों को सुधारने के लिए ज्यादा समय नहीं है। यह पहल अक्टूबर में देश में अधिसूचित ग्रीन क्रेडिट कार्यक्रम के समान है। यह बाजार-आधारित अभिनव तंत्र है जिसे व्यक्तियों, समुदायों और निजी क्षेत्र द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में स्वैच्छिक पर्यावरणीय कार्यों को पुरस्कृत करने के लिए तैयार किया गया है। मोदी ने कहा कि भारत ने विकास और पर्यावरण संरक्षण के बीच संतुलन बनाकर दुनिया के सामने बेहतरीन उदाहरण पेश किया है।

उन्होंने कहा कि भारत दुनिया के उन कुछ देशों में से एक है, जो तापमान को 1.5 डिग्री सेल्सियस तक सीमित करने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर अपने निर्धारित योगदान या राष्ट्रीय योजनाओं को हासिल करने की राह पर है। उद्घाटन सत्र में संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन के कार्यकारी सचिव साइमन स्टिल के साथ मंच पर सीओपी28 के अध्यक्ष सुल्तान अल जाबेर के साथ शामिल होने वाले मोदी एकमात्र नेता थे। उन्होंने कहा, पिछली सदी में मानवता के एक छोटे वर्ग ने प्रकृति का अंधाधुंध दोहन किया। हालांकि, पूरी मानवता को इसकी कीमत चुकानी पड़ रही है, खासकर ग्लोबल साउथ में रहने वाले लोगों को। ग्लोबल साउथ शब्द का इस्तेमाल अक्सर विकासशील और अल्प विकसित देशों के लिए किया जाता है, जो मुख्य रूप से अफ्रीका, एशिया और लैटिन अमेरिका में स्थित हैं। प्रधानमंत्री ने कहा, केवल अपने हितों के बारे में सोचना दुनिया को केवल अंधकार (शेष पेज 9)

कतर से भारतीयों को लाने का प्रयास जारी: नौसेना प्रमुख

नई दिल्ली। नौसेना प्रमुख एडमिरल आर हरि कुमार ने शुक्रवार को कहा कि भारत सरकार कतर में मौत की सजा पाए आठ पूर्व नौसैनिकों को वापस लाने का हरसंभव प्रयास कर रही है। कतर की एक अदालत ने भारत के आठ पूर्व नौसैनिकों को मौत की सजा सुनाई है। एडमिरल कुमार ने संवाददाताओं से कहा, हम उनके हित सुनिश्चित करने के लिए निकटता से काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा, भारत सरकार उनकी वापसी सुनिश्चित करने के लिए हरसंभव प्रयास कर रही है। भारतीय नौसेना के आठ पूर्व कर्मियों को कतर की एक अदालत ने 26 नवंबर को मौत की सजा सुनाई थी। भारत ने कहा था कि वह इस फैसले से बेहद स्तब्ध है और इस मामले में सभी कानूनी विकल्पों (शेष पेज 9)

बेंगलुरु के 68 स्कूलों में बम की धमकी, छात्रों को निकाला

- बम निरोधक दस्ते और पुलिस ने जांच के बाद संकेत दिया कि फर्जी हो सकती है बम की धमकी
- एहतियात के तौर पर स्कूलों और मंदिरों को पर्याप्त सुरक्षा प्रदान करने का निर्देश

एजेंसी। बेंगलुरु

बेंगलुरु के स्कूलों में बम की धमकी के बाद छात्रों को सुरक्षित निकाला गया।

बेंगलुरु में शुक्रवार सुबह 68 निजी विद्यालयों को एक ई-मेल मिला जिसमें उनके परिसर में बम होने का दावा किया गया। पुलिस ने यह जानकारी दी। यह ई-मेल मिलने के बाद स्कूल के कर्मचारी और छात्रों के अभिभावक घबरा गए।

पुलिस ने बताया कि स्कूल प्राधिकारियों ने पुलिस को तत्काल इसकी जानकारी दी जिसके बाद वह बम निरोधक दस्ते और दलों के साथ संबंधित संस्थानों में पहुंची। उसने संकेत दिया कि बम की धमकी फर्जी हो सकती है। कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धरमैया ने कहा कि उन्होंने पुलिस से ई-मेल और उसके स्रोत की गंभीरता से जांच करने और एहतियात के तौर पर स्कूलों और मंदिरों को पर्याप्त सुरक्षा प्रदान करने का निर्देश दिया है। प्रदेश के गृह मंत्री जी. परमेश्वर ने कहा कि एक ईमेल से संदेश भेजा गया था।

ईमेल में कहा गया कि बेंगलुरु में स्कूलों में बम रखा गया है और इसमे बच्चों तथा कर्मचारियों को मारने की धमकी दी गई थी। उन्होंने कहा, हम गंभीरता से मामले की और इसके स्रोत की जांच कर रहे हैं। मैंने आयुक्त और अधिकारियों से बात की है और उन्हें यह पता लगाने के निर्देश दिए हैं कि यह सही है या फर्जी.....। उन्होंने कहा, हम इसकी जांच कर रहे हैं कि इसके पीछे किसका हाथ है और क्या इसमें किसी आतंकवादी संगठन का हाथ तो नहीं है और उसके अनुसार कदम उठाएंगे। अभी यह नहीं बताया जा सकता कि इसके पीछे कौन है..। पुलिस ने बताया कि जिन 68 स्कूलों में बम धमाके की धमकी मिली, उनमें से 48 शहर के भीतर स्थित हैं, जबकि बाकी बेंगलुरु ग्रामीण सीमा क्षेत्र में हैं। उसने बताया कि छात्रों और कर्मचारियों को स्कूल परिसरों से तुरंत बाहर निकाल लिया गया और अभी तक कोई संदिग्ध वस्तु नहीं मिली है।

शहर के पुलिस आयुक्त बी. दयानंद ने कहा कि इन सभी स्कूलों में बम का पता लगाने और निष्क्रिय करने वाले दस्ते भेजे गए थे और संभवत: यह एक अफवाह लगती है। उन्होंने कहा, इससे पहले भी स्कूलों में इसी तरह के धमकी भरे पत्र और ईमेल आए थे और उन्हें शरारत के लिए भेजा गया व फर्जी पाया गया था तथा पुलिस ने इसके पीछे के लोगों की पहचान की थी। पुलिस आज भेजे गए ईमेल की भी जांच कर रही है...अधिकारी और कर्मी इन सभी स्थानों पर (शेष पेज 9)

सोशल कॉमर्स से कारोबारियों को जोड़ने की पहल

- कैट फेसबुक, इंस्टाग्राम और व्हाट्सएप के मालिक मेटा के साथ व्यापारिक समुदाय को सोशल मीडिया का अधिकतम उपयोग करने के लिए प्रशिक्षित करने के लिए एक राष्ट्रीय अभियान चला रहा

राजेश कुमार। नई दिल्ली

सोशल मीडिया पर 45 लाख से अधिक उपयोगकर्ताओं का एक बड़ा आधार होने के कारण भारत में सोशल कॉमर्स एक तेजी से बढ़ता बाजार है। इसका मूल्य वर्तमान में 2023 में 8 अरब डॉलर है और 2030 तक 85 अरब डॉलर तक पहुंचने की क्षमता है। इस अवसर का पूरी क्षमता से उपयोग करने के लिए कारोबारी समुदाय उत्सुक है।

व्यापारियों का संगठन-कन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट), फेसबुक, इंस्टाग्राम और व्हाट्सएप के मालिकों मेटा के साथ मिलकर देश के व्यापारिक समुदाय को व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए सोशल मीडिया का अधिकतम उपयोग करने के लिए प्रशिक्षित करने के लिए एक राष्ट्रीय अभियान चला रहा है, जिससे कि भारत में सामाजिक वाणिज्य को बढ़ावा मिले। संक्षेप में सोशल कॉमर्स का तात्पर्य सीधे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म से उत्पादों या सेवाओं को बेचने और खरीदने से है।

इसमें उत्पादों की खोज से लेकर चेकआउट प्रक्रिया तक हर तत्व शामिल हो सकता है जो उपभोक्ता के संपूर्ण खरीदारी अनुभव को कवर करता है। इसमें आश्चर्य की बात नहीं है कि कई कंपनियां ई-कॉमर्स साइटों और सोशल मीडिया हैंडल दोनों के माध्यम से बिक्री करती हैं। हालाँकि, भारत मेंअधिकांश सामाजिक वाणिज्य लेनदेन नए ब्रांडों और पहली बार उद्यमियों द्वारा संचालित होते हैं। सोशल मीडिया उपयोगकर्ताओं में लगातार वृद्धि को देखते (शेष पेज 9)

दसवीं, बारहवीं बोर्ड की परीक्षा में समग्र श्रेणी नहीं देगा सीबीएसई

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) के एक वरिष्ठ अधिकारी ने शुक्रवार को कहा कि दसवीं और बारहवीं की बोर्ड परीक्षाओं में अब कोई समग्र डिवीजन (श्रेणी) या डिस्टिंक्शन (विशेष योग्यता) नहीं दी जाएगी। अधिकारी ने कहा कि बोर्ड प्रत्येक विषय में अंक देने की प्रक्रिया जारी रखेगा और उच्च शिक्षण संस्थान या संबंधित रोजगार प्रदाता चाहें तो कुल प्राप्तांक निकाल सकते हैं। सीबीएसई के परीक्षा नियंत्रक सान्याम भारद्वाज ने कहा, कोई समग्र श्रेणी, विशेष योग्यता या कुल प्राप्तांक नहीं दिए जाएंगे। यदि किसी अभ्यर्थी ने पांच से अधिक विषयों में परीक्षा दी है तो उसे प्रवेश देने वाला संस्थान या नियोक्ता, उसके लिए सर्वश्रेष्ठ पांच विषयों पर विचार करने का फैसला कर सकता है। भारद्वाज ने कहा कि बोर्ड अंक प्रतिशत की गणना नहीं करता, उसकी घोषणा नहीं करता या सूचना नहीं देता। उन्होंने कहा, यदि उच्च शिक्षा या रोजगार के लिए अंक प्रतिशत आवश्यक है तो गणना प्रवेश देने वाले संस्थान या नियोक्ता द्वारा की जा सकती है। इससे पहले, सीबीएसई स्वस्थ प्रतिस्पर्धा बनाए रखने के उद्देश्य से वरीयता सूची जारी करने की परिपाटी भी समाप्त कर चुका है।

क्विक न्यूज

मिजोरम में मतगणना अब चार दिसंबर को होगी

नई दिल्ली। निर्वाचन आयोग ने शुक्रवार को कहा कि मिजोरम में विधानसभा चुनाव के लिए मतगणना अब निर्धारित समय से एक दिन बाद यानी चार दिसंबर को होगी। पहले मतगणना तीन दिसंबर (रविवार) को होनी थी। निर्वाचन आयोग ने कहा कि यह निर्णय मतगणना की तारीख में बदलाव के विभिन्न हलकों के अनुरोध के बाद इस आधार पर लिया गया कि रविवार का दिन ईसाई-बहुल राज्य मिजोरम के लोगों के लिए विशेष महत्व रखता है। इसने कहा, आयोग ने इन अभ्यावेदनों पर विचार करते हुए, मिजोरम विधानसभा के आम चुनाव के लिए मतगणना की तारीख को तीन दिसंबर, 2023 (रविवार) से संशोधित करके चार दिसंबर, 2023 (सोमवार) करने का निर्णय लिया है। पहले चार अन्य राज्यों राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और तेलंगाना के साथ ही मिजोरम में भी मतगणना तीन दिसंबर को होनी थी। इन सभी राज्यों में पिछले महीने विधानसभा चुनाव हुए थे।

कॉलेजों में देश की उपलब्धियां दर्शाने वाले सेल्फी प्वाइंट

- यूजीसी ने दिए गए निर्देश में कहा, भारत की उपलब्धियों के बारे में जागरूक करने के लिए कॉलेज सेल्फी प्वाइंट तैयार करें

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

युवाओं के बीच सेल्फी का क्रेज अब संस्थागत परिसरों में पाठ्यक्रम का हिस्सा होगा क्योंकि केंद्र ने देश की प्रगति को उजागर करने के लिए विश्वविद्यालयों और कॉलेजों के लिए एक दिशानिर्देश तैयार किया है।

सेल्फी प्वाइंट परिसर के भीतर बनेंगे जहां छात्र, कर्मचारी, आगंतुक 3डी छवियों सहित कई प्रारूपों में पृष्ठभूमि के रूप में उपलब्धियों के साथ सेल्फी ले सकते हैं। राष्ट्रीय विश्वविद्यालय नियामक, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) ने देश भर के विश्वविद्यालयों और कॉलेजों को विभिन्न क्षेत्रों में भारत की उपलब्धियों के बारे में युवाओं के बीच जागरूकता बढ़ाने के लिए परिसर में प्रमुख स्थानों पर सेल्फी प्वाइंट स्थापित करने के लिए कहा है।

संस्थान केवल शिक्षा मंत्रालय द्वारा साझा किए गए 3डी लेआउट में अनुमोदित डिज़ाइन के अनुसार सेल्फी प्वाइंट लगा सकते हैं। यूजीसी के एक अधिकारी ने कहा कि सेल्फी प्वाइंट की थीम में 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' जैसी राष्ट्रीय पहल और राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी), 2020 के प्रमुख क्षेत्रों का एक व्यापक स्पेक्ट्रम शामिल है।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) के सचिव मनीष जोशी ने कहा कि ये सेल्फी प्वाइंट न केवल गर्व के स्रोत के रूप में काम करेंगे, बल्कि प्रत्येक नागरिक को उन परिवर्तनकारी पहलों के बारे में भी बताएंगे जिन्होंने वैश्विक मंच पर भारत के विकास को बढ़ावा दिया है। छात्रों और आगंतुकों को इन विशेष क्षणों को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर कैद करने और साझा करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। अधिकारी ने (शेष पेज 9)

पूर्व उपराज्यपाल बने साइबर ठगों के शिकार

आरोपियों ने खाते से तीन बार में निकाले 2,28,360 रुपये, नोएडा पुलिस ने दर्ज की एफआईआर

पूर्व उपराज्यपाल राधाकृष्ण माथुर

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

नोएडा शहर से इस समय बड़ी खबर आ रही है। साइबर ठगों का हब बनते जा रहे नोएडा में देश के पूर्व रक्षा सचिव व पूर्व उपराज्यपाल भी सुरक्षित नहीं है।

साइबर ठगों ने देश के एक पूर्व उप राज्यपाल को अपना शिकार बनाया है। ठगों ने पूर्व उप राज्यपाल का बैंक एकाउंट पूरी तरह से खाली कर दिया है। साइबर ठगों ने नोएडा के सेक्टर-128 में स्थित कालिस्पो कोर्ट टावर 1 जेपी विश टाउन सोसाइटी में रह रहे देश के पूर्व रक्षा सचिव तथा केंद्र शासित प्रदेश लद्दाख के पूर्व उपराज्यपाल राधाकृष्ण माथुर को ठगी का शिकार बनाया है।

पूर्व उपराज्यपाल ने थाना सेक्टर-126 में रिपोर्ट दर्ज कराई है कि उनका एसबीआई दिल्ली के निर्माण भवन स्थित शाखा में बैंक अकाउंट है। उनके अकाउंट में इंटरनेट बैंकिंग के माध्यम से तीन बार में 2 लाख 28,360 रुपये की ट्रांजैक्शन की गई। उनके खाते से पहले 1,34,999 रुपये, दूसरी बार में 33,564 रुपये तथा तीसरी बार में 59,800 रुपये निकाले गए। बैंक से ईमेल और एसएमएस आने पर उन्हें अपने साथ हुई धोखाधड़ी के बारे में पता चला। पूर्व उपराज्यपाल ने अपनी शिकायत में कहा है कि जिस दौरान उनके बैंक अकाउंट से रूपयों का ट्रांजैक्शन हुआ उस दौरान उन्होंने इंटरनेट बैंकिंग का उपयोग नहीं किया। बैंक से साइबर ठाकुर द्वारा धोखाधड़ी की जानकारी मिलते ही उन्होंने एसबीआई बैंक प्रबंधन को जानकारी देकर इंटरनेट बैंकिंग ब्लॉक करवा दी। पूर्व उपराज्यपाल की शिकायत पर सेक्टर-126 थाना पुलिस ने सूचना प्रौद्योगिकी संशोधन अधिनियम 2008 की धारा 66डी में मुकदमा दर्ज कर लिया है। देश के पूर्व रक्षा सचिव व लद्दाख के पूर्व उपराज्यपाल के साथ हुई लाखों रुपये की धोखाधड़ी ने पुलिस के भी हाथ पांव फूला दिए हैं। साइबर सेल धोखाधड़ी करने वालों की सरगर्मी से तलाश कर रही है। आपको बता दें राधाकृष्ण माथुर वर्ष 2019 से 2013 तक लद्दाख के उप राज्यपाल रहे। वह रक्षा सचिव के पद से सेवानिवृत्त हुए। उन्होंने त्रिपुरा में भी चीफ सेक्रेटरी का कामकाज देखा है।

नोएडा के थाना सेक्टर 126 के प्रभारी निरीक्षक सुबोध कुमार ने बताया कि सेक्टर 128 स्थित जेपी बिश टाउन सोसायटी में रहने वाले लद्दाख के पूर्व उप राज्यपाल और भारत सरकार के पूर्व रक्षा सचिव राधा कृष्ण माथुर ने बीती रात थाने में इस संबंध में रिपोर्ट दर्ज कराई है. रिपोर्ट के अनुसार अज्ञात साइबर अपराधियों ने उनके खाते से इंटरनेट बैंकिंग के माध्यम से धोखाधड़ी करके दो लाख 28 हजार 360 रुपए निकाल लिए।

पुलिस ने बताया कि पीड़ित ने ना तो किसी को अपने बैंक की जानकारी दी थी, ना ही उन्होंने किसी से कोई ओटीपी नंबर साझा किया था. थाना प्रभारी ने बताया कि घटना की रिपोर्ट दर्ज कर पुलिस मामले की जांच कर रही है।

अधिकारियों संग सीईओ डॉ. लोकेश एम शुक्रवार को शहर की सफाई व्यवस्था तथा विकास कार्यों का जायजा लेते हुए।

सफाई नहीं होने पर भड़के सीईओ, जेई निलंबित, सफाई निरीक्षक का वेतन रोका

- मुख्य कार्यपालक अधिकारी डॉ. लोकेश एम ने बोटेनिकल गार्डन, डीएससी रोड, एमपी 2 रोड का किया निरीक्षण

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

उत्तर प्रदेश के नोएडा में नोएडा प्राधिकरण के सीईओ डॉ. लोकेश एम शुक्रवार को शहर की सफाई व्यवस्था तथा विकास कार्यों का जायजा लेने के लिए नोएडा शहर की सड़कों पर उतरे। उन्होंने शहर की कई सड़कों का निरीक्षण किया। इस दौरान बोटेनिकल गार्डन के पास बीओटी टॉयलेट नंबर 27 में सीवर का पाइप टूटा पाया, जिस कारण सीवर का पानी सड़क पर बह रहा था।

इसको देखकर सीओ भड़क उठे तथा उन्होंने लापरवाही बरतने पर संबंधित जूनियर इंजीनियर को निलंबित करने के निर्देश दिए तथा सफाई निरीक्षक गोपाल शर्मा का वेतन रोक दिया। आपको बता दें कि मुख्य कार्यपालक अधिकारी सीईओ डॉ. लोकेश एम ने शुक्रवार को नोएडा प्राधिकरण के जन स्वास्थ्य विभाग के कार्यक्षेत्र के अन्तर्गत बोटेनिकल गार्डन, डीएससी रोड, एमपी 2 रोड का निरीक्षण करते हुए सफाई कार्यों का जायजा लिया। इस दौरान उन्होंने सफाई कार्यों की समीक्षा तथा क्षेत्र की अवस्थापना सुविधाओं के सुदृढ़ करने के लिए निर्देश दिए गए। बोटेनिकल गार्डन के पास आधुनिक सुविधाओं से परिपूर्ण एक बस टर्मिनल विकसित करने के निर्देश दिए गए। इसके अतिरिक्त जीआईपी मॉल से बोटेनिकल गार्डन तक ड्रेन को कवर करते हुए आम जन की सुविधा के दृष्टिगत कियोस्क स्थापित करने तथा वाहनों की पार्किंग की समस्या को ध्यान रखते हुए फुटपाथ रिडिजाइन करते हुए पार्किंग रैंप बनाने के लिए कार्ययोजना प्रस्तुत करने के निर्देश दिए गए। सीईओ ने बोटेनिकल गार्डन के क्षेत्र में नाले की सफाई का निरीक्षण किया गया तथा टूटे स्पीड ब्रेकर व फुटपाथ रिपेयर करने के निर्देश दिए गए।

बोटेनिकल गार्डन के पास कार्यशील बीओटी टॉयलेट नंबर 27 में सीवर का पाइप टूटा पाया गया, जिसके कारण सीवर का पानी सड़क पर आ रहा था। जिस पर सीईओ ने शिथिल पर्यवेक्षण के लिए सम्बंधित जूनियर इंजीनियर को निलंबित करने तथा सफाई व्यवस्था में कमी पाए जाने के कारण सफाई निरीक्षक गोपाल शर्मा का वेतन रोकने और कारण बताओ नोटिस जारी करने के निर्देश दिए हैं। इस मौके पर डीजीएम सिविल प्रभारी विजय रावल, डीजीएम जन स्वास्थ्य एसपी सिंह समेत कई अधिकारी मौजूद थे।

यमुना पुश्ता के समानांतर बनेगा एलिवेटेड रोड, एसीईओ की अध्यक्षता में कमेटी गठित

पायनियर समचार सेवा। नोएडा

नोएडा प्राधिकरण अब यमुना पुश्ता के समानांतर वैकल्पिक मार्ग बनाने पर विचार कर रहा है। इस योजना को अमली जामा पहनाने के लिए प्राधिकरण के अपर मुख्य कार्यपालक अधिकारी (एसीईओ) संजय कुमार खत्री की अध्यक्षता में एक समिति गठित की गई है जो प्राथमिकता के आधार पर अन्य विभागों से समन्वय स्थापित कर प्राथमिक रिपोर्ट सौपेंगी। इस योजना को धरातल पर उतारने के लिए नोएडा प्राधिकरण, राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण, उत्तर प्रदेश सिंचाई विभाग, उत्तर प्रदेश राज्य सेतु निगम की भी मदद लेगा।

दरअसल नोएडा ग्रेटर नोएडा एक्सप्रेसवे पर यातायात के बढ़ते दबाव को कम करने के लिए प्राधिकरण यमुना पुश्ता के समानांतर एलिवेटेड रोड बनाने की योजना पर

गंभीर है। इसको लेकर नोएडा प्राधिकरण के मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) डॉ. लोकेश एम की अध्यक्षता में बृहस्पतिवार को एक बैठक की गई। इस बैठक में प्राधिकरण के एसीईओ संजय कुमार खत्री, एसीईओ सतीश पाल तथा अन्य शीर्ष अवसर मौजूद थे। इसके अलावा उत्तर प्रदेश सिंचाई विभाग, राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण, उत्तर प्रदेश राज्य सेतु निगम तथा परामर्श दाता कंपनी सीएमसी के प्रतिनिधि भी मौजूद थे।

डीटीसी की तर्ज पर रोडवेज बसों में लगेगी स्मार्ट फॉग लाइट

पायनियर समाचार सेवा। गाजियाबाद

रोडवेज की लॉन्ग रूट की सभी बसों में स्मार्ट फोग लाइट लगाई जाएगी। दस दिसंबर तक इस टारगेट को पूरा करने के निर्देश दिए गए है। रोडवेज मुख्यालय की ओर से इसके लिए निर्देश जारी किए गए है।

रोडवेज की गाजियाबाद रीजन की सभी आठ डिपो के एआरएम को इसके लिए निर्देश जारी किया गया है। इसमें रोडवेज की गाजियाबाद, हापुड़, साहिबाबाद, कौशांबी, लोनी, बुलंदशहर, खुर्जा और सिकंद्राबाद आदि शामिल है। इन डिपो में रोडवेज की कई सौ बसों का संचालन होता है। इन डिपो में सबसे अधिक बसें ऐसी है जो लॉन्ग रूट पर चलती है। इन बसों को कई बार रात में भी सफर पर चलना पड़ता है।

स्मार्ट फोग लाइट की खूबी यह है कि वह मौसम और रोशनी के हिसाब से लाइट का फोकस बदलती है। जिससे दूर तक देखा जाना आसान हो जाता है।

इसके अलावा सामने वाले को भी इन लाइट से आने वाले वाहन का पता चल जाता है। पहले इस तरह की लाइट डीटीसी की लॉन्ग रूट की बसों में यूज होती थी। अब इन आधुनिक स्मार्ट फॉग लाइट रोडवेज की बसों में भी उजाला होगा।

संक्षिप्त समाचार

चोरी करने वाले गैंग के दो शातिर पुलिस की गिरफ्त में।

चोरी की कई वारदातों का खुलासा, दो धरे

गाजियाबाद। मुरादनगर थाने के एसओ मुकेश सोलंकी की टीम ने चेकिंग के दौरान चोरी करने वाले गैंग के दो शातिर बदमाशों को गिरफ्तार करके जेल भेज दिया। पकड़े गए चोरों के पास से लाखों के जेवरात व कीमती सामान के अलावा बाइक भी बरामद हुई। पूछताछ के दौरान पकड़े गए चोरों ने अपने नाम सलमान कुरैशी व दिलशाद खान निवासीगण लिसाड़ी गेट मेरठ बताये। साथ ही गाजियाबाद सहित अन्य जनपदों की की गई चोरी की कई वारदातों को अंजाम देना भी स्वीकार किया। चोरों के पास से जो माल बरामद हुआ है वह 24 नवंबर को असालतनगर में हुई चोरी की वारदात से संबंधित है।

मतदाता चेतना अभियान के तहत किया जागरूक

गाजियाबाद। नए वोट बनवाने और मतदान के लिए मतदाताओं को जागरूक करने के लिए भाजपा द्वारा वोटर चेतना महाभियान का आयोजन किया जा रहा है। इसी कडी में तीन स्थानों पर शिविर लगाए गए। महानगर अध्यक्ष संजीव शर्मा, क्षेत्रीय महिला मोर्चा वर्षा कौशिक, मंडल अध्यक्ष दुष्यंत पुंडीर के नेतृत्व में तीन स्थानों पर कैंप लगाकर मतदाताओं को जागरूक किया गया। उत्तम स्कूल कोर्ट चौक, विधा ज्योति स्कूल लालकुआं, कृष्णा मेडिकल कॉलेज लालकुआं पर इन शिविरों का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि क्षेत्रीय मंत्री महिला मोर्चा उदिता त्यागी, कविता सिरोही, महानगर महामंत्री रेनू चंदेला, मोनिका अग्रवाल ने नए वोट बनवाने के लिए फार्म भरवाएं। इस दौरान राहुल तोमर, अशोक राव, रामपाल, युवा मोर्चा महामंत्री रवि गोयल, रजनी तोमर, अर्चना शर्मा, मधु यादव, निशा गुप्ता, भारती अग्रवाल सीमा त्यागी, मुन्नी प्रजापति आदि मौजूद रहे।

विश्व एड्स दिवस पर संगोष्ठी आयोजित

गाजियाबाद। विश्व एड्स दिवस पर स्वास्थ्य विभाग की ओर से एसडी डिग्री कॉलेज में संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस दौरान विभाग के पोस्टर पर सीएमओ डॉ.भवतोष शंखधर सहित अन्य अतिथियों व छात्रों ने हस्ताक्षर किए। संगोष्ठी में छात्र-छात्राओं को एचआईवी,एड्स से बचाव की जानकारी दी गई। छात्रों को बताया कि एड्स कैसे फैलता है, कैसे इससे बचाव किया जा सकता है। अगर कोई इससे पीडित हो तो उसका निदान क्या होगा। सीएमओ डॉ.भवतोष शंखधर ने बताया कि एड्स से बचाव के लिए सरकारी स्तर पर काफी संसाधन मौजूद हैं। अगर किसी को इस तरह के लक्षण दिखाई देते हैं तो वह तत्काल सेन्टर में सम्पर्क कर इलाज शुरू करा सकते हैं, पीडित का पूरा ब्यौरा गुप्त रखा जाता है। इस अवसर पर एसडी कॉलेज डीन कमलेश भारद्वाज, प्रो.रीना शर्मा, ब्रजेश कुमार, निधि, राघवेन्द्र, ज्ञानेन्द्र सिंह के अलाव नेहरू युवा क्लब सेवा संस्थान, भागीरथी सेवा संस्थान, अभिव्यक्ति फाउंडेशन, नेचर केयर संस्थाओं के प्रतिनिधि भी मौजूद रहे।

हथियार बंद बदमाशों ने बिजली घर पर बोला धावा

नोएडा । थाना फेस- दो क्षेत्र के सेक्टर 80 स्थित बिजली घर पर बीती रात को अज्ञात बदमाशों ने लूट के इरादे से धावा बोला। जब वहा मौजूद लाइन मैंन ने उनका विरोध किया तो लाइनमैन के ऊपर चाकू से हमला कर उसे गंभीर रूप से घायल कर दिया। घटना की रिपोर्ट दर्ज कर पुलिस मामले की जांच कर रही है। पुलिस आयुक्त श्रीमती लक्ष्मी सिंह के मीडिया प्रभारी ने बताया कि सेक्टर 80 के ए ब्लॉक स्थित बिजली घर पर तैनात लाइनमैन श्रीपाल ने थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई है कि बीती रात को कुछ बदमाश बिजली घर पर आए,तथा वहां रखा कॉपर की वायर चोरी करने लगे। इस बात का पीड़ित ने विरोध किया तो बदमाशों ने धारदार हथियार से उनके ऊपर हमला कर उन्हें गंभीर रूप से घायल कर दिया।

गौकशी के आरोपी मुठभेड़ के बाद गिरफ्तार

- पैर में लगी गोली, दूसरा साथी फरार

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

जिले में थाना बादलपुर की पुलिस ने शुक्रवार को तड़के एक मुठभेड़ के दौरान गौकशी के एक आरोपी को गिरफ्तार किया है।

पुलिस के एक अधिकारी ने यह जानकारी देते हुए बताया कि मुठभेड़ के दौरान आरोपी पैर में एक गोली लगने से घायल हो गया, जबकि उसका साथी भाग निकला। अपर पुलिस उपायुक्त (जोन द्वितीय) हृदेश कठेरिया ने बताया कि थाना बादलपुर पुलिस आज सुबह अंबुजा सीमेंट फैक्ट्री के पास जांच कर रही थी। उन्होंने बताया कि एक मोटरसाइकिल पर सवार दो व्यक्तियों को संदेह के आधार पर रुकने का इशारा किया गया लेकिन उन्होंने रुकने की बजाय पुलिस पर गोली चलाई। कठेरिया ने बताया कि पुलिस ने जबाबी कार्रवाई की जिसमें जमाल उर्फ जालिम (पुत्र सलीम) पैर में गोली लगने से घायल हो गया। करीब 44 वर्षीय जमाल हापुड़ जिले के हापुड़ देहात का रहने वाला है। पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया है। उन्होंने बताया कि जमाल का साथी अफजल अंधेरे में पुलिस पर गोली चलाते हुए भाग गया और उसकी तलाश की जा रही है।

कठेरिया ने बताया कि पकड़े गए आरोपी के पास से एक देसी तमंचा, कारतूस, एक बोरा, रस्सी तथा दो छुरी बरामद की गई हैं। उन्होंने बताया कि पूछताछ के दौरान आरोपी ने गौकशी करने की बात स्वीकार की है और उसके खिलाफ राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के विभिन्न स्थानों में मुकदमे भी दर्ज हैं।

पारिवारिक विवाद के चलते विवाहिता ने फांसी पर लटककर दी जान

पायनियर समचार सेवा। नोएडा

इलाहाबास गांव में बीती रात्रि एक महिला संदिग्ध अवस्था में अपने घर में फांसी के फंदे पर लटकी मिली। थाना फेस-2 पुलिस पारिवारिक विवाद के कारण महिला द्वारा आत्महत्या करने की बात कह रही है।

नोएडा के ग्राम इलाहाबास में रजत पीलवान अपने परिवार के साथ रह रहे हैं। गुरुवार की देर शाम जब वह अपने घर पहुंचे तो उन्हें अपनी पत्नी रीना पीलवान कमरे में फांसी के फंदे पर लटकी मिली। उन्होंने पड़ोसियों की मदद से रीना को फंदे से उतारा, लेकिन तब तक उसकी मौत हो चुकी थी। घटना की जानकारी मिलने पर मौके पर पहुंची थाना फेस-2 पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भिजवाया। मौके पर पहुंची फॉरेंसिक टीम ने भी साक्ष्य एकत्रित किए।थाना प्रभारी का कहना है कि प्रारंभिक जांच में महिला द्वारा आत्महत्या किए जाने की बात सामने आ रही है। पारिवारिक विवाद के कारण महिला द्वारा आत्महत्या की गई है। इसके बावजूद पुलिस विभिन्न पहलुओं को ध्यान में रखकर जांच पड़ताल कर रही है।

ग्रेटर नोएडा में 5 तालाबों का होगा जीर्णोद्धार

नोएडा। ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण के अंतर्गत आने वाले तालाबों के जीर्णोद्धार का कार्य तेजी से चल रहा है। प्राधिकरण तकनीकों का इस्तेमाल कर इन तालाबों के पानी को स्वच्छ बनाने की कोशिश में जुट गया है।

ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण के सीईओ एनजी रवि कुमार ने पायलट प्रोजेक्ट के रूप में पांच तालाबों को चिंहित कर काम शुरू करने के निर्देश दिए हैं। इसी कड़ी में प्राधिकरण के एसीईओ आशुतोष द्विवेदी ने लड़पुरा स्थित दो तालाबों का निरीक्षण किया। इन तालाबों से ही इस मुहिम की शुरुआत की जाएगी। निरीक्षण के दौरान वरिष्ठ प्रबंधक राजेश कुमार, प्रभारी वरिष्ठ प्रबंधक मनोज सचान सहित अन्य उपस्थित रहें।

एफडीआरसी सेंटर के 3 वर्ष पूरे पुलिस कमिश्नर ने की सराहना

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

पारिवारिक विवाद को आपसी तालमेल से निपटाने और टूटते हुए परिवार को बचाने की नीयत से गौतमबुद्ध नगर पुलिस द्वारा शुरू किए गए फैमिली डिस्प्यूट रेजोल्यूशन क्लीनिक के 3 वर्ष पूर्ण होने के उपरांत नॉलेज पार्क थाना में स्थित एफडीआरसी सेंटर में गौतमबुद्ध नगर पुलिस ने एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया।

इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में पुलिस आयुक्त लक्ष्मी सिंह पहुंची। इस केंद्र को शारदा विश्वविद्यालय के विशेषज्ञों और नोएडा पुलिस के चुनिंदा पुलिस अधिकारी और कर्मचारियों के संयुक्त प्रयास से चलाया जा रहा है। इस केंद्र में उस तरह की लोगों को भेजा जाता है जिनके परिवार टूटने के कगार पर हो। इस काउंसलिंग के दौरान अधिवक्ताओं या अन्य किसी परिवार जन को वहां पर उपस्थित नहीं होने दिया जाता। इस केंद्र के माध्यम से अब तक सैकड़ो परिवारों को टूटने से बचाया जा चुका है।

पुलिस आयुक्त लक्ष्मी सिंह ने इस अवसर पर बोलते हुए कहा कि इस तरह के केंद्र के माध्यम से बिखरते परिवार को बचाने में पुलिस को काफी सहायता मिल रही है।

फैमिली डिस्प्यूट रेजोल्यूशन क्लीनिक के 3 वर्ष पूरे होने पर आयोजित कार्यक्रम में पुलिस आयुक्त लक्ष्मी सिंह।

चोरी की बिजली से चल रहा था चार्जिंग स्टेशन

- मामला दर्ज कर पुलिस ने दो लोगों को किया गिरफ्तार

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

ग्रेटर नोएडा जैसे जैसे इलेक्ट्रानिक वाहनों की संख्या बढ़ती जा रही है, उस मात्रा में इन वाहनों को चार्ज करने के लिए स्टेशनों की व्यवस्था नहीं है। इलेक्ट्रिक वाहनों को चार्ज करने के लिए धड़ल्ले से बिजली चोरी की जा रही है।

ग्रेटर नोएडा में बिजली चोरी का एक बड़ा मामला सामने आया है। यहां पर ई-रिक्शाओं तथा अन्य इलेक्ट्रानिक वाहनों को चार्ज करने के लिए बिजली चोरी करके चार्जिंग स्टेशन चलाया जा रहा था। ग्रेटर नोएडा के सूरजपुर में सेवा राम नामक एक व्यक्ति द्वारा बिजली चोरी करके चार्जिंग स्टेशन का संचालन किया जा रहा था। यहां पर चोरी की बिजली से ही आरओ प्लांट भी चलाया जा रहा था। मौके से सेवाराम के अलावा दीपक भाटी नामक व्यक्ति को भी गिरफ्तार किया गया है। यह कार्यवाही नोएडा पॉवर कॉरपोरेशन लि. (एनपीसीएल) के अधिकारियों और कर्मचारियों की टीम द्वारा की गई है।

आरोप है कि दीपक भाटी 12 किलोवाट लोड जोड़कर बड़े पैमाने पर बिजली की चोरी कर रहा था। एनपीसीएल की टीम ने सूरजपुर के अलावा डाबरा, सलेमपुर गुर्जर, नवादा, घोड़ी बछेड़ा, खोदना खुर्द, डेल्टा, चाई 3 और पी 3 इलाकों में भी कई जगहों पर बिजली चोरी पकड़ी है। कुल 104 किलोवाट की बिजली चोरी पकड़ी गई। आरोपियों पर 80 लाख का जुर्माना भी लगाया गया है। अवैध रुप से संचालित हो रहे इस चार्जिंग स्टेशन पर चोरी की बिजली से 13 ई-रिक्शा चार्ज करने की व्यवस्था की गई है। आरोपी सेवाराम ने कोई बिजली कनेक्शन नहीं ले रखा है और अवैध रुप से बिजली का कनेक्शन चला रहा था।

एनपीसीएल प्रबंधन ने क्षेत्र के सभी बिजली उपभोक्तओं से अपील की है कि वैध कनेक्शन लेकर ही बिजली का उपयोग करें और बिजली चोरी से दूर रहें।

आपको बता दें कि बिजली चोरी करने वालों के खिलाफ एनपीसीएल द्वारा अभियान चलाया गया है और अगले कुछ दिनों में यह अभियान और भी तेजी से चलाया जाएगा।

बिल्डर के खिलाफ फूटा किसानों का गुस्सा, कलेक्ट्रेट का घेराव

- लाइसेंस रद्द करने और किसानों पर दर्ज केस वापस लेने की मांग

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

सर्वोत्तम व अंसल बिल्डर से प्रभावित किसानों ने कलेक्ट्रेट का घेराव कर दिया है। बड़ी संख्या में कलेक्ट्रेट पहुंचे किसानों ने खूब नारेबाजी की। किसानों की मांग है कि अंसल बिल्डर के लाइसेंस को रद्द किया जाए तथा पिछले दिनों जिन किसानों पर एफआईआर दर्ज की गई है उसे वापस लिया जाए।

आपको बता दें कि ग्रेटर नोएडा के पास दादरी तहसील क्षेत्र में अंसल बिल्डर ने कई गांवों की जमीन ली है। अंसल बिल्डर ने कुछ हिस्से पर सर्वोत्तम बिल्डर को प्रोजेक्ट बनाने की जिम्मेदारी सौंपी है। लेकिन सर्वोत्तम बिल्डर की धोखाधड़ी से कई किसान प्रभावित हुए हैं। पिछले दिनों इसी जमीन पर जुताई के दौरान किसानों व बिल्डर के बाउंसरों में संघर्ष हो गया था, जिसके बाद पुलिस ने कुछ किसानों पर एफआईआर दर्ज कर गिरफ्तारी की थी। इसी के विरोध में शुक्रवार की दोपहर बड़ी संख्या में किसानों ने कलेक्ट्रेट का घेराव किया। इस घेराव में बड़ी संख्या में महिलाएं भी शामिल थी। किसानों का आरोप है कि किसान अपने प्लाट, मुआवजे और रोजगार को लेकर धरना दे रहे हैं। अंसल बिल्डर के साथ 2013 जो समझौता हुआ था, उसी के आधार पर किसान अपना हक मांग रहे हैं।

आप का 'मैं भी केजरीवाल' हस्ताक्षर अभियान शुरू

लोकसभा चुनाव में हार की डर से भाजपा रच रही सीएम की गिरफ्तारी की साजिश : राय

● दिल्ली प्रदेश संयोजक ने अभियान के तहत लक्ष्मी नगर में किया घर-घर प्रचार

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

आम आदमी पार्टी ने मैं भी केजरीवाल हस्ताक्षर अभियान शुरू किया है। इस अभियान के दौरान लोगों की राय ली जाएगी कि क्या मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के गिरफ्तार होने की स्थिति में मुख्यमंत्री पद छोड़ देना चाहिए।

आप के दिल्ली संयोजक एवं कैबिनेट मंत्री गोपाल राय ने इस मुहिम के तहत लक्ष्मी नगर में घर-घर प्रचार कर अभियान का आगाज किया। इस दौरान राय ने कहा कि लोकसभा चुनाव में हार के डर से भाजपा केजरीवाल की गिरफ्तारी की साजिश रच रही है।

राय ने बताया जनता का कहना है कि केजरीवाल ने जनता के लिए बहुत काम किया है। इसलिए उन्हें इस्तीफा नहीं देना चाहिए और जेल से सरकार चलानी चाहिए। लोगों ने यह भी कहा कि ये सारी गिरफ्तारियां एक मकसद के तहत हो रही हैं। ऐसे में आप संयोजक को पद से त्याग पत्र नहीं देना चाहिए। गोपाल राय ने कहा कि 1 से 20 दिसंबर तक सभी 2600 मतदाता केंद्रों पर घर-घर प्रचार करेंगे और 21 से 24 दिसंबर तक सभी 250 वॉर्डों में जनसभा करेंगे। अंत में जनता की जो भी राय होगी उसे वह सीएम को सौंप देंगे।

राय ने हस्ताक्षर अभियान के दौरान कहा कि शुक्रवार से मैं भी केजरीवाल हस्ताक्षर अभियान शुरू किया गया है। अभियान के तहत आम आदमी पार्टी के कार्यकर्ता सभी 2600 पोलिंग स्टेशन पर घर-घर जाएंगे। जिस तरह से आम आदमी पार्टी के नेताओं को फर्जी केस में फंसा कर जेल में डाला जा रहा है। पहले सत्येंद्र जैन, मनीष सिसोदिया और फिर संजय सिंह को गिरफ्तार किया गया। अब केजरीवाल को गिरफ्तार करने की साजिश चल रही है। ऐसे में आम आदमी पार्टी के कार्यकर्ता घर-घर जाकर लोगों से पूछ रहे हैं कि अगर अरविंद को गिरफ्तार कर लिया जाता है तो क्या उन्हें इस्तीफा देना चाहिए या जेल से सरकार चलानी चाहिए।

कैबिनेट मंत्री गोपाल राय ने लक्ष्मी नगर में घर-घर प्रचार कर अभियान का आगाज किया।

दिल्ली की जनता लोकसभा चुनाव में देगी जवाब: गोपाल

राय ने दावा किया कि अभी तक जितने लोगों से बात हुई है, उनका कहना है कि केजरीवाल ने जनता के लिए बहुत काम किया है। उन्होंने मुफ्त बिजली, पानी, इलाज, शिक्षा, महिलाओं के लिए बस यात्रा और तीर्थ यात्रा की सुविधा दी इसलिए उन्हें इस्तीफा नहीं देना चाहिए और जेल से सरकार चलानी चाहिए। जनता ने यह भी कहा कि यह जो गिरफ्तारियां हो रही हैं, यह एक मकसद के तहत हो रही हैं। ऐसे में केजरीवाल को इस्तीफा नहीं देना चाहिए। राय ने बताया कि उनका काम जनता को जागरुक करना है। जनता के पास अवसर है कि वह लोकसभा चुनाव में इसका जवाब दें।

दिल्ली विश्वविद्यालय के 12 वित्तपोषित कॉलेजों की जवाबदेही तय करे केंद्र सरकार : आतिशी

● बोली, कॉलेजों का नियंत्रण दिल्ली सरकार को दें या पूरी फंडिंग कर केंद्र अपने नियंत्रण में ले

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

आम आदमी पार्टी की सरकार के वित्तपोषित 12 कॉलेजो में चल रही अनियमितताओं को दूर करने और कॉलेजों की जबाबदेही सुनिश्चित करने के लिए दिल्ली की शिक्षा मंत्री ने केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान को पत्र लिखा। पत्र में उच्च शिक्षा मंत्री आतिशी ने दिल्ली विश्वविद्यालय से मान्यता प्राप्त और दिल्ली सरकार द्वारा वित्त पोषित 12 कॉलेजों के कामकाज पर गंभीर चिंता जताई।

आतिशी ने पत्र में इन कॉलेजों के कामकाज में कई अनियमितताओं और खामियों की पहचान की। जिसकी वजह से वित्त प्रबंधन में खामी उत्पन्न हो रही है और कर दाताओं के सैकड़ों करोड़ों रुपये की बर्बादी हो रही है। आतिशी ने पत्र में इन कॉलेजों में चल रही अनियमितताओं को बताते हुए साझा किया कि अनधिकृत नियुक्तियाँ इन कॉलेजों ने बिना स्वीकृत लिए कई पद सृजित किए और टीचिंग-नॉन टीचिंग कर्मचारियों नियुक्त किए।

कॉलेजों द्वारा वेतन के रूप में कई करोड़ रुपये ऐसे व्यक्तियों को दिया जा रहा है जिन्हें कभी भी स्थापित प्रक्रियाओं के माध्यम से नियुक्त नहीं किया गया। वेतन और अन्य मदो में दिए जाने वाले फंड का दुरुपयोग। साफ-सफाई और सुरक्षा सेवाओं, कैंटीन के आवंटन और अन्य कंट्रैक्चुअल सेवाओं के प्रति मनमानी और अनियमित भुगतान। पर्याप्त धनराशि होने के बावजूद, कई कॉलेजों ने कर्मचारियों को समय पर वेतन और बकाया भुगतान को प्राथमिकता नहीं दी। आतिशी ने अपनी चिंता व्यक्त की और कहा, ये मुद्दे इन संस्थानों के भीतर हो रही बड़ी अनियमितताओं को दर्शाते है। इन कॉलेजों को दिल्ली विश्वविद्यालय से मान्यता मिली है और दिल्ली सरकार द्वारा वित्त पोषित है। ऐसे में इन कॉलेजों में विश्वविद्यालय और एनसीटी दिल्ली सरकार के उच्च शिक्षा निदेशालय दोनों की ओर से पर्याप्त निगरानी का अभाव है, जिससे इन कॉलेजों की दोनों के प्रति कोई जबाबदेही नहीं है।

अनियमितता दूर कर जबावदेही सुनिश्चित करने का दिया सुझाव

नई दिल्ली। *समस्या का संभावित समाधान देते हुए, उच्च शिक्षा मंत्री ने सुझाव दिया कि केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय को दिल्ली विश्वविद्यालय से 12 कॉलेजों से मान्यता वापस लेने पर विचार करना चाहिए और दिल्ली सरकार को उन्हें अंबेडकर विश्वविद्यालय या दिल्ली स्किल एंड एंत्रप्रेन्योरशिप यूनिवर्सिटी के कैंपस के रूप में नामित करने का अधिकार देना चाहिए। फिर इन कॉलेजों को पूरा फंड दिल्ली सरकार द्वारा दिया जायेगा साथ ही इन कॉलेजों को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत स्वायत्त डिग्री देने वाले संस्थानों में विकसित होने का अवसर मिल सकेगा। दूसरा सुझाव देते हुए उच्च शिक्षा मंत्री ने कहा कि, यदि कॉलेजों को डीयू से संबद्ध रहना है, तो भारत सरकार को इनके पूरे फंडिंग की सीधी जिम्मेदारी लेनी चाहिए। यह वित्तीय सहायता विश्वविद्यालय अनुदान आयोग या प्रस्तावित उच्च शिक्षा अनुदान परिषद के माध्यम से प्रदान की जा सकती है। इन कॉलेजों में पढ़ने वाले छात्रों की शिक्षा अभी दिल्ली सरकार की प्राथमिकता है ऐसे में पहले विकल्प के साथ दिल्ली सरकार इन कॉलेजों की पूरी जिम्मेदारी लेना चाहेगी। अंत में उच्च शिक्षा मंत्री आतिशी ने कहा, उपरोक्त 12 कॉलेजों की समस्याओं के समयबद्ध समाधान की आवश्यकता है और चालू वित्तीय वर्ष के शेष महीनों के भीतर ही इस संबंध में कार्रवाई की जानी चाहिए। 12 कॉलेजों के प्रभावी प्रशासन के लिए एक स्थायी समाधान खोजने के लिए केंद्र सरकार के शिक्षा मंत्रालय और दिल्ली सरकार को साथ मिलकर काम करने की जरूरत है।*

सीपीसीबी पराली समाधान के लिए देगी दोगुनी राशि

टॉरफेक्शन और पेलेटाइजेशन संयंत्र लगाने के लिए वित्तीय सहायता राशि 14 लाख से बढ़ाकर 28 लाख प्रति टन की

संजय राय। नई दिल्ली

उत्तर भारत में पराली जलाना एक बार फिर से मुसीबत बन गया है। इस पराली ने दिल्ली एनसीआर सहित लगभग पूरे उत्तर भारत में हवा को प्रदूषित कर दिया है। इस समस्या से निजात दिलाने के लिए केंद्र सरकार बिजली संयंत्रों और उद्योगों में धान की पराली से बने जैव कोयले की आपूर्ति बढ़ाना चाहती है। इसी के मद्देनजर केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने जैव कोयला बनाने वाले टॉरफेक्शन और पेलेटाइजेशन संयंत्र स्थापित करने के लिए आम लोगों और कंपनियों को वित्तीय सहायता राशि में वृद्धि करने का प्रस्ताव दिया है। इन संयंत्रों की स्थापना से पराली जलाने की समस्या का समाधान करने में तो सहायता मिलेगी ही, साथ ही किसानों की आय बढ़ाने में भी मदद मिलेगी।

वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग के प्रमुख व वैज्ञानिक पीके गुप्ता के अनुसार, केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने मार्च 2023 में पराली के इस्तेमाल को बढ़ावा देने के लिए धान के भूसे आधारित पेलेटाइजेशन और टॉरफेक्शन संयंत्रों की स्थापना के लिए एकमुश्त वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए संशोधित दिशा निर्देश जारी किए थे। जिसके तहत पेलेटाइजेशन संयंत्र की स्थापना के लिए मुहैया कराए जाने वाली अधिकतम वित्तीय सहायता राशि को संशोधित कर 14 लाख रूपये से बढ़ाकर 28 लाख रूपये प्रति टन उत्पादन क्षमता के संयंत्र के लिए पूंजीगत लागत का 40 फीसदी जो भी कम हो। इसके अलावा अधिकतम कुल वित्तीय सहायता राशि भी प्रति प्रस्ताव 70 लाख रु से बढ़ा कर 1.4 करोड़ रुपये कर गई।

गुप्ता के मुताबिक टॉरफैक्शन संयंत्रों को लगाने के लिए प्राप्त आवेदनों की सीमित संख्या को ध्यान में रखते यह निर्णय लिया गया है क्योंकि टॉरफैक्शन संयंत्रों की पूंजीगत लागत पेलेटाइजेशन संयंत्रों की तुलना में अधिक है। टॉरफैक्शन संयंत्र की स्थापना के लिए अधिकतम वित्तीय सहायता राशि को संशोधित किया गया है। जिसके तहत 28 लाख से 56 लाख रुपये प्रति टन उत्पादन क्षमता के संयंत्र के लिए मानी जाने वाली पूंजीगत लागत का 40 फीसदी जो भी कम हो, और अधिकतम कुल वित्तीय सहायता भी 1.4 करोड़ रुपये प्रति प्रस्ताव से बढ़ाकर प्रति प्रस्ताव 2.8 करोड़ रुपये कर दी गई है।

टॉरफेक्शन और पेलेटाइजेशन प्लांट में फसल के अवशेषों को जैव-कोयले में परिवर्तित किया जाता है। सीपीसीबी का कहना है कि बिजली संयंत्रों में बायोमास की काफी मांग है लेकिन इसकी आपूर्ति पूरी नहीं हो रही है। प्रदूषण कम करने के लिए थर्मल पावर प्लांटों और उद्योगों के कार्बन फुटप्रिंट को कम करने के लिए सरकार ने पहले ही कोयले के साथ 5 से 10 प्रतिशत बायोमास जलाना अनिवार्य कर रखा है, इसलिए अब सरकार ने टॉरफेक्शन और पेलेटाइजेशन प्लांट स्थापित करने के लिए एकमुश्त वित्तीय सहायता देने का निर्णय लिया है। अक्टूबर और नवंबर में पंजाब और हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रेदश में धान की पराली जलाने से राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली और इससे सटे इलाकों में प्रदूषण खतरनाक स्तर तक पहुंच जाता है। आमतौर पर किसान गेहूं और आलू की खेती के लिए जमीन तैयार करने के लिए पराली को आग लगा देते हैं।

फोटो: रंजन डिमरी
प्रदूषण से थोड़ी राहत तो मिली है लेकिन धुंध की परत अभी आसमान पर जमीं हुई है।

पंजाब-हरियाणा समयबद्ध कार्य योजना तैयार करें

नई दिल्ली। राष्ट्रीय हरित अधिकरण ने पंजाब और हरियाणा को पराली जलाने की समस्या से निपटने के लिए अगले साल एक जनवरी से एक सितंबर के बीच समयबद्ध योजना बनाने का निर्देश दिया है। एनजीटी ने इस बात पर जोर दिया कि पराली जलाना एक गंभीर समस्या है और इसके लिए उपचारात्मक कार्वाई की तैयारी अभी शुरू होनी चाहिए। एनजीटी एक मामले की सुनवाई कर रही थी, जिसमें उसने पंजाब में पराली जलाने के कारण वायु प्रदूषण में वृद्धि के बारे में एक अखबार की रिपोर्ट पर संज्ञान लिया था। मामले की सुनवाई 19 जनवरी को होगी।

राघव के रास से निलंबन मामले में सुनवाई 8 को

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने राज्यसभा से निलंबन को चुनौती देने वाली सांसद राघव चड्ढा की याचिका पर सुनवाई को टाल दी, क्योंकि सूचित किया गया कि कुछ रचनात्मक होने की संभावना है।

प्रधान न्यायाधीश डी वाई चंद्रचूड़, न्यायमूर्ति जे बी पारदीवाला और न्यायमूर्ति मनोज मिश्र की पीठ ने राज्यसभा सचिवालय की ओर से मामले में पेश हुए सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता की इन दलीलों पर गौर किया कि मामले में कुछ प्रगति होने की संभावना है। शीर्ष कानून अधिकारी ने कहा, यदि आप इसे बाद में सुन सकते हैं, तो आपको कई मुद्दों पर विचार नहीं करना पड़ेगा।

दिल्ली वक्फ बोर्ड भर्ती मामले में आरोपियों की हिरासत दो हफ्ते बढ़ी

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

अदालत ने वक्फ बोर्ड भर्ती प्रक्रिया में कथित अनियमितताओं से संबंधित मामले में गिरफ्तार तीन व्यक्तियों की न्यायिक हिरासत शुक्रवार को दो सप्ताह के लिए बढ़ा दी। इस मामले में आम आदमी पार्टी (आप) के विधायक अमानतुल्ला खान भी आरोपी हैं। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने एक आवेदन में दावा किया कि मामले की जांच जारी है, जिसके बाद विशेष न्यायाधीश विकास ढुल ने आरोपियों जीशान हैदर, दाऊद नसीर और जावेद इमाम सिद्दीकी की हिरासत 15 दिसंबर तक बढ़ा दी। आरोपियों की ओर से पेश अधिवक्ता नितेश राणा ने ईडी के आवेदन का विरोध करते हुए कहा कि हिरासत बढ़ाने का कोई आधार नहीं है। राणा ने कहा, आरोपियों को तुरंत रिहा किया जाना चाहिए। प्राथमिकी के अनुसार खान ने दिल्ली वक्फ बोर्ड का अध्यक्ष रहते हुए नियमों और सरकारी दिशा-निर्देशों का उल्लंघन कर 32 लोगों को अवैध रूप से भर्ती किया था।

संक्षिप्त समाचार

भारत को 2047 में विकसित राष्ट्रीय बनाने के लिए जम्मू और कश्मीर में किश्तवाड़ जिले के टिपरी गांव के युवाओं ने शपथ ली। विकसित भारत संकल्प यात्रा देश के दूर-दराज के इलाकों में सरकार की कल्याणकारी योजनाओं के बारे में जागरूक कर रही है।

सर्वाभिष्ट सिद्धि सतयुग स्वागत साकेत महायज्ञ संपन्न

नई दिल्ली। सदुरु श्री दयाल और उनके अनुयायियों ने नवी मुंबई के गामी इंडस्ट्रियल पार्क में सर्वाभिष्ट सिद्धि सतयुग स्वागत साकेत महायज्ञ का आयोजन किया। महायज्ञ की पूर्णाहुति कार्तिक पूर्णिमा (देव दीपावली तथा गुरु पर्व) के शुभ मुहूर्त पर हुई। महायज्ञ में आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए देश-विदेश से हजारों की तादाद में श्रद्धालुओं ने भाग लिया गुरु जी ने सर्व धर्म संभाव, समाज सेवा, उत्कृष्ट आचरण के लिए प्रेरित किया और आगे विश्व में आने वाली भारी मंदी तथा भीषण महामारियों की भविष्यवाणी भी की। यज्ञ में गणेश नायक, दीपक पराशर, आचार्य लोकेश मुनि, कृपाल तुमाने, डॉ. सुरुचि मोहता, अनूप जलोटा, डॉ सोमा घोष, विवेक प्रकाश आदि शामिल रहे।

प्रौद्योगिकी और खिलौने विषय विज्ञान मेला 5 से

नई दिल्ली। स्कूली बच्चों में वैज्ञानिक भावना को बढ़ावा देने के लिए और प्रधानमंत्री के लाइफस्टाइल फॉर एनवायरमेंट के दृष्टिकोण के तहत नई दिल्ली नगरपालिका परिषद (एनडीएमसी) ने दो दिवसीय प्रौद्योगिकी और खिलौने विषय पर एनडीएमसी स्कूल वार्षिक विज्ञान मेले की घोषणा की है। यह कार्यक्रम 5 और 6 दिसंबर, 2023 को एनडीएमसी कन्वेंशन सेंटर में आयोजित किया जाएगा, यह सूचना नई दिल्ली नगरपालिका परिषद के उपाध्यक्ष सतीश उपाध्याय ने दी । इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में विज्ञान और प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह होंगे।

शर्तों के साथ मुस्लिम महापंचायत को मिली अनुमति

नई दिल्ली। दिल्ली पुलिस ने उच्च न्यायालय को शुक्रवार को बताया कि उसने कुछ शर्तों के साथ मिशन सेव कॉर्नस्टट्यूशन नामक संगठन को यहां रामलीला मैदान में 18 दिसंबर को अखिल भारतीय मुस्लिम महापंचायत आयोजित करने की अनुमति दी है। मिशन सेव कॉस्टिट्यूशन संगठन का दावा है कि वह नागरिक अधिकारों की सुरक्षा के लिए काम करता है। न्यायमूर्ति सुब्रमण्यम प्रसाद ने दिल्ली पुलिस की दलील पर गौर करने के बाद संगठन द्वारा दायर याचिका का निपटारा कर दिया और यह स्पष्ट किया कि कोई भी अन्य विभाग कार्यक्रम या निर्धारित तिथि पर स्थल की उपलब्धता को लेकर कोई आपत्ति नहीं उठाएगा।

मालीवाल ने सड़क दुर्घटना पीड़िता से की मुलाकात

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

दिल्ली महिला आयोग (डीसीडब्ल्यू) की अध्यक्ष स्वाति मालीवाल ने सड़क दुर्घटना में घायल हुई महिला से मुलाकात की और कहा कि सरकार उसके इलाज का खर्च फरिश्ते योजना के तहत वहन करेगी।

इस दुर्घटना में पीड़िता ने अपने पति और दो बच्चों को खो दिया है। महिला आयोग ने दिल्ली पुलिस को नोटिस जारी किया है और मामले में गिरफ्तार आरोपियों के विवरण के साथ कार्रवाई रिपोर्ट तथा प्राथमिकी की एक प्रति मांगी है। पुलिस ने बताया कि पश्चिमी दिल्ली के राजौरी गार्डन में 20 नवंबर को एक कार ने उनके स्कूटर को कथित तौर पर टक्कर मार दी, जिससे 32 वर्षीय एक व्यक्ति और उनके दो बेटों की मौत हो गई तथा उनकी पत्नी घायल हो गई।

एक अस्पताल में महिला का हालचाल जानने के लिए पहुंचीं मालीवाल ने कहा कि पीड़िता का इलाज दिल्ली सरकार की फरिश्ते योजना के तहत मुफ्त किया जाएगा। डीसीडब्ल्यू ने पुलिस को जारी अपने नोटिस में कहा, पीड़िता के परिवार का आरोप है कि मामले का निपटारा करने के लिए आरोपी पक्ष ने उनसे संपर्क किया था। परिवार ने अपनी सुरक्षा को लेकर चिंता व्यक्त की है।

नाइट लाइफ में शामिल होंगी 83 और दुकानें

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

उपराज्यपाल विनय कुमार सक्सेना

● उपराज्यपाल विनय कुमार सक्सेना ने शॉप को 24 घंटे खोलने के श्रम विभाग के प्रस्ताव को मंजूरी दी

राजधानी दिल्ली में नाइट लाइफ में शामिल होंगी 83 दुकानें। उपराज्यपाल विनय कुमार सक्सेना ने दिल्ली दुकान और प्रतिष्ठान अधिनियम, 1954 की धारा 14, 15 और 16 के तहत इन नए प्रतिष्ठानों को छूट देने के श्रम विभाग के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी।

यह अधिनियम वाणिज्यिक प्रतिष्ठानों को चौबीस घंटे खोलने की अनुमति देता है। उपराज्यपाल ने आवेदनों के तेज, सकारात्मक और पारदर्शी निस्तारण की आवश्यकता पर जोर दिया है। इन 83 आउटलेट्स की सूची में खुदरा, फैशन, ई-कॉमर्स, लॉजिस्टिक्स और खाद्य क्षेत्र के प्रमुख ब्रांड शामिल हैं। अक्टूबर 2022 के बाद से यह इस तरह का चौथा प्रस्ताव था, जिसे उपराज्यपाल ने मंजूरी दी है। इस तरह के पहले प्रस्ताव में उन्होंने 314 प्रतिष्ठानों को अक्टूबर 2022 में अनुमति दी थी। इसके बाद इस वर्ष अप्रैल और जून में क्रमश: 55 और 155 प्रतिष्ठानों को इस तरह की छूट दी गई थी। 83 नए प्रतिष्ठानों को मिली मंजूरी के बाद, दिल्ली में अब ऐसे 607 प्रतिष्ठान हो गए हैं जो राजधानी में विभिन्न स्थानों पर 24 घंटे के आधार पर काम कर सकेंगे और आर्थिक गतिविधियों तथा रोजगार को गति देंगे। उपराज्यपाल ने इस संबंध में मिले आवेदनों को पहले की तुलना में अधिक तेजी से निपटाने की सराहना की है। इससे पूर्व वर्ष 2016 तक के लंबित आवेदन 2022 में मंजूरी के लिए आए थे। इन 83 दुकान और प्रतिष्ठान की सूची में आदित्य बिड़ला फैशन एंड रिटेल लिमिटेड जो कि रेडीमेड कपड़ों और सहायक उपकरण के खुदरा व्यापार में शामिल है, ई-कॉमर्स दिग्गज अमेजन ट्रांसपोर्टेशन सर्विस प्राइवेट लिमिटेड, जिसके पास डिलीवरी स्टेशन हैं, गॉडफ्रे फिलिप्स इंडिया लिमिटेड, जो कि खुदरा बाजार जैसे डिपार्टमेंटल और कनविनिएंस स्टोर से जुडी है, नाइका फैशन प्राइवेट लिमिटेड और एफएसएन ब्रांड्स मार्केटिंग प्राइवेट लिमिटेड (दोनों कॉस्मेटिक और सौंदर्य उत्पादों से संबंधित हैं) और खान-पान की दुकानों की श्रृंखला खोलने वाला बिकानेरवाला इंटरनेशनल शामिल है।

मुख्यमंत्री ने 6 रैट-होल माइनर्स को किया सम्मानित

केजरीवाल बोले- दिल्ली जल बोर्ड से जुड़े 15 श्रमिकों ने अहम भूमिका निभाई थी

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

उत्तरकाशी टनल ऑपरेशन को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले दिल्ली जल बोर्ड से जुड़े श्रमवीरों से मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने मुलाकात की। अपने आवास पर मुलाकात के दौरान सीएम ने सभी श्रमवीरों का सम्मान किया। इन श्रमवीरों ने टनल में फंसे लोगों तक पहुंचाने में आ रही सबसे मुश्किल बाधा को पार किया था।

अरविंद केजरीवाल ने सभी श्रमवीरों के कार्य की सराहना करते हुए कहा कि आपने अपनी जान की बाजी लगाकर बिना सोए रात-दिन मेहनत करके टनल में फंसे 41 लोगों की जिंदगी बचा ली। आज दुनिया बहुत स्वार्थी है। इतनी स्वार्थी दुनिया के अंदर कोई किसी के बारे में नहीं सोचता है। सबसे पहले आदमी ये सोचता है कि मेरा क्या होगा। मेरे साथ कुछ हो गया तो मेरे बच्चों का क्या होगा। मेरे परिवार का क्या होगा। आदमी सबसे पहले अपने बारे में सोचता है। ऐसी दुनिया के अंदर आप जैसे लोग भी हैं। आप लोगों ने जो बहादुरी का काम किया है, उसकी पूरे देश में चर्चा हो रही है। केजरीवाल ने कहा कि दिल्ली वालों के लिए भी यह बहुत गर्व की बात है। श्रमवीरों ने केजरीवाल को टनल में फंसे 41 लोगों तक पहुंचने से पहले आई चुनौतियों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि अमेरिकन ऑगर मशीन बहुत ही गर्म थी। जिस रॉड को काटना था, वो भी बहुत ज्यादा गर्म था। इनके बीच इंच-इंच भर की दूरी थी। इसको काटना बहुत ही चुनौतीपूर्ण था। गर्मी से खुद को बचाते हुए हमने सारे ऑगर्स रॉड को काटा। 36 घंटे तक बिना सोए, बिना झपकी लिए काम किया और आखिरकार टनल में फंसे 41 लोगों तक पहुंच गए। हम लोगों ने एक बार भी हिम्मत नहीं हारी और 41 लोगों की जिंदगी बचाने के लिए रात-दिन लगातार काम किए, जब तक कि कामयाबी नहीं मिली। हमने लोगों की जिंदगी बचाने, अपनी जिंदगी को जोखिम में डाल दिया।

उत्तरकाशी टनल ऑपरेशन को सफल बनाने में छह रैट-हौल माइनर्स से मुलाकात करते मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल।

भाजपा प्रत्येक को देगी 25 हजार रुपये

नई दिल्ली। प्रदेश भाजपा अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा और सांसद मनोज तिवारी उत्तर पूर्वी दिल्ली में रहने वाले 12 रैट माइनरस में से 6 को सम्मानित किया। दोनों नेताओं ने प्रत्येक को 25-25 हजार रुपये देने की घोषणा की। छह श्रमिकों में वकील हसन, मुन्ना कुरैशी, राशिद अंसारी, नसीम मलिक, इरशाद अंसारी और फिरोज कुरैशी में से प्रत्येक को यह राशि दी गई। वीरेंद्र सचदेवा ने कहा कि 41 जिंदगियों को बचाने में तेजी से काम करने के लिए इन रैट माइनर्स का हमेशा आभारी रहेगा, जो काम अंतरराष्ट्रीय मशीनें नहीं कर सकीं, उसे रैट माइनर्स ने अपनी दृढ़ इच्छा शक्ति से हासिल कर लिया। मनोज तिवारी ने कहा कि हम आरएटी माइनर्स की वीरता को सलाम करते हैं, जिसकी कोई तुलना नहीं है और आज हमने उन्हें जो नकद पुरस्कार दिया है, वह उनके साहस और पराक्रम की सराहना करने का एक प्रतीकात्मक तरीका है।

महिला सुरक्षा व नशे पर रोक को लेकर गुरुग्राम पुलिस कर रही बेहतर काम

डीजीपी हरियाणा ने गुरुग्राम में की पत्रकार वार्ता

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

गुरुग्राम में पत्रकारों से बात करते डीजीपी शत्रुजीत कपूर।

हरियाणा के पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) शत्रुजीत कपूर ने नशे पर रोक और महिलाओं की सुरक्षा बेहतर होने को लेकर गुरुग्राम पुलिस की पीठ थपथपाई। उन्होंने कहा कि क्राइम पर कंट्रोल करने के लिए हर टैक्सी और ऑटो का डाटा भी पुलिस के पास होगा। उन्होंने यह भी कहा कि काम में लापरवाही बतरने वाले और भ्रष्टाचार में लिप्त अधिकारियों और कर्मचारियों पर सख्त कार्रवाई की जा रही है।

पुलिस महानिदेशक शत्रुजीत कपूर ने मानेसर के सेक्टर-8 स्थित आईकैट संस्थान में गुरुग्राम जिला के समस्त पुलिस अधिकारियों व कर्मचारियों की बैठक ली। उन्हें पुलिस की कार्यप्रणाली को बेहतर बनाने संबंधी आवश्यक दिशा निर्देश दिए। इस दौरान डीजीपी कपूर ने पुराने पुलिस आयुक्त कार्यालय में तैयार किए गए पुलिस ट्रेनिंग स्कूल का उद्घाटन किया। डीजीपी कपूर ने कहा कि वे अपने एरिया का डेटा ग्राम प्रहरी एप पर अपलोड करना सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि ग्राम प्रहरी नशा बेचने वाले तथा खरीदने वालों की सूची के साथ-साथ अपराधिक गतिविधियों में संलिप्त व्यक्तियों की सूची तैयार करें। ग्राम प्रहरी अपने क्षेत्र में बुजुर्गों का हाल-चाल पूछते रहे और जरूर पडऩे पर उनकी मदद करें। पुलिस महानिदेशक ने सभी ट्रांसपोर्ट यूनियन के पदाधिकारी के साथ बैठक करते हुए उनकी समस्याओं सहित कई अन्य महत्वपूर्ण विषयों के बारे में चर्चा की। इस दौरान पुलिस महानिदेशक ने ट्रांसपोर्ट यूनियन पदाधिकारी को रोड सेफ्टी के संबंध में आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। डीजीपी ने ग्राम पहरियों के जवानों को सम्मानित किया।

डीजीपी ने पत्रकारों से बातचीत में कहा कि थाने-चौकियों में आने वाले शिकायतकर्ताओं की समस्याओं का समाधान एक सप्ताह करने का लक्ष्य रखा गया है। हर शिकायतकर्ता से फीडबैक भी लिया जा रहा है। नूंह में भी इसी तरह लोगों से फीडबैक लिया गया है। उन्होंने कहा कि महिलाओं की सुरक्षा को लेकर हरियाणा पुलिस पुख्ता इंतजाम कर रही है।

नशे कारोबारी से 183 इंजेक्शन पकड़े, मामला दर्ज

सोहना। शहर में नारकोटिक्स विभाग की टीम ने नशे के इंजेक्शन का जखीरा पकड़ने में सफलता हासिल की है। टीम ने आरोपी को पकड़कर पुलिस के हवाले कर दिया है। जिससे 183 प्रतिबंधित इंजेक्शन बरामद किए हैं। आरोपी जिला पलवल निवासी के खिलाफ विभाग ने मामला दर्ज करा दिया है। वहीं उक्त कार्रवाई से प्रतिबंधित दवाइयां बेचने वालों में हड़कंप व बेचैनी है।

गुरुवार की रात्रि करीब साढ़े आठ बजे नारकोटिक्स विभाग की टीम ने पलवल रोड पर पहुंचकर छापा मरते हुए युवक को नशे के इंजेक्शन बेचने के आरोप में पकड़ा गया है। जिसके पास तलाशी में भारी मात्रा में प्रतिबंधित इंजेक्शन बरामद हुए। आरोपी को पकड़ने के लिए नारकोटिक्स विभाग की टीम ने समय से पूर्व ही पहुंचकर अपना जाल बिछा दिया था।

शिक्षक की बेटी यशिका का एनडीए में लेफ्टिनेंट के पद पर हुआ चयन

टॉप-5 में शामिल होकर यशिका ने किया परिवार, प्रदेश का नाम रोशन

अपने शिक्षक पिता देवेंद्र लोहचब के साथ यशिका लोहचब।

गुरुग्राम। शिक्षक पिता देवेंद्र लोहचब की बेटी यशिका लोहचब का एनडीए में लेफ्टिनेंट के पद पर चयन हुआ है। एनडीए की परीक्षा में यशिका टॉप-5 में शामिल रही हैं। बेटी की इस उपलब्धि पर परिवार ही नहीं, उनके जानने वालों ने भी खुशी मनाई। साथ ही परिवार को बेटी की इस उपलब्धि की बधाई दी।

मूलरूप से झज्जर जिला की बादली तहसील के गांव बूपनिया के रहने वाले यशिका के पिता देवेंद्र लोहचब फिलहाल परिवार के साथ देव नगर बहादुरगढ़ में रहते हैं। वे गुरुग्राम के डूंडाहेड़ा गांव के राजकीय माध्यमिक संस्कृति प्राथमिक स्कूल में शिक्षक हैं। देवेंद्र लोहचब ने बताया कि यशिका ने एनडीए की लिखित परीक्षा में लड़कियों की श्रेणी में हाइएस्ट अंक हासिल किए हैं। उसका ऑल इंडिया 31वां रैंक आया है, जो कि बड़ी उपलब्धि है। लड़कियों की श्रेणी में यशिका टॉप-5 में शामिल रही है। पिता ने बेटी की इस उपलब्धि पर गर्व करते हुए कहा कि बेटी ने परिवार ही नहीं अपने प्रदेश हरियाणा का नाम गौरवान्वित किया है। बेटी पर हमें गर्व है। उन्होंने कहा कि बेटियों से ही हमारा नाम रोशन हो रहा है। हर क्षेत्र में बेटियों ने प्रदेश को गौरवान्वित किया है। खेल हो या सेना, शिक्षण हो या उद्योग, पायलट और न जाने कितने क्षेत्रों में बेटियां अपना परचम लहरा रही हैं। हमें बेटियों पर गर्व होना चाहिए। यशिका ने अपनी उपलब्धि का श्रेय माता-पिता और उन तमाम लोगों को दिया है, जो बेटियों को सम्मान देते हैं। यशिका कहती हैं कि बेटियों को ना तो कोख में मारें और ना ही उनसे नफरत करें। बेटियां अपनी किस्मत से बेहतर प्रदर्शन हर क्षेत्र में कर रही हैं। कुछ भी ना दे सकें तो बेटियों को सिर्फ हौंसला दें। वे अपने आप ही आगे बढ़ जाएंगी। अपने हरियाणा को बेटियों के नाम से जाना जाने लगा है। बेटियों ने हर क्षेत्र में हरियाणा का गौरव बढ़ाया है। इसलिए अब बेटियों के प्रति समाज की सोच बदलनी ही चाहिए।

आठ साल में भी सिविल अस्पताल ना बनना शर्म की बात : राजेश यादव

पार्किंग में तब्दील गुरुग्राम का पुराना नागरिक अस्पताल।

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

सांसद, विधायक सरकार के समक्ष मजबूती से नहीं उठा पाए गुरुग्राम की आवाज

अस्पताल की जमीन पर अब बना दी है पार्किंग

कांग्रेस के पूर्व प्रदेश प्रवक्ता राजेश यादव ने कहा कि जिस मिलेनियम सिटी के नाम पर सरकार विदेशियों को लुभाने का प्रयास करती है, उस मिलेनियम सिटी में आम, गरीब लोगों के लिए सिविल अस्पताल तक नहीं बनाया जा रहा है। वर्ष 1967 में बना अस्पताल कंडम होने के बाद तोड़ तो दिया, लेकिन निर्माण के बारे में अभी कुछ अता-पता नहीं है। क्षेत्र के सांसद, विधायक सरकार के समक्ष गुरुग्राम की इस समस्या को मजबूती से नहीं रख पाए।

राजेश यादव ने कहा कि विकास के बड़े बड़े दावे करने वाली भाजपा सरकार, सीएम मनोहर लाल व सांसद राव इन्द्रजीत सिंह के दावे हवा-हवाई साबित हो रहे हैं। शहर के बीचों-बीच स्थित सामान्य अस्पताल की बिल्डिंग ध्वस्त तो कर दी गई, लेकिन नई बिल्डिंग बनाने की प्रक्रिया शुरू नहीं हो पाई है। जिस जमीन पर अस्पताल बनना चाहिए था, उस पर अब वाहनों के लिए पार्किंग बना दी गई है। इससे यह भी पता चलता है कि अस्पताल बनने की प्रक्रिया आसपास भी नहीं है।

सरकार ने जनता को भगवान को भरोसे छोड़ दिया है। उन्होंने कहा कि गुरुग्राम में स्वास्थ्य सेवाओं को सरकार गंभीरता से नहीं ले रही। प्राइवेट अस्पताल यहां पनप रहे हैं, लेकिन गरीब जनता के लिए सरकारी अस्पताल में एक ईंट तक नहीं लगी है। राजेश यादव ने कहा कि अभी तो यह भी तय नहीं हो पाया है कि अस्पताल बनेगा कितना बड़ा। क्षेत्र के सांसद अलग बात बोलते हैं और मुख्यमंत्री अलग। सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल बनाने की बातें अभी तो हवा में ही है। धरातल पर काम कब होगा, यह कोई नहीं जानता। राजेश यादव ने कहा कि वर्ष 1967 में बने सिविल अस्पताल को 2016 में कंडम घोषित किया गया था।

वर्ष 2019 में बिल्डिंग तो तोडऩे का ठेका दिया गया। अस्पताल को कई चरणों में सेक्टर-10 अस्पताल, सेक्टर-31 पॉलीक्लीनिक में शिफ्ट किया गया। अस्पताल का विस्तार करने के लिए स्कूल की इमारत का अधिग्रहण किया गया। अस्पताल तो बना नहीं, स्कूल की जमीन का अधिग्रहण करके बच्चों के लिए परेशानी खड़ी कर दी गई। स्कूल का दायरा कम हो गया। उन्होंने कहा कि जिला के चारों विधायक निजी विकास में लगे हुए हैं। सांसद, सीएम रेस्ट हाउस में आराम करने, उद्योगपतियों से मिलने आते हैं। जनता की सुविधाओं के लिए कोई भी जनप्रतिनिधि गंभीर नहीं है।

स्वास्थ्य सेवाओं में बदलाव लाने के लिए सेक्टर 82ए में खुला आर्टेमिस लाइट

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

आर्टेमिस मेडिकेयर सर्विसेज लिमिटेड ने वाटिका, सेक्टर 82ए, गुरुग्राम में अपना हेल्थकेयर वेंचर आर्टेमिस लाइट लॉन्च किया है। इसका उद्घाटन श्री जवाहर यादव (ओएसडी, हरियाणा सीएम), श्री रमेश सी बिधान (आईएएस, कमिशनर गुरुग्राम डिवीजन), सुधीर सिंगला (एमएलए, गुरुग्राम) एवं आर्टेमिस हॉस्पिटल की प्रबंध निदेशिका डॉ. देवलिना चक्रवर्ती ने किया। न्यू गुरुग्राम और मानेसर में बेहतरीन स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने की दिशा में यह उल्लेखनीय कदम है।

27 बेड वाले मल्टीस्पेशियलिटी हॉस्पिटल आर्टेमिस लाइट में अत्याधुनिक ऑपरेशन थियेटर (ओटी), इन्टेसिव केयर यूनिट (आईसीयू), नियोनेटल इन्टेसिव केयर यूनिट (एनआईसीयू), लेबर डिलीवरी रूम और एक इमर्जेंसी रूम समेत एडवांस्ड मेडिकल इन्फ्रास्ट्रक्चर है। हॉस्पिटल में गैस्ट्रोएंटेरोलॉजी, जनरल मेडिसिन, ऑन्कोलॉजी और न्यूरोलॉजी समेत विभिन्न विभाग हैं। साथ ही, कंपनी के लक्जरी ब्रांड 'डैफोडिल्स बाय आर्टेमिस' के अंतर्गत संचालित एक स्पेशलाइज्ड मदर एंड चाइल्ड केयर यूनिट भी है।

आर्टेमिस लाइट एनआईसीयू अपने आप में विशेष है, जहां शानदार नियोनेटल केयर की सुविधा मिलेगी। इसे बेहद गंभीर मरीजों को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है, जहां कुशल चिकित्सकों द्वारा इलाज मिलेगा। अस्पताल में रुटीन और एडवांस्ड डायग्नॉस्टिक सर्विस भी उपलब्ध होगी। आर्टेमिस लाइट की टीम में अनुभवी एवं समर्पित हेल्थकेयर प्रोफेशनल्स हैं। इनमें 25 साल से ज्यादा अनुभव वाले डॉक्टर, कुशल नर्स और सपोर्ट स्टाफ शामिल हैं। गुरुग्राम के बाहरी हिस्से के निकट वाटिका में आर्टेमिस लाइट को स्थापित करने का फैसला लोगों की स्वास्थ्य संबंधी जरूरतों के प्रति गहरी समझ का परिणाम है। यहां आर्टेमिस लाइट की स्थापना से उच्च गुणवत्ता की स्वास्थ्य सेवाओं तक लोगों की पहुंच सुगम होगी। यह स्वास्थ्य सेवाओं को ज्यादा सुगम बनाने की आर्टेमिस की प्रतिबद्धता दिखाता है। इस अवसर पर आर्टेमिस हॉस्पिटल्स की एमडी डॉक्टर देवलीना चक्रवर्ती ने कहा, 'हम आर्टेमिस लाइट की नई शाखा खोल रहे हैं और यह लोगों के स्वास्थ्य के प्रति हमारी प्रतिबद्धता है।

कोहरे के कारण दो ट्रकों की टक्कर में एक चालक की मौत

सोहना। पलवल-सोहना मार्ग पर गांव सिलानी के पास दो ट्रकों की आमने-सामने की टक्कर में एक ट्रक चालक की मौत हो गई। दूसरे वाहन के चालक को मामूली चोटें आईं। पुलिस ने मृतक के शव का पोस्मार्टम कराने के बाद परिजनों को सौंप दिया। गुरुवार की सुबह कोहरे के कारण पलवल-सोहना मार्ग पर गांव सिलानी के पास दो ट्रक आने सामने भिड़ गए।

उप्र से गुजरात जा रहा ट्रक के चालक ही इस हादसे में मौत हो गई। जिसकी पहचान हरवंस निवासी गांव देवत्ता थाना मिलक खानम जिला रामपुर उत्तर प्रदेश निवासी के रुप में हुई है। मृतक के भाई गूरजीत सिह ने पुलिस को बताया कि हरवंश सिह बुधवार को समय करीब 3 बजे दोपहर बाद नई गाड़ी को लेकर रुद्रपुर उत्तराखंड जिला उधमसिंह नगर से गांधी धाम गुजरात के लिए निकला था। जिसका गुरुवार को पलवल-सोहना मार्ग पर एक्सीटेंड हो गया। जिसकी सूचना स्थानीय पुलिस द्वारा फोन पर उन्हें दी गई।

नागरिक अस्पताल के गेट पर ही प्रॉपर्टी डीलर ने लगा दिया टू-लेट का बोर्ड

गुरुग्राम के सेक्टर-10 स्थित नागरिक अस्पताल के मुख्य गेट पर लगा प्रॉपर्टी डीलर का बोर्ड।

गुरुग्राम। सेक्टर-10 नागरिक अस्पताल के अधिकारियों को इस बात से शायद कोई फर्क नहीं पड़ता कि अस्पताल के गेट पर कोई अतिक्रमण या अपने बिजनेस के बोर्ड लगाए। यही कारण है कि अस्पताल के मुख्य गेट पर रेहड़ी, ऑटो चालकों का कब्जा तो रहता ही है, साथ में अस्पताल के गेट पर एक प्रॉपर्टी डीलर ने टू-लेट (किराये के लिए मकान) का बोर्ड लगाकर नियमों को ठेंगा दिखा दिया है।

अस्पताल के मुख्य गेट पर एक डीलर ने मकान, किराये पर देने के लिए अपना बोर्ड लगा दिया है। यह एक तरह से अतिक्रमण भी है और नियमों की अवहेलना भी। सरकार इमारतों पर किसी भी तरह का विज्ञापन या पेंटिंग करना नियमों के विरुद्ध काम है। इस नियम की परवाह ना करते हुए गेट पर ही अपना विज्ञापन का बोर्ड लगा दिया है। अगर मुख्य गेट पर इस तरह के बोर्ड पर अस्पताल के किसी अधिकारी का ध्यान नहीं जा रहा तो कर्मचारियों से क्या उम्मीद की जा सकती है। इस गेट से अधिकारी, डॉक्टर रोजाना आते-आते हैं। चाहे कोई कब्जा करे या कुछ करे, उन्हें कोई चिंता नहीं है।

जूस की रेहड़ी, ऑटो वाले रखते हैं दिनभर कब्जा : अस्पताल के मुख्य गेट के बाहर व अंदर की तरफ कब्जा ही कब्जा नजर आता है। गेट के बाहर जूस की रेहड़ी और ऑटो चालक अपने ऑटो खड़े करके आने-जाने वाले लोगों के लिए परेशानी खड़ी करते हैं। जूस की रेहड़ी के कारण तो यहां गंदगी ही फैली रहती है। अस्पताल जहां मरीज ठीक होने के लिए आते हैं, लेकिन यहां गंदगी पर पैदा होने वाले मच्छर बीमारी को बढ़ाती हैं।

भारतीय नियोक्ताओं को विश्वास है कि एआई से नौकरियों में वृद्धि होगी, इनडीड का खुलासा

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

अग्रणी ग्लोबल हायरिंग और मैचिंग प्लेटफॉर्म, इनडीड द्वारा किए गए एक अध्ययन में खुलासा हुआ कि कार्यस्थल पर लोग आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) के प्रभाव को लेकर क्या सोचते हैं। इस अध्ययन में नियोक्ताओं, नौकरी तलाशने वालों और एआई के बीच विकसित होते हुए संबंध के बारे में पता चला, और उनकी अपेक्षाओं एवं चिंताओं तथा नियुक्ति प्रक्रिया में एआई के मौजूदा उपयोग के बारे में जानकारी सामने आई।

इस सर्वे के मुताबिक, भारतीय नियोक्ता एआई को लेकर आशान्वित हैं। उनमें से 85 प्रतिशत से ज्यादा एआई द्वारा 1 से 5 सालों में नई नौकरियों का सृजन होने की उम्मीद कर रहे हैं। नौकरी चाहने वाले अधिकांश प्रत्याशी (63 प्रतिशत) इसके प्रभाव को लेकर उत्साहित हैं, और 53 प्रतिशत इस बात पर सहमत हैं कि एआई से नई नौकरियों का सृजन होगा। नौकरी तलाशने वालों की यह आशावादिता इस विश्वास पर आधारित है, कि एआई से:

1. काम ज्यादा उत्पादक बनेगा और उसका प्रबंधन आसान हो जाएगा (86 प्रतिशत)
2. नौकरी तलाशने वाले नए कौशल प्राप्त कर पाएंगे या उनका कौशल बढ़ेगा (85 प्रतिशत)
3. नौकरी तलाशने वाले ज्यादा जटिल, महत्वपूर्ण कामों पर ध्यान केंद्रित कर पाएंगे (47 प्रतिशत)
4. केवल अनुभव की बजाय अपने कौशल और क्षमता के आधार पर नियुक्ति पाने में मदद मिलेगी (43 प्रतिशत)
5. नियोक्ताओं (85 प्रतिशत) को यह भी विश्वास है कि एआई से कर्मचारियों के काम की प्रकृति में सुधार आ सकता है, और उनके कर्मचारियों (77 प्रतिशत) के लिए करियर विकास के अवसर एवं नौकरी की सुरक्षा बढ़ सकते हैं।

सशि कुमार, हेड ऑफ सेल्स, इनडीड इंडिया ने कहा, ''यह नया सर्वे एक उत्साहवर्धक खबर लाया है कि नौकरी तलाशने वाले न केवल एआई की संभावनाओं को जानते हैं, बल्कि इसकी क्षमता को लेकर उत्साहित भी हैं। इससे प्रदर्शित होता है कि नौकरी तलाशने वाले अपने करियर में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए एआई को अपनाने के लिए तैयार हैं। हालाँकि नियोक्ताओं को ऐसा ढाँचा बनाने के लिए मिलकर काम करना होगा, जो टेक्नोलॉजिकल प्रगति की ओर इसका प्रभावी उपयोग कर सके। जहाँ भारत में नौकरी तलाशने वाले एआई सिस्टम और टूल्स के लाभों को स्वीकार करते हैं, वहीं उनके मन में कुछ शंकाएं भी हैं। मुख्य शंकाओं में नया कौशल प्राप्त करने या कौशल संवर्धन की जरूरत है।

डाबर च्यवनप्राश ने सौरव गांगुली को ब्रांड एंबेसडर नियुक्त किया

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

भारत के अग्रणी विज्ञान-आधारित आयुर्वेद कंपनी डाबर इंडिया लिमिटेड ने आज पूर्व भारतीय कप्तान और स्टार क्रिकेटर सौरव गांगुली को अपने प्रमुख स्वास्थ्य पूरक ब्रांड डाबर च्यवनप्राश का नया ब्रांड एंबेसडर बनाया है।

डाबर भारतीय बाजारों के लिए ''इम्युनिटी बढ़ाने में बनिए नंबर 1'' शीर्षक से एक नया विज्ञापन कम्पैन लांच करेगा। सौरव गांगुली के साथ यह कम्पैन जल्द ही मीडिया प्लेटफार्मों पर प्रसारित किया जाएगा। सौरव गांगुली की विश्वसनीय आवाज़ डाबर के अभियान में मार्गदर्शक शक्ति बन गई है, जिससे यह सुनिश्चित हो गया है कि डाबर च्यवनप्राश के साथ प्रतिरक्षा को मजबूत करने का संदेश निर्विवाद रूप से महत्वपूर्ण है और यह हर घर में लोकप्रिय है।

''हम डाबर च्यवनप्राश के ब्रांड एंबेसडर के रूप में डाबर परिवार में सौरव गांगुली का स्वागत करते हुए हमे बेहद खुशी महसूस हो रही है। हमारा मानना है कि उनके करिश्माई व्यक्तित्व, प्रभाव और स्वास्थ्य एवं फिटनेस के प्रति मजबूत प्रतिबद्धता के कारण, वे हमारे ब्रांड का प्रतिनिधित्व करने के लिए बिल्कुल उपयुक्त हैं। डाबर च्यवनप्राश के साथ सौरव का जुड़ाव हमारे ब्रांड की पहुंच को और बढ़ाएगा और पूर्वी भारत में उपभोक्ताओं से जुड़ेगा।'' श्री राकेश ताहिलियानी, एजीएम मार्केटिंग-हेल्थ सप्लीमेंट्स, डाबर इंडिया लिमिटेड ने कहा। इस एसोसिएशन पर टिप्पणी करते हुए, सौरव गांगुली ने कहा, ''मैं डाबर च्यवनप्राश ब्रांड के साथ जुड़कर बेहद खुशी हूं, जो वर्षों से हमारे जीवन का हिस्सा रहा है।

एक एथलीट और स्वास्थ्य के प्रति जागरूक व्यक्ति के रूप में, मैं एक मजबूत इम्यून सिस्टम बनाए रखने के महत्व को समझता हूं। मैं लोगों का ध्यान दवाओं के माध्यम से राहत पाने के लिए 'फायर-इंजन दृष्टिकोण' की तलाश के बजाय मौसमी बीमारियों से लड़ने के लिए आंतरिक शक्ति के निर्माण पर ध्यान केंद्रित करना चाहता हूं। इम्युनिटी बढ़ाना खांसी, सर्दी और फ्लू आदि जैसी बीमारियों से लड़ने का एक प्रभावी तरीका है। डाबर च्यवनप्राश, अपने समय-परीक्षणित फॉर्मूलेशन के साथ, एक प्रभावी इम्युनिटी बूस्टर साबित हुआ है। मैं लोगों के बीच ब्रांड और इसके उल्लेखनीय लाभों के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए उत्सुक हूं।

प्रमुख गेम डेवलपर्स इंडस ऐपस्टोर से जुड़ने से इंडस ऐपस्टोर बना सशक्त

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

भारत के अपने एंड्रॉइड-आधारित मोबाइल ऐप स्टोर, इंडस ऐपस्टोर ने देश भर के यूजर के लिए गेमिंग अनुभव में क्रांतिकारी बदलाव लाते हुए अग्रणी गेम डेवलपर्स को शामिल करने की घोषणा की है।

एक अभूतपूर्व कदम में, Dreamvv, Nazara Technologies, Awx, MPL, Junglee Rummy, Taj Rummy, Rummy Passion, RummyCulture, RummyTime, और CardBaazi ने इंडस ऐपस्टोर के साथ साझेदारी की है।

यह साझेदारी लाखों यूजरों के लिए गेमिंग अनुभव को बढ़ाने का वादा करती है, जो विविधता और नवीनता के लिए इंडस ऐपस्टोर की प्रतिबद्धता के अनुरूप गुणवत्ता वाले गेम की एक विविध श्रृंखला प्रदान करती है। डेवलपर्स को सहयोग करने के लिए इंडस ऐपस्टोर की प्रतिबद्धता इन-ऐप भुगतान पर शून्य कमीशन द्वारा उजागर की गई है, जो कि 15-30 प्रतिशत तक की भारी फीस वसूलने वाले अन्य ऐप स्टोरों के बिल्कुल विपरीत है। यह क्रांतिकारी कदम डेवलपर्स को वित्तीय बाधाओं के बिना बेहतर गेमिंग अनुभव तैयार करने पर ध्यान केंद्रित करने में सक्षम बनाता है। इसके अतिरिक्त, प्लेटफ़ॉर्म की स्थानीयकरण सुविधा यह सुनिश्चित करती है कि ये गेम अब भारत के हर कोने तक पहुंच सकते हैं, जो यूजर की पसंद की भाषा में कंटेंट पेश करते हैं।

साझेदारी पर बोलते हुए इंडस ऐपस्टोर के सह-संस्थापक आकाश डोंगरे कहते हैं, कि 'हम इंडस ऐपस्टोर परिवार में इन गेमिंग दिग्गजों का स्वागत करते हुए रोमांचित हैं। सबसे बेहतर गेमिंग अनुभव प्रदान करने की उनकी विशेषज्ञता और प्रतिबद्धता हमारे दृष्टिकोण के साथ सहजता से मेल खाती है। साथ मिलकर, हम भारतीय गेमिंग उद्योग में अगली विकास कहानी तैयार करने के लिए तत्पर हैं।'

साथियों के कथन सुनीत वाराइच (CEO), CardBaazi: ''इंडस ऐपस्टोर के साथ, हम कार्ड गेमिंग क्षेत्र को फिर से परिभाषित करने के लिए तैयार हैं, जो न केवल मनोरंजन प्रदान करेगा बल्कि खिलाड़ियों के लिए निष्पक्ष और फायदेमंद बातचीत की प्रतिबद्धता भी प्रदान करेगा। कार्डबाज़ी के इमर्सिव गेमप्ले और इंडस ऐपस्टोर के सहायक वातावरण के साथ, हम एक बेजोड़ कार्ड गेमिंग एस्केपेड की पेशकश करने के लिए उत्साहित हैं, जो इन-ऐप खरीदारी पर शून्य कमीशन से समृद्ध है।

जिंद यूनिवर्स की ओर से 'नाउ' एक शक्तिशाली गीत, जो आत्मविश्वास और केयरफ्री होने की प्रेरणा देता है

पायनियर समाचार सेवा। करनाल

'नाउ' बाय जिंद यूनिवर्स एक ऐसा ट्रैक है, जो भावनाएं जगा देगा और आत्मविश्वास, भरोसे, केयर-फ्री और दृढ़ निश्चय का गान बनकर पूरे विश्व के श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर देगा। इसमें शानदार बीट्स और आकर्षक विज्युअल्स का बेहतरीन मिश्रण है, जिस पर सारे श्रोता खुद-ब-खुद झूमने लगेंगे।

'नाउ' बाय जिंद यूनिवर्स केवल एक गीत ही नहीं, बल्कि यह एक हृदयस्पर्शी भावना है। यह प्रेरणा का संदेश देता है, और श्रोताओं से स्वयं पर पूरे भरोसे के साथ वर्तमान क्षण को अपनाने का आह्वान करता है। इस गीत की शक्तिशाली बीट्स और आकर्षक धुन आपके जोश और उत्साह को बढ़ाते हुए इसे हर प्लेलिस्ट का अभिन्न हिस्सा बना देंगी। इस मोहक ट्रैक के साथ एक प्रभावशाली म्यूजिक वीडियो भी है, जो प्रोत्साहन और आत्मविश्वास का शक्तिशाली संदेश देता है। इसके विज्युल्स संगीत के सार के साथ एक दिलचस्प अनुभव उत्पन्न करते हैं, जो दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर उन्हें इसकी हर तान के साथ झूमने के लिए तैयार कर देते हैं। अपने पंजाबी स्वैग और विवेकशील चयन के साथ जिंद का 'नाउ' सांस्कृतिक प्रतीक बन जाएगा, और हर प्लेलिस्ट में अपनी स्थायी जगह बना लेगा।

इस रिलीज़ के बारे में जिंद ने कहा, 'मुझे संगीत की शक्ति पसंद है क्योंकि यह एक ही गीत में आपको बहुत सारी भावनाओं का अहसास कराती है। 'नाउ' के माध्यम से मैंने भी यही करने का प्रयास किया है।

ओजांक आईएएस एकेडमी ने केवल 99 रु. का पैकेज पेश कर यूपीएससी का सपना पूरा करने का अवसर दिया

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

प्रेरणा का प्रतीक और शैक्षणिक उत्कृष्टता की अपनी प्रतिबद्धता के साथ ओजांक आईएएस एकेडमी यूपीएससी प्रिलिमिनरी परीक्षाओं की तैयारी के लिए केवल 99 रु. में अपना विस्तृत पैकेज लेकर आई है।

आज की दुनिया में जब सपनों को पूरा करने के लिए काफी ज्यादा पैसे खर्च करने पड़ते हैं, वहीं ओजांक आईएएस एकेडमी विभिन्न पृष्ठभूमि के प्रत्याशियों के लिए उम्मीद की किरण के रूप में खड़ी है। इस एकेडमी का उद्देश्य शिक्षा को पूरे जनसमूह तक पहुँचाना है, और यह प्रतिबद्धता ओजांक आईएएस एकेडमी द्वारा 99 रु. बैच पेश करने से प्रदर्शित होती है, जो कम आय वाले परिवारों से आने वाले विद्यार्थियों को भी गुणवत्तापूर्ण पैकेज के साथ तैयारी करने का मौका देगा। सिविल सर्विस की तैयारी करने वालों की वित्तीय बाधाओं को दूर करने के लिए इस एकेडमी का उद्देश्य सभी को यूपीएससी की तैयारी की श्रेष्ठ सामग्री उपलब्ध कराके शिक्षा को पूरे जनसमूह तक पहुंचाना है।

इस महान अभियान की शुरुआत ओजांक शुक्ला ने की, जो इस एकेडमी के दूरदर्शी संस्थापक भी हैं। उनका जीवन दृढ़ इच्छाशक्ति और लचीलेपन का उदाहरण भी है। एक साधारण परिवार में जन्मे शुक्ला का व्यक्तिगत सफर अनेकों प्रत्याशियों के संघर्षों को प्रतिबिंबित करता है। उनकी दृढ़ प्रतिबद्धता और विपरीत परिस्थितियों में रहने के अनुभव ने उन लोगों को अवसर प्रदान करने की उनकी प्रतिबद्धता को बल दिया, जो मामूली साधनों के साथ रहते हुए भी बड़े सपने देखते हैं।

99 रु. बैच का उद्देश्य केवल किफायती दामों के मुकाबले काफी बड़ा है; इसमें शिक्षा की परिवर्तनकारी शक्ति में इस एकेडमी का विश्वास भी झलकता है। ओजांक शुक्ला एक दूरदर्शी नेतृत्वकर्ता और ओजांक आईएएस एकेडमी के मैनेजिंग डायरेक्टर हैं, उन्होंने लोगों की किस्मत बदलने में शिक्षा की शक्ति के प्रति अपना गहरा विश्वास प्रदर्शित किया। उन्होंने कहा, 'हम हर प्रत्याशी को यूपीएससी में सफल होने के लिए जरूरी कौशल और ज्ञान देना चाहते हैं। हमारा विस्तृत पैकेज केवल 99 रु. में उपलब्ध कराने का निर्णय हमारे इस विश्वास का प्रमाण है कि आर्थिक बाधाओं को कभी भी महत्वाकांक्षा के रास्ते में नहीं आना चाहिए।

इस विस्तृत पैकेज में उच्च गुणवत्ता की अध्ययन सामग्री, रिकॉर्डेड क्लास, डाउट क्लियरिंग क्लास, करेंट अफेयर्स के सत्र, बाईलिंग्वल सपोर्ट, विशेषज्ञ का मार्गदर्शन, और अध्ययन का सहयोगपूर्ण वातावरण मिलेगा, ताकि हर प्रतियोगी को केवल 99 रु. के बैच में एक समान उत्कृष्टता प्राप्त हो सके, जो ओजांक आईएएस एकेडमी की पहचान है।

बंचारी स्कूल में करोड़ों की लागत से बनेगा आधुनिक व बहुमंजिला भवन

पायनियर समाचार सेवा। पलवल

सरकारी स्कूलों में बेहतर व निजी स्कूलों के मुकाबले की शिक्षा देने के लिए करोड़ों की लागत से बंचारी सीनियर सेकेंडरी स्कूल का निर्माण करवाया जाएगा। स्कूल के भवन को चार मंजिला बनाया जाएगा। जिससे बंचारी व आसपास के गांवों के स्कूली बच्चों को बेहतर शिक्षा प्राप्त हो सके।

नया भवन बनने के बाद स्कूल में सभी प्रकार की सुविधा होंगी। जहां स्कूली बच्चे शिक्षा लेकर आगे रोजकार प्राप्त कर सकेंगे। स्कूल का चार मंजिला भवन बनने के बाद स्कूल में पढ़ने वाले सैकड़ों बच्चों को बरसात, सर्दी, गर्मी और तूफान आदि में खुले में बैठकर शिक्षा लेने से छुटकारा मिलेगा। सरकारी स्कूलों को निजी स्कूलों के मुकाबले बराबरी पर करने के लिए इनके भवनों को भी मल्टी स्टोरी बनाने का कार्य शिक्षा विभाग की तरफ से शुरू हो गया है। इसकी शुरूआत जिला पलवल के सबसे प्रसिद्ध गांव बंचारी से शुरू की गई है। गांव के स्कूल को बहुमंजिला बनाने के लिए शिक्षा विभाग की तरफ अभियान शुरू हो चुका है। इसके लिए सर्व शिक्षा अभियान की तरफ सात करोड़ रुपये का प्रपोजल बनाकर शिक्षा विभाग के अधिकारियों को मंजूरी के लिए पंचकूला भेजा गया है। वहां से प्रपोजल के पास होते ही स्कूल को चार मंजिला बनाने का कार्य शुरू हो जाएगा।

स्कूल का भवन पुराना होने से सीनियर सेकेंडरी स्कूल बंचारी के भवन को नया व बहुमंडिला बनाने का फैसला लिया गया हैं। पुराने स्कूली भवन में बच्चों के पढ़ने के लिए प्रर्याप्त मात्रा मे कमरे, लाइब्रेरी, विज्ञान कक्ष, अध्यापक कक्ष नहीं थे। नए भवन में बच्चों के लिएं 18 कमरे, साइंस लैब, लाइब्रेरी, अध्यापक कक्ष, क्लर्क कक्ष, ड्राइंग रूम, कंप्यूटर कक्ष, खेल कक्ष आदि बनाए जाएंगे। स्कूल के भवन में छात्र छात्राओं के लिए अलग अलग बाथरूम व टायलेट की सुविधा होगी। स्कूल के भवन को दिसंबर 2024 तक पूरा कर लिया जाएगा।

> **बंचारी** सीनियर सेकेंडरी स्कूल में बहुमंजिला व आधुनिक भवन बनने के बाद इस स्कूल में पढ़ने वाले बच्चे निजी स्कूलों के बच्चों का खेल, शिक्षा में मुकाबला कर सकेंगे।
>
> **-अजय सौरोत, ग्रामीण**
>
> **बंचारी** सीनियर सेकेंडरी स्कूल में आधुनिक व बहुमंजिला भवन बनने के बाद इस स्कूल में पढ़ने वाले स्कूली बच्चे निजी स्कूलों की तर्ज पर बेहतर शिक्षा प्राप्त कर सकेंगे।
>
> **-देवीसिंह सौरोत, ग्रामीण**
>
> **बंचारी** सीनियर सेकेंडरी स्कूल के भवन को जल्द ही आधुनिक व बहुमंजिला बनाया जाएगा। जिससे बच्चों को सुविधा रहे।
>
> **-विनीति सैनी, उपमंडल अभियंता, सर्व शिक्षा अभियान**

पक्का रास्ता बनने व बारात घर से होगा लोगें को फायदा : प्रवीण डागर

विधायक ने विकास कार्यों का नारियल फोड़कर किया शुभारंभ

पायनियर समाचार सेवा। पलवल

विधायक प्रवीण डागर ने गांव गहलब, बहीन में बारात घर व गांव मानपुर में रास्ते के निर्माण कार्य का नारियल फोड़कर शुभारंभ किया। गांव के सरपंच समेत सभी ग्रामीणों ने विधायक प्रवीण डागर का फूलमालाएं पहनाकर स्वागत किया। इस मौके पर विधायक ने ग्रामीणों को संबोधित करते हुए कहा कि गांव गहलब में बारात घर व एक रास्ते के निर्माण कार्य का शुभारंभ किया गया है, जिस पर 19 लाख 73 हजार व 6 लाख 30 हजार रुपये का खर्च आएगा तथा गांव मानपुर खेत खलिहान रास्ता निर्माण के अंतर्गत 43 लाख रुपये की लागत से गांव मानपुर नहर से कौंडल रोड तक इंटर लॉकिंग रास्ता निर्माण कार्य व गांव बहीन में 19 लाख 73 हजार रुपये की लागत से बनने वाले बारात घर का नारियल फोड़कर शुभारंभ किया गया है।

विधायक हथीन ने कहा कि मुख्यमंत्री मनोहर लाल व केंद्रीय राज्य मंत्री कृष्णपाल गुर्जर के सहयोग से वर्तमान सरकार ने पिछले चार वर्ष के कार्यकाल में हथीन क्षेत्र का समान व मूलभूत विकास हुआ है तथा लगभग 500 करोड़ रुपये के विकास कार्य हथीन विधानसभा क्षेत्र में अब तक कराए गए हैं, जिनमें सड़कों, ग्रामीण सड़कों, सिंचाई, सेम की समस्या के लिए ट्यूबवेल लगवाना, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं, बिजली, पंचायतों पर खर्च कराए गए हैं। बहुत से कार्य मंजूर किए गए हैं, उनके टेंडर निकाल दिए गए, इनका कार्य प्रगति पर है।

हथीन शहर व गांवों से गांवों की कनेक्टिविटी व किसानों की फसल के आवागमन के लिए खेत खलिहान के रास्तों का निर्माण कराया जा रहा है। कृषि विपणन बोर्ड के माध्यम से छोटी सड़कों का निर्माण पूरा कराया गया है। खेत खलिहान के रास्तों के निर्माण से किसानों को निश्चित ही लाभ मिलेगा। उन्होंने कहा कि मानपुर, बहीन व गहलब के किसानों को भरपूर सिंचाई के पानी लगातार दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि पिछले चार वर्षों से उन्होंने लोगों से किए गए अपने वादे को पूरा करते हुए लगातार हथीन विधानसभा क्षेत्र के सभी गांवों व गहलब, कोंडल में भरपूर नहरी पानी उपलब्ध कराने का कार्य किया है। उन्होंने कहा कि वे भी किसान हैं और किसान की समस्याओं को भली-भांति समझते हैं। मुख्यमंत्री मनोहर लाल द्वारा एक लाख 80 हजार रुपये वार्षिक आय वाले परिवारों की बेटियों को मुफ्त शिक्षा देने व तीन लाख रुपये की आय वाले परिवारों की बेटियों को 50 प्रतिशत फीस पर उच्च शिक्षा देने की घोषणा पर हथीन विधानसभा क्षेत्र की तरफ से धन्यवाद किया। उन्होंने कहा कि एक जनवरी से तीन हजार रुपये पेंशन देने का वादा सरकार ने पूरा किया है। हथीन विधानसभा में विकास कार्यों के लिए पैसे की कोई कमी नहीं रहने दी जाएगी।

सभी विकास कार्यों को पूरा कराया जाएगा। हथीन विधानसभा क्षेत्र का पिछड़ापन दूर करने पर उन्होंने मुख्यमंत्री मनोहर लाल व केंद्रीय राज्य मंत्री कृष्णपाल गुर्जर का आभार प्रकट किया। इस अवसर पर गांव गहलब के सरपंच प्रतिनिधि धर्मेंद्र, विक्रम पहलवान, वेदी ठेकेदार, यशपाल मेंबर, सीशराम फौजी, बेदन मास्टर, रोशन मास्टर, गांव मानपुर सरपंच देवी, विरेंद्र, कमल, गजेंद्र, नवल थानेदार, श्याम मेंबर, सोहनलाल मास्टर, मंडल अध्यक्ष बलवीर, राधारमन, गांव बहीन में विक्रम सरपंच, पूर्व सरपंच रामप्रसाद, पूर्व सरपंच रतन, सुमेर जेलदार, रघुवीर मास्टर, रामकुमार नंबरदार, नरेंद्र थानेदार, एडवोकेट सतीश डागर, नरेश पहलवान, पूर्व सरपंच मंडोरी करन व पंचायत विभाग के अधिकारी मौजूद रहे।

एमवीएन विश्वविद्यालय के फार्मेसी के छात्रों का ड्रामा प्रतियोगिता में प्रथम स्थान

पायनियर समाचार सेवा। पलवल

एमवीएन विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ फार्मास्युटिकल साइंसेज में विश्व एड्स दिवस मनाया गया। विभाग के छात्रों ने यूनिवर्सिटी के सभी लोगों को एड्स के प्रति जो समाज में भ्रांति फैली हैं, उसके बारे में बहुत अच्छे तरीके से समझाया। इस अवसर पर फार्मेसी विभाग की एक टीम के छात्र और छात्राओं ने रेड रिबन क्लब द्वारा सिविल अस्पताल पलवल में कराई गई प्रतियोगिता में भाग लिया। जिसमें उन्होंने एक नाटक के माध्यम से एड्स को बहुत ही सरल तरीके से समझाया और इसके लिए उन्हें प्रथम पुरस्कार भी मिला। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉक्टर अरुण गर्ग ने कहा कि प्रति वर्ष एड्स दिवस की एक थीम रहती है और इस बार की थीम है लेट कम्युनिटी लीड। जिसका अर्थ है कि समाज में एड्स से प्रभावित लोग अपनी आवाज उठाने में सक्षम बनें। विश्वविद्यालय के प्रबंधक संचालक कांता शर्मा, कुलाधिपति वरुण शर्मा, कुलपति डॉक्टर अरुण गर्ग, उप कुलपति डॉक्टर एनपी सिंह, कुलसचिव डॉक्टर राजीव रतन, प्रोफेसर एसएच अंसारी, प्रोफेसर योगेंद्र सिंह ने इसकी सराहना की और विद्यार्थियों द्वारा प्रथम पुरस्कार प्राप्त करने पर उन्हें बधाइयां दीं। विभाग के डीन डॉक्टर तरुण विरमानी ने इसका श्रेय मुख्य रूप से प्रोफेसर नरेंद्र आहूजा, जिन्होंने इस नाटक की रूपरेखा तैयार की और सहायक अध्यापक आशीष भारद्वाज, जिन्होंने इसे सफल बनाने में मदद की, को दिया। प्रथम पुरस्कार प्राप्त करने वाली नाटक की टीम के विधार्थी वंशिका, अभांशु, निधि, खुशी, शीतल, रितिका, लक्ष्मी, यशिका इत्यादि थे।

सिविल अस्पताल में विश्व एड्स दिवस का आयोजन

संक्षिप्त समाचार

एसीई कंपनी ने एसपी को बोलेरो कार भेंट की

फरीदाबाद। विख्यात क्रेन मेन्युफैक्चरिंग कंपनी एसीई लिमिटेड, दुधोला, पलवल के चेयरमैन एवं मैनेजिंग डायरेक्टर विजय अग्रवाल द्वारा पलवल एसपी अंशु सिंगला को बोलेरो कार की चाबी हैंडओवर कर डोनेट की। विजय अग्रवाल ने यह भी बताया कि उनकी कंपनी सीएसआर के तहत पलवल व फरीदाबाद में 11 एंबुलेंस चौबीसों घंटे फ्री सेवाएं दे रही हैं। विजय अग्रवाल ने यह भी बताया कि वो समाज सेवा के कार्यों मे कभी पीछे नही हटेंगे। इसके अतिरिक्त विजय अग्रवाल ने यह भी बताया कि पिछले करीब 10-11 सालों से उनके द्वारा चलाई जा रही एंबुलेंस से करीब 18 हजार लोगों को सेवाएं दे चुके हैं। पलवल व फरीदाबाद में उनकी कंपनी द्वारा दो हेल्थ चेकअप लैबोरेट्री काम कर रही हैं, जिनमें आम आदमी को बहुत ही कम रेट में हेल्थ चेकअप की सुविधा उपलब्ध है। इस अवसर पर कंपनी की डायरेक्टर मोना अग्रवाल, कंपनी के एक्सिक्यूटिव डायरेक्टर सौरभ अग्रवाल, कंपनी के प्रधान एचआर व लीगल, डॉ. विरेंद्र सरोहा, प्रशासनिक हेड कर्नल संजय वर्मा व अन्य कंपनी के वरिष्ठ अधिकारी भी मौजूद थे। इस अवसर पर एसपी अंशु सिंगला ने कंपनी द्वारा पलवल पुलिस को डोनेट की गई बोलेरो कार के लिये धन्यवाद किया तथा उनके द्वारा पलवल व फरीदाबाद में कंपनी द्वारा चलाई जा रही 11 एंबुलेंस व पलवल व फरीदाबाद में बहुत ही कम रेट पर हेल्थ चेकअप लेबोरेट्री की सेवाओं के लिए प्रशंसा की तथा कहा कि हमें विजय अग्रवाल पर गर्व है कि वो इस तरह के सामाजिक कार्यों में हमेशा आगे रहते हैं। कंपनी में एसपी अंशु सिंगला के अतिरिक्त डीएसपी, पलवल साकिर हुसैन, एसएचओ गदपुरी राजबीर सिंह व पुलिस विभाग के कुछ अन्य कर्मचारी भी उपस्थित थे।

गांवों में साफ-सफाई के लिए बीडीपीओ व सरपंचों को दी हिदायत

पलवल। एसडीएम लक्ष्मी नारायण ने खंड विकास एवं पंचायत अधिकारी को निर्देश दिए कि आम रास्ते, सार्वजनिक स्थलों व चौराहों आदि पर साफ-सफाई की समुचित व्यवस्था करवाएं। उन्होंने कहा कि गांव के रास्तों व मुख्य चौराहों पर कूडा-कचरा सरे आम दिखाई देता है। उन्होंने निर्देश दिए कि सभी ग्राम पंचायत गांव के चौकीदार द्वारा मुनादी करवाएं कि गांव में कोई भी पशुपालक अपने पशुओं के अपशिष्ट गोबर, कूड़ा-कचरा आदि को रास्तों पर न फैलने दें, यदि पशुओं द्वारा गोबर फैलाया जाता है तो उसे एकत्रित करके निर्धारित स्थल पर डलवाना सुनिश्चित करें। इस संबंध में जगह-जगह इश्तेहार व नोटिस लगाना सुनिश्चित किया जाए। इसके अतिरिक्त गांवों में आवारा कुत्तों की तादात काफी अधिक हो चुकी है। इनके द्वारा बच्चों व बुजुर्गों पर हमले की घटनाएं भी सामने आई हैं। इसके लिए ग्राम पंचायतें अपने स्तर पर आवारा कुत्तों की संख्या पर नियंत्रण करने के लिए बंधीकरण संबंधी कार्रवाई करें, जिससे इनकी संख्या नियंत्रित हो सके तथा हमलों की घटना को रोका जा सके। इसके साथ-साथ सभी आमजन अपने पालतू कुत्तों पर नियंत्रण कर उन्हें अपने घर पर बांधकर रखें। एसडीएम लक्ष्मी नारायण ने कहा कि गांवों को सुंदर बनाना सरकार का ध्येय है। इसलिए हम सभी को साफ-सफाई पर विशेष ध्यान देना चाहिए, जिससे कि बीमारियों से बचा जा सके।

लिंग्याज के लॉ के विद्यार्थियों ने न्यायालय की बारीकियों को जाना

फरीदाबाद। लिंग्याज विद्यापीठ (डीम्ड-टू-बी यूनिवर्सिटी) के स्कूल ऑफ लॉ द्वारा विद्यार्थियों को जिला एवं सत्र न्यायालय, फरीदाबाद की न्यायिक प्रक्रिया का के अवलोकन के लिए न्यायालय भ्रमण करवाया गया। हेड ऑफ द स्कूल प्रोफेसर डॉ. मोनिका रस्तोगी ने बताया कि इस दौरान छात्र-छात्राओं ने जिला एवं सत्र न्यायालय, परिवार न्यायालय, मध्यस्थम केंद्र समेत विभिन्न न्यायालयों की प्रक्रिया का अवलोकन किया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य छात्र-छात्राओं को न्यायिक प्रक्रिया से अवगत कराना एवं व्यवहारिक ज्ञान का विकास करना था। छात्र-छात्राओं ने जिला एवं सत्र न्यायाधीश संदीप गर्ग से वकालत के बारे में मार्गदर्शन लिया तथा इस दौरान जिला एवं सत्र न्यायाधीश ने अन्वेषण में न्यायाधीश एवं पुलिस के कार्य के बारे में विस्तार से चर्चा की। न्यायालय में चल रहे केस को भी छात्र-छात्राओं ने बारीकी से देखा तथा कोर्ट परिसर से जुड़े विभागों का दौरा किया एवं किस प्रकार से केस फाइल को तैयार किया जाता है, इसका भी अवलोकन किया। इस दौरान छात्र-छात्राओं ने जिला अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष से भी मुलाकात कर मार्गदर्शन प्राप्त किया। यह कार्यक्रम यूनिवर्सिटी चांसलर डॉ. पिचेश्वर गड्डे एवं प्रोफेसर चांसलर प्रोफेसर डॉ. एमके सोनी की प्रेरणा द्वारा सफल बनाया जा सका। इस कार्यक्रम की सफलता पर रजिस्ट्रार प्रेम कुमार सलवान और अकादमिक डीन प्रोफेसर डॉ. सीमा बुशरा ने विभाग के सभी स्टाफ सदस्यों को बधाई दी। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में डॉ. अंजली दीक्षित, शिल्पा शर्मा, शिवेंद्र कुमार, विवेक गुप्ता, रुचि कौशिक, मोहिनी तनेजा, स्वेक्षा भदौरिया, डॉ. सुरेश नागर और दुर्गेंद्र सिंह राजपूत का योगदान महत्वपूर्ण रहा।

श्री विश्वकर्मा कौशल विश्वविद्यालय में एड्स दिवस मनाया गया

फरीदाबाद। श्री विश्वकर्मा कौशल विश्वविद्यालय ने लेट कम्युनिटीज लीड शीर्षक से विश्व एड्स दिवस का आयोजन किया। कार्यक्रम के अतिथि वक्ता डॉ. जेपी राजलिवाल, डिप्टी सिविल सर्जन, सीएमओ कार्यालय, गुड़गांव उपस्थित रहे। इस दौरान उन्होंने कहा कि थीम लेट कम्युनिटीज लीड है, क्योंकि परिवर्तन एक क्षण पर नहीं, बल्कि एक आंदोलन पर निर्भर करता है। यह थीम इस बात पर जोर देती है कि एड्स से प्रभावित लोग अपने जीवन को बेहतर बनाने के लिए अपनी आवाज उठाने में सक्षम बनें। एड्स को लेकर हमारे समाज में सालों से कई मिथक चले आ रहे हैं, जिसकी वजह से इस बीमारी से पीड़ित लोगों को शर्मिंदगी और दुर्व्यवहार का सामना करना पड़ता है। लोगों के जीवन पर एचआईवी के प्रभाव के बारे में जागरूकता बढ़ाने, कलंक और भेदभाव को समाप्त करने और एचआईवी से पीड़ित लोगों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने के लिए एड्स प्रतिक्रिया के लिए बढ़ी हुई धनराशि की अभी भी गंभीर आवश्यकता है। डॉ. ऋषिपाल, डीन पेडागोजी ने कहा कि चिकित्सा अनुसंधान में प्रगति, उपचार और रोकथाम तक पहुंच में वृद्धि और वायरस की व्यापक समझ के कारण एचआईवी और एड्स से निपटने में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है। कार्यक्रम के दौरान डॉ. भावना रूपराय कौशल सहायक प्रोफेसर, प्रभिसेक कौशल प्रशिक्षक, संसबीर डागर कौशल प्रशिक्षक, स्टाफ नर्स ज्योति, फार्मासिस्ट हरिओम और एमएलटी के छात्र उपस्थित थे।

योग प्रतियोगिता के प्रतिभागी किए सम्मानित

पलवल। जिला योगासन स्पोर्ट्स एसोसिएशन पलवल व योग समिति कलसाडा के तत्वावधान में प्रतिभा खोजो योगासन प्रतियोगिता का आयोजन योगाचार्य गुरमेश सिंह के सानिध्य में राजकीय उच्च विद्यालय कलसाडा तहसील हथीन में गायत्री महामंत्र द्वारा हुआ। प्रतियोगिता की अध्यक्षता हुकमचंद हेड मास्टर ने की तथा संयोजन मास्टर राजेंद्र सिंह सहरावत ने किया। प्रतियोगिता के निर्णायक मंडल की भूमिका बसंतलाल यादव, टेकचंद, देवेंद्र व अनीता ने निभाई। विजेता खिलाड़ियों को अतिथियों ने सम्मानित किया। प्रतियोगिता के दौरान सर्वश्रेष्ठ योगी का खिताब दक्ष बालयोगी को मिला तथा समर, सूरज उपविजेता रहे। इसी प्रकार लड़कियों के वर्ग में कुमारी प्रीति विजेता तथा भावना, प्रियांशी उपविजेता रही। लड़कों में पांच से आठ आयुवर्ग में दक्ष, सर्वेश, राहुल, 10 से 12 आयुवर्ग में सूरज, देव, टिंकू शामिल रहे।

आईटीआई पलवल में आज लगेगा अप्रेंटिसशिप व रोजगार मेला

पायनियर समाचार सेवा। पलवल

कौशल विकास एवं औद्योगिक प्रशिक्षण विभाग हरियाणा सरकार के आदेश अनुसार राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान पलवल में दो दिसंबर को एक अप्रेंटिसशिप एवं रोजगार मेले का आयोजन किया जा रहा है। मेले में फरीदाबाद व पलवल के औद्योगिक क्षेत्र के विभिन्न उद्योग भाग ले रहे हैं। विभिन्न उद्योगों ने अपनी मांग आईटीआई पलवल की शिक्षुता एवं प्लेसमेंट सेल को दी है।

आईटीआई पलवल के प्रधानाचार्य भगत सिंह ने बताया कि इस मांग में उनको अधिकतर आईटीआई पास फिटर, टर्नर, वेल्डर, मशीनिस्ट, इलेक्ट्रीशियन, टूल एंड डाई मेकर, मशीनिस्ट ग्राइंडर, कोपा इत्यादि ट्रेडों के अभ्यर्थियों की रोजगार एवं अप्रेंटिसशिप के लिए जरूरत है। जिन उद्योगों ने अपनी डिमांड आईटीआई पलवल को भेजी है, उनमें मुख्यत: जुनेजा हाइड्रॉलिक्स प्राइवेट लिमिटेड फरीदाबाद, ट्रैकटेल टिरफोर इंडिया प्राइवेट लिमिटेड पृथला, शिवानी लॉक्स प्राइवेट लिमिटेड पृथला, स्वर्ण इंफ्राटेल प्राइवेट लिमिटेड मीतरोल, वीजी इंडस्ट्रियल एंटरप्राइजेज प्राइवेट लिमिटेड पृथला इत्यादि शामिल हैं। इस अप्रेंटिसशिप एवं रोजगार मेले में भाग लेने वाले अभ्यार्थी विभाग की वेबसाइट पर अपना रजिस्ट्रेशन करें।

> **रोजगार** एवं अप्रेंटिसशिप पाने के इच्छुक अभ्यार्थी दो दिसंबर को आईटीआई पलवल की शिक्षुता एवं प्लेसमेंट सेल में आकर सुबह नौ बजे संपर्क कर सकते हैं। इस रोजगार मेले में अधिक से अधिक छात्रों को अप्रेंटिसशिप व रोजगार दिलवाया जाएगा। भविष्य में भी इस तरह के रोजगार मेलों का आयोजन किया जाता रहेगा।
>
>
>
> **-भगत सिंह, प्रधानाचार्य कम नोडल अधिकारी, आईटीआई पलवल**

एड्स का ज्ञान ही जागरूकता एवं बचाव

फरीदाबाद। विश्व एड्स दिवस के अवसर पर राजकीय आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सराय ख्वाजा फरीदाबाद में प्राचार्य रविंद्र कुमार मनचंदा की अध्यक्षता में जूनियर रेडक्रॉस, सेंट जॉन एंबुलेंस ब्रिगेड और गाइड्स ने एड्स ज्ञान बचाए जान विषय पर जागरुकता कार्यक्रम आयोजित किया। मनचंदा ने कहा कि वर्ल्ड एड्स डे मनाने का उद्देश्य एचआईवी संक्रमण के कारण होने वाली महामारी एड्स के बारे में हर आयु के व्यक्ति के बीच जागरूकता बढ़ाना है। एड्स आज के आधुनिक समय की सबसे बड़ी स्वास्थ्य समस्याओं में से एक है। यूनिसेफ की रिपोर्ट के अनुसार अब तक तीन करोड़ सत्तर लाख से भी अधिक व्यक्ति एचआईवी के शिकार हो चुके हैं।

सीएम पद ठुकरा ओपी वर्मा ने साबित किया वह आप के सच्चे सिपाही : भड़ाना

पायनियर समाचार सेवा। फरीदाबाद

मैं किसान मजदूर पार्टी के उस दावे का खंडन करता हूं, जिसमें उन्होंने कहा था कि उनकी पार्टी ने मुझे हरियाणा का प्रदेश अध्यक्ष और प्रदेश के मुख्यमंत्री के पद का ऑफर दिया था। यह विचार आम आदमी पार्टी के लोकसभा उपाध्यक्ष ओपी वर्मा ने एक प्रेस वार्ता के दौरान मीडिया से बात करते हुए व्यक्त किए। ओपी वर्मा ने कहा की किसान मजदूर पार्टी ने बिना मुझसे सलाह मशविरा किए एक अखबार में छपवा दिया कि वह मुझे हरियाणा का प्रदेश अध्यक्ष और मुख्यमंत्री पद का उम्मीदवार बनाना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि लगभग एक साल पहले मैंने तत्कालीन जिला अध्यक्ष धर्मवीर भडाना के नेतृत्व में आम आदमी पार्टी का दामन थामा था और अब भी आम आदमी पार्टी में ही हूं और आगे भी पार्टी के सच्चे सिपाही के रूप में कार्य करता रहूंगा। उन्होंने कहा की कई पार्टियां मुझे बड़े पद का ऑफर दे रही हैं, लेकिन मैं किसी भी पार्टी के दिए गए लोभ लालच में नहीं आऊंगा।

प्रेस वार्ता में मौजूद आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य धर्मवीर भड़ाना ने कहा कि आम आदमी पार्टी का संगठन हरियाणा में बहुत ही ज्यादा मजबूत हुआ है और 2024 में प्रदेश में आम आदमी पार्टी की सरकार बनने जा रही है। इसलिए हमारे नेताओं को तमाम राजनीतिक पार्टियां अपने पाले में लाना चाहती हैं, लेकिन ऐसी पार्टियों के मंसूबे कामयाब नहीं होंगे। उन्होंने कहा कि ओपी वर्मा ने दिखा दिया कि वह पार्टी के सच्चे सिपाही हैं। धर्मवीर भड़ाना ने कहा कि आम आदमी पार्टी राष्ट्रीय पार्टी है और हमारे दो राज्यों में सरकार चल रही है। साथ में कई और राज्यों में हमारे विधायक हैं। 2024 में हरियाणा में विधानसभा चुनाव हैं और आम आदमी पार्टी सभी 90 सीटों पर चुनाव लड़ने जा रही है और प्रदेश में सरकार बनाने जा रही है। इस मौके पर मेहरचंद हरसाना, विनोद भाटी, सत्येंद्र शर्मा, सोनिया कथूरिया, मुस्तकीम प्रधान, जोगेंद्र चंदीला, अफरोज आलम प्रमुख रूप से मौजूद थे।

ट्रेन से कट युवक व महिला की मौत

पलवल। अलग अलग स्थानों पर ट्रेन की चपेट में आने से एक युवक और एक महिला की मौत हो गई। युवक की पहचान हो चुकी है, जबकि महिला की पहचान के प्रयास किए जा रहे हैं। दोनों शवों को पोस्टमार्टम के लिए जिला नागरिक अस्पताल भिजवा दिया गया। जीआरपी के जांच अधिकारी ओमप्रकाश तेवतिया ने बताया कि असावटा गांव निवासी सतीश ने दिए बयान में कहा है कि गांव के निकट से रेलवे लाइन गुजर रही है। दूसरी तरफ वह पशुओं को लेकर रहता है। उसका बेटा 18 वर्षीय सौरव उसके लिए खाना देने आया था। खाना देकर वापस जाते समय ट्रेन की चपेट में आने से घायल हो गया। उसे इलाज के लिए जिला नागरिक अस्पताल लाया गया। डॉक्टरों ने उसे गंभीर हालत में फरीदाबाद के लिए रेफर कर दिया। फरीदाबाद के एक निजी अस्पताल में इलाज के दौरान गुरुवार रात सौरव की मौत हो गई। सूचना मिलने पर जीआरपी अस्पताल पहुंच गई और सौरव के शव को कब्जे में लेकर जिला नागरिक अस्पताल भिजवा दिया। शव को पोस्टमार्टम के बाद उसके परिजनों को सौंप दिया। वहीं, जीआरपी के जांच अधिकारी धनीराम ने बताया कि पलवल स्टेशन के निकट ट्रेन की चपेट में आने से एक करीब 40-45 वर्षीय महिला की मौत हो गई।

कोई भी पात्र व्यक्ति सरकारी योजना से नहीं रहेगा अछूता

पलवल। देश का हर गरीब व्यक्ति जो अंतिम पंक्ति में सबसे अंतिम छोर पर खड़ा है, उसे सरकारी जनहित योजनाओं व सेवाओं का पूरा लाभ मिले, इसी उद्देश्य के साथ केंद्र व प्रदेश सरकार कार्य कर रही है। इसी कड़ी में देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विकसित भारत संकल्प यात्रा शुरू की है, जिसमें चलाई गई रथ यात्रा देश के गांव-गांव और शहर के प्रत्येक वार्ड में जाकर लोगों तक अपनी पहुंच बनाएगी और लोगों को सरकार की समस्त योजनाओं की जानकारी देगी। ताकि हर एक पात्र व्यक्ति योजना के लाभ से वंचित न रहे। यह वक्तव्य हरियाणा वेयरहाउसिंग के चेयरमैन एवं पृथला के विधायक नयनपाल रावत ने शुक्रवार को गांव जनौली के डागर पाल भवन में आयोजित विकसित भारत संकल्प यात्रा संवाद कार्यक्रम में ग्रामीणों को संबोधित करते हुए व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और प्रदेश के मुख्यमंत्री मनोहर लाल का ध्येय है कि कोई भी पात्र व्यक्ति सरकार की योजनाओं से वंचित न रहे।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी व मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने देश व प्रदेश में शासन कम से कम व सुशासन अधिक से अधिक देने का कार्य किया है। हर वर्ग कर्मचारी, उद्योगपति, व्यापारी, किसान, जवान, खिलाड़ी के लिए जनहित में योजनाएं बनाई हैं। जो वर्ग सरकार की योजनाओं से वंचित रह गए थे, उन्हें विकसित भारत संकल्प यात्रा अंत्योदय की भावना के साथ मुख्यधारा से जोड़ने में कारगर सिद्ध हो रही है। इस रथ यात्रा के दौरान प्रशासन की ओर से कैंप लगाकर जागरूक किया जा रहा है।

नागरिकता संशोधन कानून

बहस को बढ़ावा

नागरिकता संशोधन कानून-सीएए पर अमित शाह के बयान ने बहस को बढ़ावा दे दिया है। केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने हाल ही में कहा कि नागरिकता संशोधन कानून-सीएए का क्रियान्वयन होगा। इसने जोरदार बहस व अनुमानों को हवा दे दी है। दिसंबर, 2019 में लाए जाने के बाद से ही सीएए विवादों का विषय बन गया है। इसका उद्देश्य पड़ोसी मुस्लिम बहुल देशों, जैसे पाकिस्तान, बांग्लादेश व अफगानिस्तान के उत्पीड़ित अल्पसंख्यकों को भारतीय नागरिकता प्रदान करना है। उस समय इसका व्यापक विरोध और आलोचना हुई थी क्योंकि कुछ लोगों की नजर में इससे भारत के पंथनिरपेक्ष सिद्धान्त व धार्मिक अल्पसंख्यकों के अधिकार प्रभावित होते थे। इस बार फिर शाह द्वारा सीएए के क्रियान्वयन पर दिए बयान से संदेह और चर्चा को बढ़ावा मिला है। राष्ट्रीय नागरिकता रजिस्टर-एनआरसी से इसके जुड़ाव के कारण खासकर मुस्लिम समुदाय के खिलाफ संभावित भेदभाव व पृथक्करण के भय से राष्ट्रव्यापी विरोध हुआ था। इन प्रदर्शनों पर सरकार ने आश्वासन दिया था कि सीएए का उद्देश्य किसी समुदाय को नुकसान पहुंचाना नहीं है और इसका उद्देश्य केवल पड़ोसी देशों के अल्पसंख्यकों को सुरक्षित स्वर्ग प्रदान करना है। लेकिन इसके बावजूद कानून से जुड़ा विवाद बना रहा जिसके कारण इसके क्रियान्वयन को अनिश्चित काल तक टाल दिया गया। शायद उस समय सरकार ने इसे ठंडे बस्ते में डालना ठीक समझा। इस बीच अन्य मुद्दे सामने आ गए और सीएए को लगभग भुला दिया गया। लेकिन अमित शाह के बयान से यह एक बार फिर यह केन्द्रीय स्थान पर आ गया है।

समर्थकों का तर्क है कि सीएए एक मानवीय विचार है जो पड़ोसी देशों में धार्मिक उत्पीड़न का सामना कर रहे लोगों को शरण देने का प्रस्ताव करता है। उनका कहना है कि यह भारत द्वारा उत्पीड़ित समुदायों को शरण देने तथा धार्मिक स्वतंत्रता सिद्धान्तों के पालन की परंपरा के अनुसार है। दूसरी ओर आलोचकों को भारत के 'पंथनिरपेक्ष' ढांचे पर कानून के संभावित प्रभाव के बारे में चिन्ता है। उनका तर्क है कि चयनित ढंग से धर्म के आधार पर नागरिकता प्रदान करने से सीएए धर्मिक जुड़ाव को अनदेखा कर सबके साथ समान व्यवहार के सिद्धान्त की अनदेखी करता है। आलोचकों को डर है कि इससे संविधान के पंथनिरपेक्ष मूलाधारों को चुनौती देने का उदाहरण स्थापित हो सकता है। इसके साथ ही सीएए निकटता से एनआरसी से जुड़ा है और इस प्रक्रिया का उद्देश्य अवैध आप्रवासियों की पहचान कर उनको देश से बाहर निकालना है। यह तथ्य उल्लेखनीय है कि सीएए को अदालतों में चुनौती दी गई थी और न्यायालयों ने उसे संविधान-सम्मत माना है। सरकार ने पहले ही स्पष्ट कर दिया था कि उसका फिलहाल देश में एनआरसी लागू करने का कोई इरादा नहीं है, इसलिए सीएए को उसके साथ जोड़ कर भय पैदा करना अनुचित है। अमित शाह ने हालिया बयान विधानसभा चुनावों में मतदान के अंतिम दिन पश्चिम बंगाल में दिया, इसलिए इसे इन चुनावों में मतदाताओं को प्रभावित करने के दृष्टिकोण से देखना भी उचित नहीं है। इस तथ्य से भी इनकार नहीं किया जा सकता है कि बांग्लादेश, पाकिस्तान व अफगानिस्तान में हिंदुओं व सिखों का सुनियोजित ढंग से सफाया या धर्मांतरण कराया गया है जिससे उनकी संख्या वहां लगभग नगण्य हो गई है। ऐसे में उत्पीड़ित हिंदुओं और सिखों को भारत में शरण देने का कानून भारत की परंपरा के अनुरूप है तथा यह किसी प्रकार देश में रह रहे अल्पसंख्यकों के खिलाफ नहीं है।

रोजगार योग्य कौशल प्रशिक्षण

प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना-पीएमकेवीवाई को उद्योगों से जोड़ा जाना चाहिए। कुशल प्रशिक्षितों को रोजगार और स्थानीय आर्थिक आवश्यकताओं में समन्वय जरूरी है।

दिनेश सूद
(लेखक, कौशल विकास क्षेत्र से संबद्ध हैं)

वर्ष 2015 में शुरू की गई प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना-पीएमकेवीवाई के अंतर्गत पिछले सात साल में 13.7 मिलियन उम्मीदवारों को प्रशिक्षण दिया गया है। लेकिन इसमें से केवल 18 प्रतिशत या 2.4 मिलियन उम्मीदवार ही रोजगार प्राप्त करने में सफल हुए हैं। लोकसभा की एक स्थाई समिति ने इस कम 'प्लेसमेंट दर' पर चिन्ता प्रकट की है। समिति ने पैसे के उपयोग में कमी, ढांचागत कमियों, ड्रापआउट, उद्योगों से संपर्क के अभाव तथा राज्य की समुचित संलिप्तता के अभाव को महत्वपूर्ण समस्यायें माना है। कार्यक्रम की प्रभावशीलता बढ़ाने के लिए पीएमकेवीवाई को स्थानीय अर्थव्यवस्था की आवश्यकताओं से जोड़ा जाना चाहिए। वर्तमान समय में भारत के 530 मिलियन कार्यबल के केवल 2.4 प्रतिशत को ही औपचारिक व्यावसायिक शिक्षा या प्रशिक्षण प्राप्त है। इसका अर्थ है कि बहुसंख्य कार्यबल अकुशल है जिससे उसकी उत्पादकता कम है। इसके साथ ही भारत के कार्यबल के एक चौथाई की शिक्षा प्राथमिक स्तर से भी कम है। इससे बेरोजगारी दर घटाने में कौशल विकास कार्यक्रमों के महत्व पर जोर देने की आवश्यकता उजागर होती है। इसके बावजूद 'क्वार्टली पीरियाडिक लेबर फोर्स सर्वे'-पीएलएफएस रिपोर्ट के नवीनतम डेटा के अनुसार बेरोजगारी दर 6.8 प्रतिशत तथा 15 से 29 वर्ष आयुवर्ग वाले नौजवानों में बेरोजगारी दर 17.3 प्रतिशत है।

पीएमकेवीवाई के तीन रूप रहे हैं। पीएमकेवीवाई 2.0 में प्रशिक्षित व नौकरी प्राप्त उम्मीदवारों की संख्या सर्वाधिक है। इनकी नौकरी प्राप्त करने की दर 19.5 प्रतिशत है। लेकिन यह दर पीएमकेवीवाई 3.0 में घट कर 5.8 प्रतिशत रह गई जो अब तक सबसे कम है। कुल मिला कर लगभग 11 मिलियन प्रशिक्षित उम्मीदवारों को प्रमाणपत्र मिले हैं। सरकार को इनके सरोकारों को संबोधित करने के लिए तत्काल कदम उठाने चाहिए। इसके लिए पीएमकेवीवाई को स्थानीय अर्थव्यवस्था से जोड़ने तथा कार्यक्रम की प्रभावशीलता बढ़ाने की जरूरत है। यह तथ्य उल्लेखनीय है कि उत्तर प्रदेश में सबसे ज्यादा उम्मीदवारों को प्रशिक्षण दिया गया है जिनकी संख्या 1.59 मिलियन है, लेकिन राज्य में उनकी प्लेसमेंट दर केवल 20 प्रतिशत है। दूसरी ओर तेलंगाना में सर्वोच्च प्लेसमेंट दर 35.1 प्रतिशत है और इसके बाद 34.6 प्रतिशत के साथ पुडुचेरी दूसरे स्थान पर है। हरियाणा और पंजाब भी बहुत पीछे नहीं हैं जिनकी प्लेसमेंट दर क्रमश: 31.7 व 29.6 प्रतिशत है। लेकिन महाराष्ट्र और केरल को प्लेसमेंट दर ठीक करने में बहुत कुछ करना है जिनकी यह दर निराशाजनक रूप से 9.3 प्रतिशत व 10.4 प्रतिशत है। उल्लेखनीय है कि एनएसडीसी ने मुख्यत: निजी व्यावसायिक प्रशिक्षणकर्ताओं से संबंध जोड़े थे क्योंकि उस समय निजी औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों-आईटीआई की संख्या बहुत कम थी। लेकिन एनएसडीसी के 3-4 महीने के संक्षिप्त कोर्स आईटीआई के 1-2 साल के कोर्स की तुलना में एक बड़ी चुनौती हैं जिससे निपटा जाना चाहिए।

सरकारी आंकड़ों के अनुसार, 2016-17 में कार्यक्रम फंड का सही प्रयोग नहीं हुआ और आबंटित धन के केवल 56 प्रतिशत का प्रयोग हुआ। हालांकि, इस आंकड़े में 2020-21 में सुधार हुआ और यह बढ़ कर 98 प्रतिशत हो गया, पर 2021-22 में यह गिर कर 72 प्रतिशत रह गया। लोकसभा स्थाई समिति के अनुसार कोविड-19 के कारण प्रशिक्षण व प्लेसमेंट आपरेशन को स्थगित रखना पड़ा जिससे भर्ती तथा प्रमाणन में काफी कमी आई। इसके परिणामस्वरूप पैसे का आबंटन और प्रयोग घटा।

उम्मीद की जाती है कि जनवरी, 2023 से लागू पीएमकेवीवाई 4.0 के अंतर्गत जारी प्रशिक्षण से इसके पूरे होने तक खर्च में बढ़ोत्तरी होगी। 2008 में स्थापित एनएसडीसी साझा प्रशिक्षकों के साथ कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सहयोग करती है। लेकिन उद्योगों की सहभागिता तथा एनएसडीसी व उद्योगों के बीच समुचित संपर्कों का अभाव दूर किया जाना चाहिए। वर्तमान कौशल विकास कार्यक्रम कौशल की वास्तविक मांगों के अनुरूप नहीं हैं जिससे प्रशिक्षण व स्थानीय आर्थिक आवश्यकताओं में असंगति पैदा होती है। इसके कारण प्रदान किए जाने वाले कौशलों तथा बाजार की आवश्यकताओं में अंतर है। इसे स्वीकार नहीं किया जा सकता है। प्रशिक्षण की गुणवत्ता तथा खास कौशल का चयन बाजार मानकों के अनुसार होना चाहिए। दुर्भाग्य से कौशल केन्द्र व्यावहारिक प्रशिक्षण के लिए उपयुक्त तरीके से लैस नहीं हैं जिसके कारण सैद्धान्तिक प्रशिक्षण को बहुत कम प्रायोगिक अवसर मिल पाते हैं। यह अस्वीकार्य है और इस खाई को दूर करने के कदम तत्काल उठाए जाने चाहिए। लोकसभा की स्थाई समिति ने इस संबंध-विच्छेद को रेखांकित करते हुए सुझाव दिया है कि आवश्यकताओं को बेहतर ढंग से समझने के लिए उद्योग प्रतिनिधियों का सर्वेक्षण किया जाना चाहिए। समय आ गया है कि कौशल विकास कार्यक्रमों को उद्योगों की आवश्यकताओं से जोड़ना सुनिश्चित किया जाए तथा दिए जाने वाले कौशल व बाजार आवश्यकताओं के बीच की खाई पाटी जाए।

इंडियन इंस्टीट्यूट आफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन द्वारा 2016 व 2021 के बीच कराए एक अध्ययन से स्पष्ट होता है कि पीएमकेवीवाई में पंजीकृत 20 प्रतिशत उम्मीदवारो ंने बची में ही इसे छोड़ दिया। इसके कारण चिकित्सकीय मुद्दे, परिवार की जिम्मेदारियां, सामाजिक चुनौतियां, आजीविका की बढ़ती मांग, रोजगार के सीमित अवसर तथा कौशल में ठहराव हैं। महिला उम्मीदवारों का ड्रापआउट गर्भावस्था या विवाह के कारण भी था। स्थाई समिति ने सुझाव दिया कि मंत्रालय को उम्मीदवारों के ड्रापआउट के कारणों को तत्काल संबोधित करना चाहिए जिनमें प्रशिक्षण केन्द्रों की दूरी तथा रोजगार तक पहुंच शामिल हैं। महिला ड्रापआउट के लिए समिति का सुझाव था कि मंत्रालय को आशा व आंगनबाड़ी केन्द्रों से संपर्क कर कौशल के लाभों के बारे में जागरूकता पैदा करनी चाहिए तथा महिलाओं को प्रसव के बाद यथाशीघ्र इनमें शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। भारत के सभी जिलों में 818 प्रधानमंत्री कौशल केन्द्रों-पीएमकेकेएस में से केवल अब तक 722 स्थापित हुए हैं। यह स्थिति अस्वीकार्य है। बाकी केन्द्रों में से 58 पीएमकेकेएस को निजी वेंडरों द्वारा आपरेशनल कठिनाइयों के कारण सरकार को वापस कर दिया गया। इस मुद्दे पर सरकार को तत्काल ध्यान देना चाहिए। सक्षम प्रशिक्षकों की कमी से भी अनेक केन्द्र आपरेशनल नहीं हो पाए हैं। समस्या समाधान के लिए सरकार को पीएमकेवीवाई 4.0 के अंतर्गत राष्ट्रीय आंकलनकर्ताओं व प्रशिक्षकों का एक पूल बनाना चाहिए। सरकार को यह सुनिश्चित करने के आवश्यक कदम उठाने चाहिए कि पीएमकेवीवाई कार्यक्रम एक कुशल कार्यबल गठित करने तथा भारत में बेरोजगारी घटाने में सफल हो।

विभिन्न आर्थिक व रोजगार इतिहास के चलते राज्यों की भिन्नतायें सीमित राज्य सहभागिता का कारण हैं। कृषि कार्यबल पर निर्भरता के कारण कुछ राज्य महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना पर ज्यादा निर्भर रहते हैं, वहीं महाराष्ट्र या तमिलनाडु जैसे राज्यों में रोजगार के ज्यादा अवसर हैं। इसलिए स्थानीय, मांग-आधारित दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है ताकि रोजगार योजनाओं का विस्तार महानगरों से दूसरे और तीसरे दर्जे के शहरों तक किया जा सके। इससे खास क्षेत्रीय चुनौतियों से निपटने में आसानी होगी। 2016-20 में पीएमकेवीवाई ने राज्य सहभागिता शुरू की थी ताकि प्रशिक्षण को स्थानीय आवश्यकताओं और महत्वाकांक्षाओं के अनुरूप ढाला जा सके। लेकिन इस माडल में अनेक समस्यायें सामने आईं। आनलाइन प्रबंधन आवश्यक होने के कारण केवल 15 राज्य व संघशासित क्षेत्र ही केन्द्र सरकार से समन्वय बना सके। इस व्यवस्था का सभी राज्यों तक विस्तार करने की आवश्यकता है ताकि कार्यक्रम सुगमता से चल सके। कार्यक्रम की प्रभावशीलता बढ़ाने के लिए पीएमकेवीवाई को उद्योगों से जोड़ा जाना चाहिए। इससे कौशल प्रशिक्षित उम्मीदवारों को रोजगार मिलना सुनिश्चित होगा। समय आ गया है कि कार्यक्रम के समक्ष उपस्थित चुनौतियों से निपटने के लिए साहसी कदम उठाए जांए ताकि इसकी लक्ष्य प्राप्ति सुनिश्चित हो सके।

भारत-आस्ट्रेलिया संबंधों का स्वरूप

एक सप्ताह बाद संकट से निपटने में अपनी चतुराई के कारण अर्नोल्ड डिक्स भारत में एक प्रसिद्ध व्यक्ति बन गए हैं।

कुमारदीप बनर्जी
(लेखक, नीति विश्लेषक हैं)

इस सप्ताह एक चमत्कार हुआ, जब एक जीव की तरह काम करने वाले लगभग 1000 लोगों के संयुक्त प्रयास और लाखों लोगों की प्रार्थनाओं ने अठारह दिनों में 41 फंसे हुए श्रमिकों को बचाने के लिए एक पहाड़ को गिराने में कामयाबी हासिल की। जबकि बहुत कुछ लिखा गया था और घंटों की सामग्री बनाई गई थी, मौत को मात देने वाली, मानव बनाम/प्रकृति के साथ करतब को लिपिबद्ध करते हुए, ऐसे नायकों में से एक था जो एक अकेले प्रकाशस्तंभ की तरह खड़ा था, जो मुश्किल भू-भाग में बड़े जहाजों के लिए रास्ता बता रहा था। निकासी प्रक्रिया में सहायता के लिए ऑस्ट्रेलिया के एक अंतरराष्ट्रीय सुरंग विशेषज्ञ अर्नोल्ड डिक्स को पहले 17-दिवसीय ऑपरेशन में शामिल किया गया था। यह विशेषज्ञ, आवश्यक पेशेवर सहायता प्रदान करने के अलावा, शायद बचाव अभियान का सबसे उल्लेखनीय चेहरा था, स्थानीय देवता के मंदिर में प्रार्थना करता था, मिशन की सफलता के बारे में मीडिया के साथ अपने साक्षात्कारों में आत्मविश्वास से भरा था और आशा लेकर आया था लाखों लोगों ने फंसे हुए खनिकों के लिए प्रार्थना की। एक सप्ताह पहले, अधिकांश भारतीयों या कम से कम क्रिकेट प्रशंसकों ने आस्ट्रेलियाई लोगों को लताड़ने के लिए पलक नहीं झपकाई होगी, क्योंकि उन्होंने भारत को विश्व कप की ओर अग्रसर होने के सपने में हरा दिया था। एक सप्ताह बाद संकट से निपटने में अपनी चतुराई के कारण अर्नोल्ड डिक्स भारत में एक प्रसिद्ध व्यक्ति बन गए हैं।

संकेत लेते हुए, दोनों देशों के शीर्ष नेता भी द्विपक्षीय और बहुपक्षीय मंचों पर अधिक सहयोग के लिए 2+2 वार्ता में अपनी भू-राजनीतिक रणनीति को अंतिम रूप देने में व्यस्त थे। वार्ता के बाद जारी

संयुक्त बयान में उल्लेख किया गया कि दोनों देशों के बीच व्यापक रणनीतिक वार्ता यह सुनिश्चित करने के लिए थी कि दोनों देश प्रमुख हिंद महासागर तटरेखाओं को साझा करें, और एशिया और प्रशांत महासागर क्षेत्र के देशों के साथ सहयोग का सकारात्मक एजेंडा साझा करें, उनके सहयोग से काम किया जा सके। एक खुले, स्थिर और समृद्ध हिंद-प्रशांत को सुदृढ़ करें। जैसा कि भारत-ऑस्ट्रेलिया सीएसपी लोकतंत्र और बहुलवाद, कानून के शासन और एक बहुआयामी द्विपक्षीय एजेंडे के प्रति साझा प्रतिबद्धता के साथ द्विपक्षीय सहयोग को गहरा करना जारी रखता है, मंत्रियों ने दोहराया कि लैंगिक समानता मौलिक महत्व का है और सभी महिलाओं और लड़कियों के सशक्तिकरण में निवेश है। सतत विकास के लिए 2030 एजेंडा के पूर्ण कार्यान्वयन के लिए महत्वपूर्ण है।

मंत्रियों ने हिंद-प्रशांत में संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता, लोकतांत्रिक मूल्यों, कानून के शासन, नेविगेशन और उड़ान की स्वतंत्रता और विवादों के शांतिपूर्ण समाधान के लिए अपने समर्थन की पुष्टि की। मंत्रियों ने सभी समुद्रों और महासागरों में अंतरराष्ट्रीय कानून, विशेष रूप से समुद्र के कानून पर संयुक्त राष्ट्र कन्वेंशन (यूएनसीएलओएस) के अनुरूप अधिकारों और स्वतंत्रता का प्रयोग करने में सक्षम होने के महत्व को रेखांकित किया, जिसमें नेविगेशन और ओवरफ्लाइट की स्वतंत्रता भी शामिल है, ताकि चुनौतियों का समाधान किया जा सके। समुद्री नियम-आधारित व्यवस्था, जिसमें पूर्व और दक्षिण चीन सागर भी शामिल हैं।

उन्होंने विवादों को बिना धमकी या बल प्रयोग या यथास्थिति को एकतरफा बदलने के किसी भी प्रयास के बिना अंतरराष्ट्रीय कानून द्वारा शांतिपूर्वक हल किए जाने के महत्व को रेखांकित किया, और देशों को उन गतिविधियों के संचालन में आत्म-संयम बरतना चाहिए जो शांति को प्रभावित करने वाले विवादों को जटिल या बढ़ा सकते हैं। स्थिरता. उन्होंने विवादित सुविधाओं के सैन्यीकरण, तट रक्षक और समुद्री मिलिशिया जहाजों के खतरनाक उपयोग और अन्य देशों की अपतटीय शोषण गतिविधियों को बाधित करने के प्रयासों के बारे में गंभीर चिंता व्यक्त की।

यह सब भारत के करीबी सहयोगी श्रीलंका द्वारा रणनीतिक हंबनटोटा बंदरगाह शहर में लगभग 4.5 बिलियन डॉलर के चीनी निवेश की अनुमति देने की पृष्ठभूमि में हो रहा था। हंबनटोटा वस्तुत: भारत के पिछवाड़े में है और भारतीय महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे पर चीन को रणनीतिक पहुंच प्रदान करता है। चीनी शिपिंग कंपनी के पास पहले से ही हंबनटोटा बंदरगाह का स्वामित्व है। संयुक्त वक्तव्य में भारत और ऑस्ट्रेलिया द्वारा मजबूत प्रतिबद्धता का उल्लेख क्षेत्रीय मुद्दों को संयुक्त रूप से संबोधित करने की प्रतिबद्धता का एक प्रदर्शन था, जिसमें चीनी शार्क अपने महासागरों में छिपी हुई थीं। शायद अर्नोल्ड भारत-ऑस्ट्रेलियाई संबंधों से जो अभी तक सामने आना बाकी है उसका एक बड़ा प्रतीक था।

आप की बात

रूस में तानाशाही

तानाशाह अपने नागरिकों के सारे अधिकारों को खत्म कर आलोचकों एवं विरोधियों को मौत के घाट उतार देते हैं या उन्हें जेल में डाल देते हैं। इनसे एक कदम आगे बढ़ कर रूस विदेशी आगुन्तकों की भी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर अंकुश लगाने के लिए एक बिल जल्द ही रुसी संसद में पेश करने जा रहा है। यह कानून सभी विदेशियों को एक प्रतिज्ञा पर हस्ताक्षर करने के लिए बाध्य करेगा। इससे तय होगा कि वे रूस में रहते हुए क्या कह सकते हैं और क्या कर सकते हैं। इसे वफादारी समझौते का नाम दिया गया है। रूसी अधिकारियों की गतिविधियों में हस्तक्षेप करने तथा रूस की विदेश व घरेलू नीति, और सरकारी अधिकारियों को किसी भी रूप में बदनाम करने को हर दंडनीय अपराध बना दिया जायेगा। मतलब तानाशाही की आग से अब केवल रुसी ही नहीं बल्कि विदेशी नागरिक भी जलेंगे। ऐसा लगता है कि रूस में पुतिन की तानाशाही अब चीन व उत्तर कोरिया तथा अन्य देशों की तानाशाही को भी पीछे छोड़ देगी। यह स्थिति सारी दुनिया के देशों तथा लोकतंत्र को पसंद करने वाले नागरिकों के लिए चिन्ता का विषय है और दुनिया में वर्चस्व स्थापित करने की इन तानाशाहों की इच्छा विश्व शांति तथा संपूर्ण धरती के अस्तित्व को संकट में डाल सकती है।

- **जंग बहादुर सिंह,** जमशेदपुर

भारत-विरोधियों को संरक्षण

अमेरिका की अदालत में अमेरिकी अधिकारियों द्वारा दायर मुकदमे में कहा गया है कि किसी भारतीय अधिकारी के कहने पर उसके नागरिक की हत्या करने की साजिश रची है। यह कदम बिना किसी सबूत के उठाया जाना निंदनीय है। यह भारत पर दबाव बनाने के लिए भारत-विरोधी तत्वों को संरक्षण देने की चाल है। भारत ने पहले ही इस मामले पर उच्च स्तरीय जांच समिति गठित कर दी है। यह खालिस्तानी कमांडर पन्नू के मामले को लेकर की गई कार्यवाही है जो भारत सरकार द्वारा घोषित आतंकवादी है। ऐसे में उसे गिरफ्तार कर भारत प्रत्यर्पण किया जाना चाहिए। इसके बजाय अमेरिकी अधिकारी उसे बचाने और विश्व में भारत की साख कम करने का घिनौना काम कर रहे हैं। स्पष्ट है कि भारत-अमेरिकी संबंधों और वर्तमान अंतरराष्ट्रीय हालातो में अमेरिका को भारत की ज्यादा जरूरत है। भारत द्वारा घोषित आतंकवादियों को विश्व का कोई भी देश यदि शरण और शह देता है तो भारत को कड़ा रुख जाहिर करना चाहिए। खुशी की बात है कि वर्तमान मोदी सरकार दुनिया के किसी भी देश के सामने झुकने को तैयार नहीं है और उसके लिए राष्ट्रहित ही सर्वोपरि है।

- **सुभाष बुड़ावन वाला,** रतलाम

पति-पत्नी संबंध

इलाहाबाद हाईकोर्ट द्वारा की गई टिप्पणी बेहद महत्वपूर्ण और समाज को आईना दिखाने वाली है कि पति-पत्नी के छोटे-मोटे झगड़े को क्रूरता नहीं माना जा सकता। सर्वविदित है कि तेजी से बदलते पारिवारिक व सामाजिक परिवेश में पति-पत्नी के बीच मामूली झगड़े भी न केवल पारिवारिक कलह बल्कि तलाक का कारण बनते जा रहे हैं। हाईकोर्ट की यह टिप्पणी पति-पत्नी विवादों को समझने-समझाने में महत्त्व पूर्ण होगी। परिवार, समाज और कानून के रखवालों को यह समझना जरूरी है कि पारिवारिक जिम्मेदारी निभाते हुए पति-पत्नी में तनाव एक सामान्य बात है। परिवारों को अधीरता और संवेदनहीनता से बचना होगा। लेकिन इसके साथ ही महिला-अधिकारों के साथ किसी प्रकार का समझौता नहीं होना चाहिए। आज भी महिलाओं को अनेक लोग दोयम दर्जे का समझते हैं और उनके साथ अमानवीय व्यवहार करते हैं। पति-पत्नी संबंधों में समता, समानता तथा परस्पर सम्मान की भावना को सर्वोपरि रखते हुए महिलाओं को अधिकाधिक संभव स्पेस दिया जाना वर्तमान समय की सबसे बड़ी जरूरत है।

- **वीरेंद्र कुमार जाटव,** दिल्ली

हादसे से सबक

उत्तराखंड की सुरंग में 17 दिनों से फंसे मजदूरों को अंतत: तथा सकुशल बाहर निकाल लिया गया है। इसके लिए राज्य व केंद्र सरकार की कई एजेंसियों ने सभी संभव उपाय किए। इस सुरंग हादसे ने कई तरह की अनियमितताओं को उजागर किया है। ठेकेदारों व निजी कंपनियों ने इतने बड़े निर्माण कार्य में सुरक्षा मापदण्डों को नजरंदाज किया जिससे यह भयानक हादसा हुआ। इस हादसे से सबक लेकर सभी प्रकार की परियोजनाओं में श्रमिकों की सुरक्षा को सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान दिया जाना चाहिए। इसके लिए मानक निर्धारित कर उनका पालन न करने वालों को कठोर दंड दिया जाना चाहिए। देश की सुरक्षा व समय की मांग को देखते हुए पहाड़ों पर विकास योजनाओं को निरंतर जारी रखने के साथ पर्यावरणीय संवेदनशीलता तथा पहाड़ों की मजबूती पर भी गौर करना होगा। सरकार ने उत्तराखंड में बन रही सभी सुरंगों का सुरक्षा आडिट करने का निर्णय किया है। यह स्वागत योग्य कदम है। इसके साथ ही इस हादसे के दोषियों को कठोर दंड दिया जाना जरूरी है।

- **विभूति बुपक्या,** खाचरोद

पाठक अपनी प्रतिक्रिया ई-मेल से
responsemail.hindipioneer@gmail.com
पर भी भेज सकते है।

नौजवानों को अब नहीं जाना होगा बाहर, दुनिया नौकरी ढूंढ़ने आएगी यूपी

अनुपूरक बजट पर चर्चा के दौरान सीएम ने कहा, ग्लोबल इन्वेटर्स समिट के माध्यम से प्रदेश को 40 लाख करोड़ रुपए का निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुआ

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने विधानसभा के शीतकालीन सत्र में अनुपूरक बजट पर बोलते हुए कहा कि ग्लोबल इन्वेटर्स समिट के माध्यम से प्रदेश को 40 लाख करोड़ रुपए का निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुआ है। उन्होंने कहा कि इन्वेस्टर्स समिट हर जगह होते थेए मगर यूपी ने इस दिशा में एक बड़ी लकीर खींची है। आज देश दुनिया के निवेशक यूपी में आना चाहते हैं। इन्वेस्टर्स समिट से मिले निवेश से 1 करोड़ 10 लाख नौजवानों को सीधे सीधे यूपी में नौकरी मिलेगी। यूपी के नौजवानों को नौकरी ढूंढने के लिए कहीं जाना नहीं होगाए बल्कि दुनिया यूपी नौकरी ढूंढने आएगी।

सीएम योगी ने कहा कि यूपी की 25 करोड़ की जनता की आकांक्षा के अनुरूप ईज ऑफ लिविंग के लक्ष्य को प्राप्त करना है। इसके लिए आवश्यक है कि प्रदेश के हर नौजवान को कार्य, हर किसान के खेत में पानी, उसकी फसल का अच्छा दाम मिले। किसान केवल उत्पादन तक ही सीमित ना रहे बल्कि उसे मार्केट लिंक भी मिले। इसके लिए हमें इंडस्ट्री 4.0 की ओर बढ़ना होगा। उन्होंने कहा कि यूपी की पहचान एक्सप्रेस वे प्रदेश के रूप में बन चुकी है। पूर्वांचल, बुंदेलखंड एक्सप्रेस वे और पश्चिम को पूरब से जोड़ने के लिए गंगा एक्सप्रेस वे प्रयागराज कुंभ से पहले हम तैयार करने में जुटे हैं। सीएम योगी ने कहा कि बलिया लिंक, चित्रकूट लिंक, लखनऊ कानपुर ग्रीन फील्ड एक्सप्रेस वे, वाराणसी में 100 एकड़ में देश का पहला फ्रेट विलेज, प्रदेश में आज यमुना एक्सप्रेस वे में फिल्म सिटी, ट्वाय सिटी, हैंडीक्राफ्ट पार्क, अपैरल पार्क, लॉजिस्टिक हब विकसित हो रहे हैं। लखनऊ और हरदोई के बीच 1000 एकड़ क्षेत्र में पीएम मित्र टेक्स्टाइल पार्क टेक्सटाइल का हब बनेगा। ये यूपी के युवाओं के लिए रोजगार के नये अवसर के द्वार खोलेगा। इसके साथ ही सरकार ने मूल बजट में मध्यांचल और बुंदेलखंड में डेवलपमेंट का बहुत बड़ा क्षेत्र स्थापित करने का प्रावधान किया था, जिस पर कार्य हो रहा है।

सीएम योगी ने कहा कि नोएडा-ग्रेटर नोएडा 46 साल में 33 हजार लैंड में स्थापित हो पाया, मगर बीडा झांसी बुंदेलखंड औद्योगिक क्षेत्र के निर्माण की कार्यवाही को सरकार ने आगे बढ़ाया है। ये पहले ही चरण में 35 हजार एकड़ में बसने जा रहा है। यहां हम एयरपोर्ट भी देने जा रहा है। ये यूपी के औद्योगिकीकरण की नई पहचान बनने जा रहा है। अभी ग्रेटर नोएडा में इंटरनेशनल ट्रेड शो का आयोजन हुआ। प्रदेश में एमएसएमई पॉलिसी आ चुकी है। विश्वकर्मा श्रम सम्मान जैसी योजनाओं को राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान मिल रहा है। यूपी पहला राज्य है जिसने अपने 96 लाख एमएसएमई यूनिट से जुड़े लोगों को दुर्घटना बीमा उपलब्ध कराया है।

समाजवादियों के कारनामों को कभी भूल नहीं सकती जनता

लखनऊ। नेता सदन सीएम योगी ने विपक्ष पर करारा हमला बोलते हुए कहा कि नेता प्रतिपक्ष हर मुद्दे को समाजवादियों का किया बताते हैं जबकि जनता समाजवादियों के कारनामे भूली नहीं है। हर कोई जानता है कि कैसे-कैसे खेल खेले जाते थे। प्रदेश के अंदर सत्ता प्रायोजित डकैती का सबसे बड़ा उदाहरण जेपीएनआईसी है। इसका मूल डीपीआर 265 करोड़ आंका गया था लेकिन इसमें 821 करोड़ खर्च हुए। इसके बाद भी खेल खत्म नहीं हुआ। यह तो केवल एक उदाहरण है। नेता सदन सीएम योगी ने कहा कि नेता प्रतिपक्ष द्वारा पेश किए गए आंकड़े वास्तविक नहीं थे। उन्होंने तंज कसते हुए कहा कि शायद उनका होमवर्क अच्छा नहीं हो पाया। वैसे भी, उनके पास समय नहीं है लेकिन फिर भी उन्होंने प्रयास तो किया। नेता सदन सीएम योगी ने बैंकिंग सेक्टर के कार्यों का विवरण प्रस्तुत करते हुए कहा कि बैंकों के माध्यम से 2 लाख 42 हजार करोड़ का ऋण वितरित किया गया है। वर्ष 2022-23 में पहले की तुलना में आज यूपी में हर पांच किमी. के दायरे में बैंक की शाखा है। बीसी सखी के माध्यम से बैंकिंग सेवाओं को हर ग्राम पंचायत तक पहुंचाने का काम किया जा रहा है। वहीं, फंड अर्जित करने में पूरे देश में अकेले यूपी की 16.2 फीसदी हिस्सेदारी रहती है, जो शीर्ष स्थान है। यह डाटा हमारी सरकार या किसी मैगजीन का नहीं बल्कि आरबीआई का है। जून 2014 में एक लाख 65 हजार आयकर रिटर्न भरे जाते थे जबकि आज 11 लाख 92 हजार आयकर रिटर्न भरे जाते हैं। ये भी डाटा आयकर विभाग का है। आज सरकार की ओर से डेढ़ लाख करोड़ का जीएसटी संग्रह किया जा रहा है। वहीं यूपी जीएसटी रजिस्ट्रेशन में भी शीर्ष स्थान पर है। इसके साथ ही मुख्यमंत्री व्यापारी दुर्घटना बीमा के तहत 1 लाख 69 हजार व्यापारियों को लाभान्वित किया जा चुका है। आज यूपी शीरा उत्पादन, एथेनॉल ब्लेंडिंग के मामले में देश का नंबर एक राज्य है। इतना ही नहीं, आवासीय और कृषि संपत्ति ट्रांसफर में पहले लंबी प्रक्रिया होती थी, वहीं आज मात्र पांच हजार रुपए शुल्क के साथ ये कार्य हो रहा है। योगी ने सपा सरकार के दौरान भ्रष्टाचारों की पोल खोलते हुए कहा कि गोमती रिवर फ्रंट की बात करें तो पहले इसका डीपीआर 167 करोड़ का बना। इसके बाद डीपीआर 346 करोड़ का बनाया गया। फिर इसे 2015 में बढ़ाकर 656 करोड़ किया गया। इतना ही नहीं, जून 2016 में 1513 करोड़ का रिवाइज्ड एस्टिमेट कैबिनेट से पास किया लेकिन 1437 करोड़ खर्च करने के बाद भी काम अधूरा पड़ा रहा। इसमें सीबीआई और ईडी की ओर से जांच जारी है।

विधानमंडल का शीतकालीन सत्र अनिश्चितकाल के लिए स्थगित

- 28760.67 करोड़ रुपए का अनुपूरक बजट पारित
- चार उपवेशनों में स्थगन रहित 17 घंटे से अधिक चली विधानसभा सदन की कार्यवाही

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

उत्तर प्रदेश की 18वीं विधान सभा के वर्ष-2023 का तृतीय सत्र (शीतकालीन सत्र) के अंतिम दिन शुक्रवार को वित्तीय वर्ष 2023-24 के लिए 28760.67 करोड़ रुपए का अनुपूरक बजट दोनों सदनों (विधानसभा, विधान परिषद) से पारित हो गया। अनुपूरक बजट के पारित होने के साथ विधानमंडल के दोनों सदनों को अनिश्चितकाल के लिए स्थगित कर दिया गया।

इसके पहले वित्त मंत्री सुरेश खन्न ने वित्तीय वर्ष 2023-24 के लिए अनुपूरक बजट पारित करने का प्रस्ताव सदन के समक्ष रखा। अध्यक्ष सतीश महाना ने विधेयक के पक्ष में बहुमत होने पर अनुपूरक बजट पारित करने की घोषणा की। इस सत्र में संपन्न हुए चार उपवेशनों में विधानसभा सदन की कार्यवाही कुल स्थगन रहित 17 घंटे 03 मिनट चली। कार्यवाही के दौरान कुल प्राप्त प्रश्न-2833, अल्पसूचित प्रश्न 1, स्वीकृत तारांकित प्रश्न 956, अतारांकित प्रश्न 1455, इनमें कुल 497 प्रश्न उत्तरित हुए। 2076 प्रश्न (73.27 प्रतिशत) आनलाइन प्राप्त हुए। विधानसभा का शीतकालीन सत्र बिना किसी स्थगन के अनिश्चितकाल के लिए स्थगित हो गया। 28 नवम्बर से प्रारम्भ हुए 18वीं विधान सभा के वर्ष-2023 के तृतीय सत्र में नियम-300 के अंतर्गत कुल प्राप्त सूचनाओं की संख्या 17 स्वीकृत सूचनाएं, सुनी गयीं सूचनाएं 03, अस्वीकृत 17 रही। नियम-301 के तहत कुल 256 सूचनाएं प्राप्त हुई। जिनमें 196 स्वीकृत एवं 60 अस्वीकृत हुई। नियम-311 के अंतर्गत कुल प्राप्त सूचनाओं की संख्या 1 अस्वीकृत 1, नियम-56 के अन्तर्गत कुल 43 सूचनाएं प्राप्त हुईं, 6 ग्राह्यता हेतु सुनी गयी तथा 2 सूचनाओं पर ध्यानाकर्षण किया गया। नियम-103 के अंतर्गत कुल प्राप्त 9 प्रस्तावों में ग्राह्य प्रस्ताव 8 व आग्राह्य 1 रहे। सदन में प्रस्तुत कुल प्रस्तावों की संख्या 5, सदन में प्रस्तुतीकरण हेतु लंबित प्रस्तावों की संख्या 3, विगत सत्रों के चर्चा धीन प्रस्तावों की संख्या 25 रही। सत्र के दौरान सरकार से वक्तव्य मांगने वाले नियम-51 के अन्तर्गत 309 सूचनाएं प्राप्त हुई। इनमें वक्तव्य के लिए 5, केवल वक्तव्य के लिए 2 एवं ध्यानाकर्षण के लिए 199 सूचनाएं तथा 103 सूचनाएं अस्वीकार की गयी। इसी प्रकार इस सत्र में कुल-227 याचिकाएं प्राप्त की गयी। जिसमें 218 ग्राह्यता के उपरान्त स्वीकार की गयी। नियम के अन्तर्गत न होने के कारण अग्राह्य 8, व्यपगत एवं विलम्ब से प्राप्त याचिकाओं की संख्या 1 तथा प्रस्तुत प्रतिवेदनों की संख्या 3 रही। कुल 9 विधेयक विचारण एवं पारण के लिए प्रस्तुत किए गए। विधानसभा अध्यक्ष सतीश महाना ने प्रदेश के मुख्यमंत्री व नेता सदन योगी आदित्यनाथ सहित नेता प्रतिपक्ष अखिलेश यादव (समाजवादी पार्टी) सहित सभी दलीय नेताओं के सहयोग की प्रशंसा की। इस उपवेशन में हुई कार्यवाही के दौरान संसदीय कार्य व वित्त मंत्री सुरेश खन्ना ने विपक्ष की तरफ से उठाए गए नियम 51, 56, 301 एवं अन्य सूचनाओं, बिलों के पारण और बहसों पर समाधान परक उत्तर देकर सदन में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने मंत्रिमण्डल के सदस्यों को निरंतर सदन में उपस्थित रहकर उत्तर देने के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया।

हर प्रदेशवासी को सुरक्षा की गारंटी दे रही जीरो टॉलरेंस नीतिः सीएम

- प्रदेश में डकैती, लूट, हत्या, बलवा और फिरौती के मामलों में आई भारी कमी

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

नेता सदन सीएम योगी ने कानून व्यवस्था पर नेता प्रतिपक्ष को घेरते हुए कहा कि वर्ष 2016 के सापेक्ष वर्ष 2022.23 में प्रदेश की कानून व्यवस्था में काफी सुधार हुआ है, जिसे हर व्यक्ति जानता है। एनसीआरबी के डाटा की बात करें तो वर्ष 2017 के बाद प्रदेश में डकैती में 80.31 प्रतिशतए लूट में 61.51 प्रतिशत, हत्या में 32.45 प्रतिशत, बलवा में 51.65 प्रतिशत, फिरौती में 43.18 प्रतिशत और दुष्कर्म के मामलों में 21.75 प्रतिशत की कमी आई है जबकि 2017 से पहले यूपी में क्या मंजर था, सभी जानते हैं। अपराधियों, माफियाओं और दंगाइयों को शासन का संरक्षण प्राप्त था। प्रदेश में चारों ओर अराजकता की स्थिति थी। सीएम योगी ने कहा कि 2017 के बाद जीरो टॉलरेंस नीति की सरकार ने प्रदेश में कानून का राज स्थापित करके सभी को सुरक्षा की गारंटी दी है। एनसीआरबी की रिपोर्ट बताती है कि महिला संबंधित अपराधों में सजा दिलाने में यूपी देश में नंबर एक पर है। प्रदेश में 63 हजार से अधिक अपराधियों के खिलाफ गैंगस्टर एक्ट और 836 के खिलाफ एनएसए की कार्रवाई की गयी जबकि गैंगस्टर की 9163 करोड़ की चल अचल संपत्ति जब्त की गयी। वहीं माफिया द्वारा 2827 करोड़ अर्जित अवैध संपत्ति को कब्जे में लिया गया है। 66 माफिया गैंग के 1044 सदस्यों के विरुद्ध 590 अभियोग पंजीकृत करते हुए 506 की गिरफ्तारी की गई। बाकी यूपी में हर कोई जानता है कि यहां अपराधियों और माफिया के खिलाफ कैसी कार्रवाई की जाती है। वर्ष 2017 के बाद महिला सुरक्षा में प्रभावी ढंग से कार्य हुआ है। प्रत्येक जनपद में महिला थाना के अतिरिक्त एक थाने में महिला थानाध्यक्ष को नियुक्ति दी गई है। महिला संबंधित अपराधों में 4579 अभियुक्तों में से 487 को आजीवन कारावास, 1016 को दस वर्ष कारावास और 3076 को 10 साल से कम का कारावास की सजा हुई है। प्रदेश में समयबद्ध तरीके से कार्रवाई आगे बढ़ाने का परिणाम है कि पॉक्सो अधिनियम के तहत 7276 अपराधियों को सजा हुई है। ई-प्रॉसीक्यूशन में पूरे देश में यूपी नंबर एक पर है। सीएम योगी ने कहा कि प्रदेश में तीन महिला पीएसी बटालियन की कार्रवाई को तेजी से आगे बढ़ाया गया है। प्रदेश में 69 महिला चौकी और परामर्श केंद्रों को थाने का दर्जा देने का कार्य हुआ है। प्रदेश में सबसे बड़ी चुनौती साइबर क्राइम की है। हर जनपद में प्रतिदिन दर्जनों मामले सामने आते हैं। वर्ष 2017 से पहले इसे लेकर सरकार के पास कोई विजन नहीं था। आज हर जनपद में एक-एक साइबर थाना बनाया गया है। प्रदेश के 1531 थानों में साइबर हेल्पडेस्क स्थापित किए गए हैं। साइबर क्राइम मुख्यालयों में एडवांस साइबर फोरेंसिंक लैब, 18 रेंज में बेसिक साइबर फॉरेंसिक लैब और 57 जनपदों में साइबर क्राइम थानों का गठन किया गया है। पहली बार यूपी में फॉरेंसिक साइंस इंस्टीट्यूट की स्थापना की गई। इसी के साथ वर्तमान सत्र में प्रवेश प्रक्रिया को आगे बढ़ाते हुए बीएससीए एमएससीए बीटेक और एलएलएम के इंटीग्रेटेड कोर्स के संचालन की प्रक्रिया को आगे बढ़ाया जा चुका है। सीएम योगी ने सपा सरकार में हुए भर्ती घोटाले पर घेरते हुए कहा कि पारदर्शी तरीके से अकेले यूपी पुलिस में 1 लाख 64 हजार भर्ती हुई है। 2017 से पहले भर्ती में भी घोटाला हुआ करता था। चाचा, भतीजा और भाई सब संलिप्त होकर गरीब, पिछड़े, दलितों के हक पर डकैती डालने का काम करते थे। 2017 से पहले भर्ती प्रक्रिया पूरी तरह से बाधित थी। वहीं हमारी सरकार ने 5381 नये पदों की मंजूरी दी गई। इसमें 86 राजपत्रित और 5295 अराजपत्रित पद हैं। इसके अलावा प्रदेश में 114 नये थाने, 163 नई चौकियां, 6 महिला थाना, 4 आर्थिक अपराध थाने और हर जनपद में साइबर थाने बनाये गये हैं। 40 एंटी ह्यूमन ट्रैफिकिंग यूनिट थानों की गठन की प्रक्रिया को आगे बढ़ाया गया है।

साथ ही अन्य रिफॉर्म, जिसमें ट्रेनिंग और ट्रेनिंग की क्षमता बढ़ाने का कार्य हुआ है। पहले मात्र 6 हजार की क्षमता थी। आज इसे पांच गुना बढ़ाकर 30 हजार की क्षमता तक पहुंचाया गया है। पहले की सरकार की सोच संकीर्ण थी। आज उस संकीर्ण सोच से उभार कर यूपी को नये भारत के नये प्रदेश के रूप में स्थापित करने का कार्य हुआ है।

विधान परिषद में ध्वनिमत से पारित हुए छह विधेयक

लखनऊ। विधान परिषद में शुक्रवार को छह विधेयक ध्वनिमत से पारित हुए। इससे पहले विधानसभा से पारित होने के बाद आए इन सभी महत्वपूर्ण विधेयकों को प्रमुख सचिव विधान परिषद ने सदन के पटल पर रखा। इन विधेयकों में उत्तर प्रदेश की शुक तीर्थ विकास परिषद् विधेयक, 2023, उत्तर प्रदेश श्री देवीपटन धाम तीर्थ विकास परिषद् विधेयक, 2023, उत्तर प्रदेश श्री अयोध्या जी तीर्थ विकास परिषद् विधेयक, 2023, उत्तर प्रदेश निजी विश्वविद्यालय (चतुर्थ संशोधन) विधेयक, 2023, उत्तर प्रदेश राज्य विश्वविद्यालय (संशोधन) विधेयक, 2023 और उत्तर प्रदेश विनियोग (2023-2024 का अनुपूरक) विधेयक, 2023 शामिल हैं। उपरोक्त सभी विधेयक नेता सदन के प्रस्ताव पर विचारोपरान्त ध्वनिमत से पारित हुए। तत्पश्चात् सभापति कुंवर मानवेन्द्र सिंह द्वारा सदन के संचालन में उन्हें सहयोग देने के लिए सभी को धन्यवाद देने के उपरान्त राष्ट्रगान के पश्चात् नेता सदन के प्रस्ताव पर सदन की बैठक 6:37 बजे अनिश्चितकाल के लिए स्थगित कर दी।

सरकार नहीं खर्च कर पा रही पैसा, तो सप्लीमेंट्री बजट क्यों लाया गया

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

उत्तर प्रदेश विधानसभा के शीतकालीन सत्र के अंतिम दिन शुक्रवार को सदन में नेता प्रतिपक्ष अखिलेश यादव ने अनुपूरक बजट को लेकर योगी सरकार पर जमकर निशाना साधा। उन्होंने सरकार को मंहगाई, स्वास्थ्य सेवाओं, गौशालाओं में मर रहे गोवंश, सड़कों के गड्ढों, बिजली समेत अन्य मुद्दों पर भी जमकर घेरा। अखिलेश ने सदन में अनुपूरक बजट पर योगी सरकार से पूछा कि जब पहले का धन ही सरकार खर्च नहीं कर पा रही है तो आखिरकार सप्लीमेंट्री बजट क्यों लाया गया। पहले बजट का लगभग 63 परसेंट पैसा खर्च नहीं हुआ है। सबसे महत्वपूर्ण विभाग पीडब्ल्यूडी है, उसमें अभी भी 65 परसेंट पैसा पड़ा हुआ है जो खर्च नहीं हुआ। उन्होंने कहा कि स्मार्ट सिटी का सपना दिखाया था क्या इस सप्लीमेंट्री बजट में स्मार्ट सिटी का कहीं स्थान है। मुझे तो यह लगता है कि पांच साल पहले का कार्यकाल और लगभग दो साल इस सरकार के पूरे होने जा रहे हैं, यह सरकार खुद महसूस कर गई है कि अब वो स्मार्ट सिटी नहीं बना सकती। नेता प्रतिपक्ष ने कहा कि जब मुख्य बजट से डेवलपमेंट नहीं हुआ तो यह सप्लीमेंट्री बजट से कौन सा डेवलपमेंट हो जाएगा। जब आपके बजट की तुलना होती अन्य प्रदेशों से होती है तो 18वां स्थान है आपका। यह आंकड़े हम विपक्ष के लोगों के नहीं है। इस सरकार ने कोई भी एक जिला अस्पताल नहीं बनाया, जिसमें गरीबों को पूरा इलाज मिल जाए। ना नया बनाया ना पुराने अस्पतालों में सुधार किया। उसका परिणाम यह है कि गरीब को मजबूरी में प्राइवेट अस्पताल में जाना पड़ रहा है। सड़कों में गड्ढे हैं और गड्ढों में सड़क है, सरकार हिस्टोरिकल लूट कर रही है। पीडब्ल्यूडी विभाग में मंत्री के बनने के बाद तुरंत खेल हो गया। सरकार की नजर पड़ गई तो थोड़ा बहुत बचा होगा। सरकार बताए कि आप मेंटेनेंस और गड्ढा मुक्ति के लिए कितना पैसा खर्च कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि जो सरकारी कहती थी कि समाजवादी सरकार में बनाया गया एक्सप्रेसवे घाटे का है। आज नेता सदन बताएं कि उनके पूर्वांचल और बुंदेलखंड एक्सप्रेसवे घाटे का है कि फायदे का है। आज भी इतने वर्षों के बाद अगर सबसे अच्छी राइडिंग क्वालिटी किसी एक्सप्रेसवे की है तो वह समाजवादियों का बनाया गया एक्सप्रेसवे है।

अखिलेश यादव ने व्यंग्य करते हुए कहा कि घोड़ा समझ लेता है घुड़सवार कैसा है। अधिकारी भी समझ गए हैं कि सरकार कैसी है। इसलिए आपके कंट्रोल में नहीं है चीजें। कहां पहुंच गई है महंगाई, आखिरकार इसका मुनाफा कहां जा रहा है, किसकी जेब में जा रहा है। गोवंश भूखे मर रहे हैं क्योंकि गौशालाओं के नाम पर योगी सरकार में सिर्फ भ्रष्टाचार हो रहा है, केवल लूट हो रही है। इसको चलाने वाले लोग भाजपा से जुड़े लोग हैं और अधिकारी मिलकर चारा पानी तक खा पी जा रहे हैं। बाजारों में सांड, सड़कों पर सांड, खेतों में सांड, किसान की कितनी जान जा चुकी है। आज 7 साल पूरे होने वाले है बताइए सरकार को बिजली का कोटा उत्तर प्रदेश में कितना बढ़कर मिलाघ् जो मेट्रो चल रही है सब समाजवादियों की देन है। मुख्यमंत्री जी आप अपने यहां तो मेट्रो बना लो कहीं मेट्रो वाली बात वैसी तो नहीं है 46 में 56 वाली बात जैसी किसानों को समस्या पर अखिलेश ने कहा कि जो यहां (सदन) पर खेती करने वाले लोग हैं। अगर कहीं धान खरीदा गया हो तो बता दो। जहां पर धान खरीद हो रही है वहां पर लगाइए सीसीटीवी, क्यों नहीं लगाते हैं आप। क्यों ट्रांस्पायरेसी नहीं चाहते हैं, क्यों कुछ ही लोगों से पूरा धान खरीदना चाहते हैं, सरकार ने किसानों की एक मंडी बनाई हो तो बता दें। इस सप्लीमेंट्री बजट में किसान के लिए क्या है।

पीएम मोदी, भारत सरकार व रेस्क्यू टीम को सदन की ओर से भेजा जाए धन्यवाद प्रस्ताव

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

विधानसभा के शीतकालीन सत्र में अनुपूरक बजट पर बोलते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ उत्तराखंड में टनल हादसे में फंसे श्रमिकों के लिए प्रदेश सरकार की तरफ से किए गए प्रयासों की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि उत्तर काशी में 41 श्रमिक बंधु टनल दुर्घटना में फंस गए थे। इसमें 8 श्रमिक यूपी के थे। 12 तरीख को घटना हुई थी और 13 तारीख को यूपी शासन की ओर से एक प्रतिनिधि वहां पहुंच गया था। सीएम योगी ने बताया कि उत्तर प्रदेश सरकार का प्रतिनिधि भारत सरकार के अधिकारियों और कंपनी के लोगों के साथ वहीं कैंप करके संवाद स्थापित कर रहा था। टनल में फंसे श्रमिकों का मनोबल ना टूटे, उनकी सामान्य दिनचर्या बाधित ना हो इसके लिए वहां डबल इंजन की सरकार ने लगातार कार्य किया। उन्होंने कहा कि श्रमिकों के लिए सरकार पहले भी संवेदनशील थी आगे भी रहेगी। सीएम योगी ने बताया कि यूपी के श्रमिकों में से 6 श्रावस्ती, 1 लखीमपुर खीरी और 1 मीरजापुर के कुल आठ लोग वापस आए। उन्होंने आसन से निवेदन करते हुए कहा कि अध्यक्ष जी सदन की ओर से प्रधानमंत्री, भारत सरकार और पूरी रेस्क्यू टीम को धन्यवाद प्रस्ताव भेजा जाना चाहिए। जिस तत्परता के साथ रेस्क्यू ऑपरेशन को धैर्य के साथ किया गया यह अपने आप में एक बड़ा उदाहरण है।

योगी बोले, जाति समाजवादी पार्टी के लिए है झुनझुना

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने पिछड़ा, दलित और अल्पसंख्यक (पीडीए) के मुद्दे पर भी सदन में अपनी बात रखी। उन्होंने कहा कि समाजवादी पार्टी के लिए जाति झुनझुना है। सरकार में रहकर नेता प्रतिपक्ष अखिलेश यादव पीडीए भूल गए थे। उन्होंने कहा कि जाति के नाम पर प्रदेश में परिवारवाद की अराजकता पैदा करने वाले इन लोगों के कारनामे किसी से छिपे नहीं है। अटल जी ने कहा था कि आदमी ना ऊंचा होता है ना नीचा होता है ना बड़ा होता है ना छोटा होता है। आदमी सिर्फ आदमी होता है। अगर यह समझ आप में होती तो आप विपक्ष में ना बैठे होते। सीएम योगी ने राजू पाल और अखिलेश निषाद का जिक्र करते हुए विपक्ष से पूछा की क्या ये दोनों पीडीए के पार्ट नहीं थे। उन्होंने कहा कि सामाजिक न्याय के पुरोधाओं के नाम पर बने स्मारकों को तोड़ने की बात सपा सरकार के जमाने में की जाती थी। कांशीराम और बाबा साहब के नाम पर बने संस्थानों के नाम सपा सरकार में बदले गए।

सीएम योगी ने विपक्ष पर हमला करते हुए प्रश्न किया कि जब गरीब के हक पर डकैती पड़ती थी, किसान और बेरोजगार आत्महत्या करता था तब पीडीए कहां था। उन्होंने कहा कि हम 2022 में अपने कार्यों को लेकर जनता के बीच गए। 2024 में जा रहे हैं और 2027 की तैयारी भी कर रहे हैं। सीएम योगी ने कहा कि 2017 से पहले सपा सरकार के दौर में प्रदेश दिशाहीनएअव्यवस्था और अराजकता का शिकार था। प्रदेश के बारे में लोगों की नकारात्मक धारणा थी। 2017 के बाद प्रधानमंत्री के विजन और लीडरशिप का परिणाम है कि प्रदेश वन ट्रिलियन डॉलर बनने की दिशा में बढ़ रहा है। आज यूपी देश में नंबर दो की अर्थव्यवस्था है। शीघ्र इसे नंबर एक पर पहुंचाएंगे। यूपी को लेकर धारणा बदली है। हम नकारात्मक सोच के साथ आगे नहीं बढ़ रहे। हम उन लक्ष्यों को लेकर चल रहे हैं जो प्रदेश के 25 करोड़ लोगों की आकांक्षाओं की पूर्ति कर सके। उन्होंने कहा कि गरीब, किसान, महिला और युवाओं की आकांक्षाओं की पूर्ति हमारे लिए सबसे बड़ी जाति है।

जरूरतमंदों के आवास व इलाज का करें इंतजाम, माफिया पर कसें लगाम

- जनता दर्शन में मुख्यमंत्री ने सुनीं करीब 300 लोगों की समस्याएं

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ/ गोरखपुर

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अधिकारियों को निर्देशित किया है कि हर जरूरतमंद को उसकी आवश्यकता के अनुसार आवास व इलाज की सुविधा उपलब्ध कराई जाए। आपराधिक मामलों में एफ आईआर दर्ज करने में लापरवाही न की जाए और भूमि कब्जाने वाले दबंग, माफिया पर लगाम कसने में तत्परता दिखाई जाए। जन कल्याण के कार्यों को सदैव प्राथमिकता पर रखते हुए अधिकारी हर पीड़ित की समस्या का त्वरित, गुणवत्तापूर्ण और संतुष्टिपरक निस्तारण करना सुनिश्चित करें। सीएम योगी में ये निर्देश शुक्रवार को गोरखनाथ मंदिर में आयोजित जनता दर्शन के दौरान लोगों की समस्याएं सुनते हुए दिए। मंदिर परिसर स्थित महंत दिग्विजयनाथ स्मृति भवन के सामने आयोजित जनता दर्शन में मुख्यमंत्री कुर्सियों पर बैठाए गए लोगों तक खुद पहुंचे। सबकी समस्याओं को सुनते हुए आश्वस्त किया हर समस्या का निस्तारण किया जाएगा। जनता दर्शन में मुख्यमंत्री ने करीब 300 लोगों की समस्याएं सुनीं। इसमें बड़ी संख्या महिलाओं की रही। इस दौरान एक महिला ने आवास की समस्या बताई। इस पर मुख्यमंत्री ने तुरंत अधिकारियों को निर्देशित किया कि महिला को पीएम आवास योजना या सीएम आवास योजना के तहत मकान उपलब्ध कराया जाए। जनता दर्शन में कई महिलाएं अपने परिजनों के इलाज के लिए आर्थिक सहायता की गुहार लेकर आई थीं। मुख्यमंत्री ने उनकी पीड़ा सुनते हुए आश्वस्त किया कि इलाज में धन की कमी नहीं होने दी जाएगी। संबंधित अस्पताल से इस्टीमेट लेकर प्रक्रिया पूरी करते हुए मुख्यमंत्री कार्यालय को उपलब्ध कराया जाए।

बनवारी लाल कंछल समेत कई नेता भाजपा में शामिल

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

भारतीय जनता पार्टी प्रदेश मुख्यालय में प्रदेश अध्यक्ष भूपेन्द्र सिंह चौधरी एवं उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक के समक्ष बहुजन समाज पार्टी के पूर्व सांसद नरेन्द्र कुमार सिंह कुशवाहा (मीरजापुर) समाजवादी पार्टी से पूर्व राज्यसभा सदस्य व पूर्व एमएलसी बनवारी लाल कंछल लखनऊ समाजवादी पार्टी के पूर्व एमएलसी व पूर्व चेयरमैन यूपीसीएलडीएफ कुंवर वीरेन्द्र प्रताप सिंह जौनपुर, राष्ट्रीय लोकदल के प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष सरदार मंजीत सिंह पीलीभीत, युवक कांगेस के पूर्व प्रदेश महामंत्री कुंवर अवधेश प्रताप सिंह सीतापुर, रिटार्यड जज अशोक कुमार सिंह कुशवाहा देवरिया, सेवा निवृत्त न्यायाधीश रमेश चन्द्र दिवाकर बुलन्दशहर, बहुजन समाज पार्टी के पूर्व जिला अध्यक्ष महादीन गौतम लखनऊ, जिला पंचायतराज अधिकारी , उमाशंकर मिश्र (सिद्धार्थनगर) ने बड़ी संख्या में अपने समर्थकों के साथ भाजपा की सदस्यता ग्रहण की। इसके साथ ही राष्ट्रीय लोकदल के अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष आरिफ महमूद तथा आरएलडी के बड़ी संख्या में जिला पंचायत सदस्य, क्षेत्र पंचायत सदस्यए ग्राम प्रधानों तथा पदाधिकारी व कार्यकर्ता भाजपा परिवार में शामिल हुए। इस दौरान प्रदेश उपाध्यक्ष बृज बहादुर, प्रदेश महामंत्री संजय राय, प्रदेश मंत्री शिवभूषण सिंह उपस्थित रहे।

प्रदेश भाजपा अध्यक्ष भूपेन्द्र सिंह चौधरी ने सभी का भाजपा परिवार में स्वागत करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सबका साथ.सबका विकास व सबका विश्वास के साथ काम कर रहे है और उनकी प्राथमिकता में गरीब, महिला, युवा व किसान है।

शिक्षण संस्थानों को हिदायत

● 2 और 3 दिसंबर को विशेष अभियान दिवसः बूथ पर मिलेंगे बीएलओ और पदाभिहित अधिकारी बनाएं वोटर कार्ड

संवाददाता। लखीमपुर खीरी

जिले में संचालित महाविद्यालय, शिक्षण संस्थान, कालेज, स्कूल की स्वीप योजना के तहत शुक्रवार को प्रभारी डीएम/ डीआईओ अनिल कुमार सिंह की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट में जरूरी बैठक की। इसमें प्रभारी, सहायक प्रभारी अधिकारी स्वीप, बीएसए, डिडेकेटेड एईआरओ एवं समस्त प्राचार्य, प्राचार्या, प्रधानाचार्य, प्रधानाचार्या मौजूद रहे। प्रभारी डीएम ने कहा कि भारत निर्वाचन आयोग द्वारा उपलब्ध करायी समय सारिणी के अनुसार आलेख्य प्रकाशन 27 अक्टूबर को किया जा चुका है। जिसके आधार पर विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण 2024 की गतिविधियो से सम्बन्धित समय.सारिणी निर्धारित है। एकीकृत आलेख्य निर्वाचक नामावलियां का आलेख्य प्रकाशन 27 अक्टूबर दावे एवं आपत्तियॉ प्राप्त करने की अवधि 27 अक्टूबर से 09 दिसंबर (शनिवार तक), अवशेष विशेष अभियान तिथियॉ 02 दिसंबर (शनिवार) और 03 दिसंबर (रविवार) दावे एवं आपत्तियों का निस्तारण 26 दिसंबर (मंगलवार) तक, निर्वाचक नामावलियों का अन्तिम प्रकाशन 05 जनवरी (शुक्रवार) को किया जायेगा।

प्रभारी डीएम अनिल कुमार सिंह ने बताया कि विशेष अभियान तिथियां में आपके कंधों पर अहम जिम्मेदारी है। जिसका कुशलतापूर्वक निर्वहन करे। स्वीप योजना के तहत भारत निर्वाचन आयोग द्वारा निर्धारित अवशेष विशेष अभियान दिवस 02 व 03 दिसंबर को सभी मतदेय स्थलों पर आयोजित किया जाना है। भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार समस्त बीएलओ और पदाभिहित अधिकारी प्रात: 10 बजे से 04 बजे तक अपने मतदेय स्थलों पर समस्त फार्मो के साथ उपस्थित रहना सुनिश्चित करेंगे और उक्त विशेष अभियान दिवसों में प्रभारीध्सहायक प्रभारी अधिकारी स्वीप एनएसएस एवं एनसीसी के माध्यम से सम्बन्धित ईआरओध्एईआरओ से समन्वय स्थापित करते हुए कार्यक्रम का आयोजन किया जायेगा।

डीएम ने प्रभारी/सहायक प्रभारी अधिकारी स्वीप को निर्देशित किया कि समस्त शिक्षण संस्थान/ महाविद्यालय/ कालेज/स्कूलों में कक्षा.9.10 एवं कक्षा.11 एवं 12 के छात्र.छात्राओं एवं इसी प्रकार शिक्षण संस्थान महाविद्यालय में विभिन्न कक्षाओं के छात्र.छात्राओं के मध्य विभिन्न प्रतियोगितायें आयोजित करना सुनिश्चित करें, उनमें से प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले छात्र.छात्राओं को संबंधित शिक्षण संस्थान द्वारा सम्मानित किया जाए। शिक्षण संस्थान में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वालों के मध्य विधानसभावार प्रतियोगितायें आयोजित होगी एवं उक्त प्रतियोगिताओं में प्रथमए द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले छात्र.छात्राओं को तहसील द्वारा सम्मानित किया जायेगा।

विस निर्वाचन क्षेत्रवार विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त छात्र.छात्राओं के मध्य जनपद स्तर पर आयोजित करते हुये विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रथमए द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले छात्र.छात्राओं को राष्ट्रीय मतदाता दिवस के दिन सम्मानित किया जायेगा।

प्रभारी डीएम अनिल कुमार सिंह ने सभी उपस्थित प्राचार्य प्राचार्या/ प्रधानाचार्य प्रधानाचार्या को बताया कि पुनरीक्षण के दौरान अपने शिक्षण संस्थान के सभी छात्र.छात्राओं से निर्धारित प्रारूप पर प्रमाण.पत्र 09 दिसंबर तक प्राप्त किया जायेगा। सभी शिक्षण संस्थानध्महाविद्यालयध्कालेज द्वारा प्रमाण.पत्र उपलब्ध कराया जायेगा कि उनके यहॉ कोई भी छात्र.छात्राये एवं उनके परिवार के सदस्य निर्वाचक नामावली में नाम सम्मिलित कराने हेतु अवशेष नहीं है। डिप्टी डीईओ/एडीएम संजय कुमार सिंह ने सभी से अनुरोध किया कि वे भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार स्वीप योजना के अन्तर्गत शिक्षण संस्थानए महाविद्यालय, कालेज में बनाये गये इलेक्टोरल लिटरेसी क्लब के माध्यम विभिन्न कार्यक्रम आयोजित करते हुये छात्र.छात्राओं के मध्य प्रतियोगितायें आयोजित करें और प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले छात्र.छात्राओं को सम्मानित भी किया जाये। इस दौरान स्वीप प्रभारी बृजबूषण चौधरी, बीएसए प्रवीण तिवारी, विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रवार नियुक्त सभी डिडेकेटेड एईआरओए एडीईओ तौसीफ अहमद एवं समस्त प्राचार्यध्प्राचार्या/ प्रधानाचार्य/ प्रधानाचार्या समस्त महाविद्यालय/ शिक्षण संस्थान/कालेज/ स्कूल उपस्थित रहें।

तेज रफ्तार डंपर हुआ अनियंत्रित पिता पुत्र की मौत

संडीला (हरदोई)। अनियंत्रित गति से जा रहा डंपर अचानक पलट गया और इसके नीचे दबकर पिता पुत्र की दर्दनाक मौत हो गयी। प्राप्त जानकारी के अनुसार उन्नाव रोड पर सब्जी बेचने का काम करने वाले रामकिशोर अपने पुत्र बादल के साथ गुरूवार की रात अपनी दुकान बंद करके घर जा रहे थे। जब जब ग्राम मौलवीखेड़ा के पास पहुंचे तो अत्यंत तेज गति से आ रहे डंपर ने दोनों को कुचल दिया तथा कुछ आगे जाकर पलट गया। जिससे पिता पुत्र दोनों की मौत हो गयी। इस घटना की सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और दोनों शवों को कब्जे में लेकर उन्हें पोस्टमॉर्टम के लिए भेजा। सूत्रों का कथन है कि पुलिस ने डंपर चालक को हिरासत में लिया है। हालांकि पुलिस की ओर से इसकी पुष्टि नहीं की गयी है।

उत्तरकाशी टनल हादसे में फंसा खीरी का मजदूर घर लौटा

● डीएमए एसपी की अगुवाई में हुआ स्वागत मंजीत ने सुनाई आपबीती

लखीमपुर खीरी। खीरी जिले के तहसील निघासन के भैरमपुर गांव का रहने वाला मजदूर मंजीत उत्तराखंड की टनल से बाहर निकलने के बाद शुक्रवार को प्रशासनिक अधिकारियों के साथ जनपद खीरी पहुंचा, जहां कलेक्ट्रेट में प्रभारी डीएम/सीडीओ अनिल कुमार सिंह और एसपी गणेश प्रसाद साहा की अगुवाई में स्वागत हुआ।

शुक्रवार को मजदूर मंजीत के खीरी पहुंचने पर जिला प्रशासन के तत्वावधान में कलेक्ट्रेट सभागार में स्वागत समारोह आयोजित हुआ। प्रभारी डीएमध्सीडीओ अनिल कुमार सिंहए एसपी गणेश प्रसाद साहा ने एडीएम संजय कुमार सिंह संग मंजीत और उनके पिता को शॉल उढ़ाकर सम्मानित किया और उन्हें मिठाई और उपहार भी प्रदान किए। इस दौरान मंजीत ने डीएम को 17 दिनों की टनल के अंदर से बाहर आने तक की कहानी सुनाई। कहा कि हमें लगा था कि यही मर जाएंगे। मगर सरकार के प्रयास से बाहर आ गए।

प्रभारी डीएम अनिल कुमार सिंह ने कहा कि पूरा शासन प्रशासन हर मुश्किल समय में आपके लिए खड़ा है और खड़ा रहेगा। इस दौरान डीएम ने मजदूर मंजीत के साहस और धैर्य की सराहना भी की। सीएम के निर्देश पर श्रमिकों की पल.पल जानकारी के लिए प्रदेश सरकार की ओर से एक नोडल अधिकारी नियुक्त किया गया था। साथ ही सभी परिजनों को उनकी स्थिति के विषय में हर दिन अपडेट किया जा रहा था। सीएम स्वयं इसकी मॉनीटरिंग भी कर रहे थे।

एसपी गणेश प्रसाद साहा ने कहा कि सरकार के अथक प्रयासों का ही परिणाम है कि श्रमिक जन सुरक्षित अपने घरों को पहुंच रहे हैं। एसपी ने मजदूर मंजीत के साहस और धैर्य की सराहना भी की। बताते चले कि खीरी के मंजीत उन 41 मजदूरों में से एक हैए जो मंगलवार की रात जिंदगी की जंग जीतकर लौटा है। मंजीत और उसके साथियों के लिए देशभर से दुआएं मांगी जा रही थीं। अब उनके बचने के बाद हर कोई जानना चाहता है कि टनल में वे किस तरह संघर्ष करते रहे। मंजीत एक सांस में पूरी कहानी सुनाते हैं।

मंजीत ने बताया‌ए 17 दिन का समय काफी चुनौतीपूर्ण था। करीब 10 दिन फंसे रहने के बाद बाहर से की जा रही मदद के जरिए हमारे पास तक एक पाइप पहुंचा। इसी के जरिए हमें खाना मिल सका। इससे पहले सूखा चीज ही खाने का मिल रहा था। हम लोगों को परिवार की भी चिंता हुई तो बाहर हमारी मदद में जुटी टीम ने माइक्रोफोन के जरिए परिवार के लोगों से बात कराई। इसके बाद थोड़ा सुकून मिला। समय बिताने के लिए टनल के अंदर की एक.दूसरे से बातचीत करते थे। टनल में ही थोड़ा टहल लेते थे।

सम्मान समारोह के दौरान जिला पंचायत राज अधिकारी सौम्यशील, बीएसए प्रवीण तिवारी, डीएसओ अंजनी कुमार सिंह, जिला समाज कल्याण अधिकारी सुधांशु शेखर, अपर जिला सूचना अधिकारी नरेंद्र कुमार सहित सभी जिला स्तरीय अधिकारी मौजूद रहे।

विशेष सफाई अभियान का अपर नगर आयुक्त ने किया निरीक्षण

शाहजहांपुर। महानगर को साफ एवं स्वच्छ रखने के उद्देष्य से नगर आयुक्त के निर्देषन में नगर निगम टीम द्वारा नगर क्षेत्र के समस्त वार्डो में प्रतिदिन सफाई अभियान का अपर नगर आयुक्त एसके सिंह ने निरीक्षण किया। अपर नगर आयुक्त एसके सिंह ने नगर स्वास्थ्य अधिकारी डॉस मनोज कुमार मिश्रा के साथ नगर क्षेत्र के विभिन्न वार्डो सुभाशनगर, जलालनगर, कटिया टोला, निषात रोड पर स्वच्छता कर्मियो के द्वारा किये जा रहें सफाई के कार्य का निरीक्षण किया। निरीक्षण के समय स्वच्छता कर्मी कार्यरत् पाये गये। अपर नगर आयुक्त द्वारा अपनी उपस्थिति में साफ-सफाई कार्य, कूड़ा उठान का कार्य, नाला-नालियों की सफाई का कार्य कराया गया तथा निर्देषित किया कि महानगर में सफाई व्यवस्था के कार्य को प्राथमिकता के आधार पर करें, जिससे महानगर को साफ एवं स्वच्छ बनाया जा सकें।

इसके अतिरिक्त अपर नगर आयुक्त एस0के0 सिंह द्वारा नगर क्षेत्र के मेजबान होटल के पास स्थित महाराणा प्रताप पार्क का निरीक्षण किया । निरीक्षण के समय पार्क में सफाई व्यवस्था को देखा गया व पार्क में सफाई व्यवस्था को दुरस्त रखने तथा पार्क के उचित रख-रखाव हेतु संबन्धित को आवष्यक दिषा-निर्देष दिये गये। निरीक्षण के समय नगर स्वास्थ्य अधिकारी डॉ0 मनोज कुमार मिश्रा, मुख्य सफाई एवं खाद्य निरीक्षक हरवंष कुमार दीक्षित उपस्थित रहें। नगर आयुक्त संतोश कुमार षर्मा ने द्वितीय पाली में नगर क्षेत्र के अहमदपुर रेती में सफाई व्यवस्था तथा स्वच्छता कर्मियों की उपस्थिति पंजिका का अवलोकन किया गया। मौके पर स्वच्छता कर्मी अपने ड्यूटी स्थल पर कार्यरत् पायें गये तथा सफाई कार्य होता हुआ पाया गया। इस मौके पर नगर स्वास्थ्य अधिकारी द्वारा अपनी देखरेख में साफ-सफाई के कार्य को कराया।

क्विक न्यूज

मार्ग दुर्घटना में घायल बाइक सवार की इलाज दौरान हुई मौत

गुरसहायगंज (कन्नौज)। अनियंत्रित गति से आ रहे अज्ञात वाहन चालक ने बाइक में टक्कर मार दी। जिससे बाइक सवार युवक गंभीर रूप से घायल हो गया। जिसे आनन फानन में इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया। जहां इलाज दौरान युवक ने दम तोड़ दिया। मृतक युवक के साले ने कोतवाली पुलिस को तहरीर देकर कार्रवाई की मांग की है। सदर कोतवाली क्षेत्र के ग्राम मेरापुर निवासी कमलेश कुमार पुत्र स्वर्गीय बांके बिहारी लाल द्वारा कोतवाली में दर्ज कराए गए मुकदमे में कहा गया है कि गुरुवार की शाम ग्राम औराई निवासी उसके बहनोई रवि कुमार त्रिपाठी पुत्र धनीराम बाइक पर सवार होकर गुरसहायगंज की ओर जा रहे थे। जैसे ही नारायण मैरिज होम सराय प्रयाग के पास पहुंचे तभी अनियंत्रित गति से आ रहे अज्ञात वाहन ने बाइक में जोरदार टक्कर मार दी। जिससे उसके बहनोई गंभीर रूप से घायल हो गए। जिन्हें इलाज के लिए अस्पताल भर्ती कराया गया जहां इलाज दौरान उनकी मृत्यु हो गई। घटना के संबंध में कोतवाली पुलिस द्वारा मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी गई है।

रूढ़िवादी मानसिकता पर करारा प्रहार

लखनऊ। कलर्स के हाल ही में लॉन्च हुए शो डोरी ने पितृसत्तात्मक मानदंडों को चुनौती देने वाली गंगा प्रसाद की पालक बेटी डोरी की कहानी प्रदर्शित करके बालिका.परित्याग पर प्रकाश डाला है। वाराणसी में सेट किया गया यह विचारोत्तेजक ड्रामा छह साल की एक दृढ़ लड़की के इर्द.गिर्द घूमता है‌ए जो कैलाशी देवी ठाकुर की रूढ़िवादी मानसिकता के खिलाफ खड़ी होती है, जो वाराणसी में सबसे बड़े हथकरघा साम्राज्य की मालकिन है और ठाकुर घराने पर कड़ा नियंत्रण रखती है। कैलाशी देवी ठाकुर के रूप में सुधा चंद्रन गंगा प्रसाद के रूप में अमर उपाध्यायए और डोरी के रूप में माही भानुशाली अभिनीतए यह कहानी प्रगतिशील और रूढ़िवादी सोच के टकरावों को प्रदर्शित करने के लिए प्यार बटोर रही है। सुधा चंद्रन कहती हैं, मैंने लखनऊ घूमने और अपने विचारोत्तेजक ड्रामाए डोरी का प्रचार करने में बिताए गए अपने समय का भरपूर आनंद लिया, जिसे दर्शकों से जबरदस्त प्यार मिला।

समस्याओं के निस्तारण में शिक्षकों ने किया विरोध प्रदर्शन

संडीला (हरदोई)। शिक्षकों की ऑनलाइन उपस्थिति समेत विभिन्न समस्याओं के निस्तारण में विभागीय लापरवाही ने नाराज शिक्षकों ने धरना प्रदर्शन कर मुख्यमंत्री को संबोधित ज्ञापन सौंपा। बीआरसी पर आयोजित इस एक दिवसीय धरना एवं प्रदर्शन में उत्तर प्रदेश जूनियर हाई स्कूल शिक्षक संघए विशिष्ट बीटीसी वेल्फेयर एसोसिएशन के संयुक्त तत्वाधान में शिक्षकों ने दोपहर 2 बजे के बाद धरना और प्रदर्शन किया। इसके बाद एक 12 सूत्रीय ज्ञापन खण्ड शिक्षाधिकारी को सौंपा गया जिसमें प्रमुख रूप से प्रधानाध्यापक पद पर पदोन्नति देने, पुरानी पेंशन लागू करने, प्रतिकर अवकाश, उपार्जित अवकाश, मध्य दिवस अवकाश व राज्यकर्मियों की भांति कैशलेस चिकित्सा सुविधा, ग्रेच्युइटी, अनुदेशकों और शिक्षामित्रों को सम्मानजनक मानदेय, शिक्षकों को गैर शैक्षणिक कार्यों से पूर्णरूप से मुक्त करने, पुरोन्नत वेतनमान देने ग्रामीण अंचलों में नियुक्त महिला शिक्षकों की सुरक्षा समेत अन्य मांगे शामिल हैं।

पुलिस कर्मियों की 4781 समस्याओं का हुआ निस्तारण

लखीमपुर खीरी। जनपद खीरी में नियुक्त पुलिस कर्मियों की 4781 समस्याओं का निस्तारण सैनिक सेल द्वारा किया गया। पुलिस अधीक्षक गणेश प्रसाद साहा द्वारा जनपद खीरी के विभिन्न थानों व कार्यालय में नियुक्त पुलिस अधिकारियों व कर्मचारियों की समस्याओं का प्रमुखता से निस्तारण करने के लिए पुलिस कार्यालय खीरी में 25/01/2023 को सैनिक सेल का गठन किया गया था। सैनिक सेल के माध्यम से 30/10/2023 से 28/11/2023 तक पुलिस कर्मियों की कुल 689 समस्याएं प्राप्त हुई, 670 समस्याओं 97.24 प्रतिशत का त्वरितगति से समुचित निस्तारण कराया गया, इसी प्रकार 28/11/2023 तक कुल 4,781 समस्याएँ प्राप्त हुईए जिसमें 4,734 समस्याओं (99.02 प्रतिशत) का त्वरितगति से समुचित निस्तारण कराया गया।

एड्स दिवस पर एड्स के प्रति जागरूक रहने की शपथ दिलाई

बरेली। जिला अस्पताल बरेली में सीएमओ विश्राम सिंह की उपस्थिति में एड्स दिवस का समारोह आयोजित किया गया। सीएमएस जिला अस्पताल जिला क्षयध्एड्स नियंत्रण अधिकारी, एआरटी सेंटर के मेडिकल ऑफिसर, जिला अस्पताल के पैथालॉजिस्ट के पी सिंह, यू वी सिंह और जिला क्षय रोग केंद्र से डीपीटीसी आलोक कुमार अन्य एचआईवी संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। सीएमओ ने मरीजों और आम जन को एचआईवी के बारे जागरूक करवाया तथा उससे बचाओ के उपाय बताए और इस संगोष्ठी के उपलक्ष्य में जिला क्षय/एड्स नियंत्रण अधिकारी ने एड्स दिवस की थीम के अनुसार एच आई वी संक्रमितों के साथ किए जाने वाले भेदभाव की समाप्ति, एड्स की समाप्ति तथा महामारियों की समाप्ति करने की तथा अन्य लोगों को एड्स के प्रति जागरूक करने की शपथ दिलाई।

साफ-सफाई रखने व डेंगू से बचने के निर्देश

शाहजहांपुर। पुलिस अधीक्षक ने शुक्रवार को परेड परेड का निरीक्षण जवानों को मानसिक व शारिरिक रूप से स्वस्थ्य रहने हेतु दौड़ लगवायी व पीआरवी 112 वाहनों को चेक किया। पुलिस अधीक्षक अशोक कुमार मीणा, ने शुक्रवार की साप्ताहिक परेड के दौरान पुलिस लाइन स्थित परेड ग्राउण्ड पर परेड की सलामी लेकर परेड का निरीक्षण किया। परेड के निरीक्षण के उपरान्त जवानों को शारिरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ्य रहने के लिए दौड़ लगवायी गयी। परेड में शामिल जवानों में एकरूपता व अनुशासन बनाये रखने के लिए ड्रिल करायी गयी। परेड के दौरान पीआरवी 112 वाहनों को चेक किया गया तथा उपकरणों के रख रखाव हेतु सम्बन्धित को आवश्यक दिशा निर्देश दिये गये। पुलिस अधीक्षक ने शस्त्रों तथा दंगा नियंत्रण उपकरणों की क्रियाशीलता को चेक किया तथा पुलिस लाइन में स्थित आवासीय परिसर, वर्दी स्टोर, बैरक, मेस, आर ओ प्लांट, स्टोर रूम, यातायात कार्यालय सहित विभिन्न शाखाओं का निरीक्षण किया साफ-सफाई रखने व डेंगू से बचने के लिये पुलिस लाइन परिसर में समय-समय पर फॉगिंग कराने, एंटी लार्वा छिड़काव कराने तथा ब्लीचिंग पाउडर का छिड़काव कराने के हेतु सम्बन्धित को निर्देशित किया निरीक्षण के उपरान्त अर्दली रूम में सम्बन्धित कर्मचारीयों का ओआर लिया गया व विभिन्न रजिस्टरों एवं अभिलेखों को चेक कर अद्यतन रखने हेतु संबंधित को आवश्यक दिशा-निर्देश दिये गये।

चलती बस से कंडक्टर और ठेकेदार ने मजदूर को फेंका, मौके पर मौत

बरेली। उत्तर प्रदेश के बरेली में दिल को दहलाने वाली घटना सामने आई है जहां जयपुर में मजदूरी करने जा रहे। म्रतक की पत्नी रीना देवी का आरोप है पति विजय पाल को लघु शंका लगी थी बस रुकवाने के लिए कहा बस नही रोकी ठेकेदार राजेन्द्र, धर्मपाल और कंडक्टर से मजदूर विजय पाल की कहासुनी हो गई तीनो ने विजय पाल के साथ मारपीट कर दी और चलती बस से विजय पाल को धक्का दे दिया।

विजय पाल की बस के पहिए से कुचलकर उसकी मौके पर ही मौत हो गई मजदूर की मौत के बाद बस का स्टाफबस को छोड़कर भाग गया वहीं राहगिरो ने पुलिस को सूचना दी और पुलिस ने बस को कब्जे में ले लिया और शव के लिए पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है और आगे की कार्रवाई शुरू कर दी है। दरअसल पीलीभीत जनपद के जहानाबाद थाना क्षेत्र के रामनगर गांव के रहने वाले विजयपाल अपनी पत्नी रीना देवी और दो बच्चे एक लड़का एक लड़की के साथ दीपावली पर अपने घर आए थे और वह अपने घर से राजस्थान के जयपुर में ईंट के भट्टा पर मजदूरी करने जा रहे थे साथ मे ठेकेदार राजेन्द्र और धर्मपाल जा रहा था कि विजयपाल अपने परिवार के साथ पत्नी रीना देवी और दो बच्चे भतीजे के साथ वह डबल डेकर एक निजी बस से जयपुर के लिए निकले और देर रात बस बरेली आई और विजयपाल को रास्ते में लघु शंका लगी उन्होंने कंडक्टर से बस रोकने को कहा तो उसने बस रोकने से इनकार कर दिया जब विजयपाल ने जिद करने लगे तो कंडक्टर और ठेकेदार राजेन्द्र, धर्मपाल ने बरेली के पीलीभीत बाईपास के थाना क्षेत्र संजय नगर मोड़ पर बस पहुंचती ही उसे धक्का दे दिया आरोप है कि वह बस के खुले हुए गेट फेक दिया और बस के पिछले पहिए से कुचल दिया जिससे कि उनकी कुचलकर मौके पर ही मौत हो गई। विजयपाल को जमीन पर पड़ा खून से लटपट देख उनकी पत्नी के होश उड़ गए और तुरंत ही उन्होंने राहगीर की सहायता से पुलिस को सूचना दी मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम को भेज दिया। और परिवार को थाने ले गए। वहीं मौके से दोनो ठेकेदार कंडक्टर और चालक बस को छोड़कर फरार हो गया पुलिस ने मजदूर के परिवार की तहरीर के आधार पर मुकदमा दर्ज कर दिया है और आगे की जांच शुरू कर दी।

मतदाता जागरूकता अभियान में बढ़चढ़ कर भाग लें छात्र-छात्राएंः तान्या सिंह

छात्र छात्राओं को संबोधित करतीं एसडीएम

संडीला (हरदोई)। किसी देश का लोकतंत्र तभी जीवंत रह सकता है जब मतदान में मतदाताओं की बढ़ चढ़ कर भागीदारी हो। युवा वर्ग को इसमें अपनी भूमिका का अधिक से अधिक निर्वाह करते हुए लोगों को मतदान के प्रति जागरूक करना चाहिए। यह उद्गार एसडीएम तान्या सिंह ने बदरअली इंटर कॉलेज में आयोजित मतदाता जागरूकता अभियान के अंतर्गत छात्र छात्राओं को संबोधित करते हुए व्यक्त किए। एसडीएम ने छात्र छात्राओं को बताया कि वे लोगों को मतदान के प्रति जागरूक करने तथा लोगों को नवीन मतदाता बनने में अपना महत्वपूर्ण योगदान करें। अपने घर परिवार और आसपास के लोगों को आगामी 2 और 3 दिसंबर को होने वाले विशेष बूथ दिवस पर लोगों को मतदाता बनने के लिए आवेदन करते हेतु प्रेरित करें। जो युवा 18 वर्ष की आयु पूरी कर रहे हैंए वे मतदाता बनने के पात्र हैं। इसी अवसर पर खण्ड शिक्षाधिकारी सीमी निगार ने भी छात्र छात्राओं को जागरूक मतदाता बनने के लिए आह्वान किया। एसडीएम ने अर्धवार्षिक परीक्षाओं में उत्कृष्ट अंक प्राप्त करने वाले छात्र छात्राओं को सम्मानित भी किया।

एचएम डिग्री कॉलेज में आज से शुरू होगा शूटिंग कैंप का आयोजन

जानकारी देते तहसीन सिद्दीकी।

गुरसहायगंज (कन्नौज)। यूनिवर्सिटी कानपुर गेम्स 2023 सिलेक्टेड बच्चों का आज से कैंप स्टार्ट हो रहा है। जिसमें सिलेक्टेड छात्र-छात्रायें सुबह 11 बजे तक एचएम डिग्री कॉलेज डुंडबा बुजुर्ग गुरसहायगंज में रिपोर्ट करें। शुक्रवार को उपरोक्त जानकारी देते हुए नेशनल शूटर एवं कॉलेज के फाउंडर पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष तहसीन सिद्दीकी ने दी। बताया कि 08 दिसंबर से इंटर यूनिवर्सिटी गेम स्टार्ट हो रहे हैं। उसमें जो प्रतिभागी 02 दिसंबर तक रिपोर्ट करेगा वही प्रतिभाग कर सकेंगे और इंटर यूनिवर्सिटी शूटिंग प्रतियोगिता में खेल पाएगा। जिसका लिस्ट में नाम है वह बच्चे अपनी राइफल किट, शूटिंग का जितना भी समान होता है वह सब अपने साथ लेकर आयें और यह कैंप 02 दिसंबर से 06 दिसंबर तक चलेगा। उन्होंने यह भी कहा कि सर्दी का मौसम है। इसलिए सभी प्रतिभाग करने वाले छात्र-छात्रायें अपने सर्दी के कपड़े भी साथ लाएं।

एएनटीएफने पकड़े तीन तस्कर, एक करोड़ से ज्यादा की अफीम बरामद

बरेली। एएनटीएफ की बरेली यूनिट में तीन तस्करों को दबोचा। गिरफ्तार तस्करों के पास से 5 किलो 200 ग्राम अफीम बरामद हुई है जिसकी अंतर्राष्ट्रीय कीमत एक करोड चार लाख रुपये आकी गई है। तीनों तस्करों को एनडीपीएस एक्ट के तहत मुकदमा पंजीकृत कर जेल भेज दिया गया है। मुखबिर के जरिए बरेली एएनटीएफ (एंटी नारकोटिक्स टास्क फोर्स) यूनिट को सूचना मिली कि झारखंड से अफीम को लाकर बरेली में बेचा जा रहा है। मुखबिर की सूचना पर भरोसा करते हुए एएनटीएफ की टीम ने इज्जतनगर थाना क्षेत्र के विलय धाम के पास से ईको कार में सवार तीन तस्करों को आज दोपहर 12रू40 पर दबोच लिया। पूछताछ में तीनों तस्करों ने अपना नाम चमनप्रकाश उर्फ लखविन्द्र पुत्र पूरनलाल , बल्लाम खां पुत्र साबिर खाँ और ईश्वरी प्रसाद पुत्र नोनीराम निवासी गेला टांडा थाना नवाबगंज बरेली बताया।पूछताछ के दौरान तीनों तस्करों ने बताया कि वह अफीम को झारखंड के छतरा से कम दाम लेकर आते हैं और पंजाब से आने वाले ग्राहकों को अच्छे दामों में बेंच देते हैं जो भी मुनाफा होता है उसको बराबर बराबर बांट लेते हैं।गिरफ्तार तस्करों के पास से 5 किलो 200 ग्राम अफीम और 2 मोबाइल एक ईको कार और 430 रुपए नगद बरामद हुए हैं। थाना इज्जतनगर में तीनों तस्करों पर एनडीपीएस एक्ट की धारा 8/18/29 के तहत मुकदमा पंजीकृत कर जेल भेज दिया गया है।

विश्व एड्स दिवस पर विचार गोष्ठी का हुआ आयोजन

लखीमपुर खीरी। विश्व एड्स दिवस के अवसर पर राजकीय इंटर कॉलेज में स्वास्थ्य विभाग द्वारा एक गोष्ठी एवं प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसका शुभारंभ मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ संतोष गुप्ता द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। इस दौरान विद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ जगत प्रकाश सिंह और एसीएमओ डॉ अनिल कुमार गुप्ता, डिप्टी सीएमओ डॉ धनीराम भार्गवए जिला प्रतिरक्षण अधिकारी डॉ प्रमोद वर्मा भी मौजूद है। गोष्ठी के दौरान विद्यालय के बच्चों को पहले सीएमओ डॉ संतोष गुप्ता और एसीएमओ डॉ अनिल कुमार गुप्ता द्वारा एड्स को लेकर जानकारी दी गई। उसके बाद सीएमओ डॉ संतोष गुप्ता द्वारा बच्चों के बीच जाकर उनसे सवाल जवाब किए गए। गोष्ठी को संबोधित करते हुए सीएमओ डॉ संतोष गुप्ता ने बताया कि एड्स एक जानलेवा बीमारी है। ऐसे में इससे बचाव बेहद जरूरी है। हमें एड्स के होने के कारणों का पता होना बेहद जरूरी हैए जिससे हम इस लाइलाज बीमारी से बच सकें। हालांकि

वर्तमान समय में ऐसी दवाइयां बनाई जा चुकी है। जिसे एड्स संक्रमित व्यक्ति को देने से उसके जीवन को काफी हद तक सुरक्षित किया जा सकता है। एड्स. एचआईवी नामक विषाणु से होता है। संक्रमण के लगभग 12 सप्ताह के बाद ही रक्त की जाँच से ज्ञात होता है कि यह विषाणु हैए ऐसे व्यक्ति को एचआईवी पोजिटिव कहते हैं। एचआईवी पोजिटिव व्यक्ति कई वर्षों ;6 से 10 वर्षद्ध तक सामान्य प्रतीत होता है और व्यतीत कर सकता हैए लेकिन दूसरो को बीमारी फैलाने में सक्षम होता है। यह विषाणु मुख्यत: शरीर को बाहरी रोगों से सुरक्षा प्रदान करने वाले रक्त में मौजूद टी कोशिकाओं (सेल्स) व मस्तिष्क की कोशिकाओं और धीरे.धीरे उन्हें नष्ट करता रहता है कुछ वर्षों बाद (6 से 10 वर्ष) यह स्थिति हो जाती है कि शरीर आम रोगों के कीटाणुओं से अपना क और तरह तरह का संक्रमण (इन्फेक्शन) से ग्रसित होने लगता हैए इस अवस्था को एड्स कहते हैं। एड्स के होने के कुछ ऐसे प्रमुख कारण है जो एचआईवी संक्रमित व्यक्ति के साथ यौन सम्पर्क सेए एचआईवी संक्रमित सिरिंज व सूई का दूसरों के द्वारा प्रयोग करने से। एचआईवी संक्रमित मां से शिशु को जन्म से पूर्वए प्रसव के समयए या प्रसव के शीघ्र बाद, एचआईवी संक्रमित अंग प्रत्यारोपण शामिल है।

जीवन.साथी के अलावा किसी अन्य से यौन संबंध नही रखे।

एड्स से बचाव के लिए यौन सम्पर्क के समय निरोध (कण्डोम) का प्रयोग करना चाहिए, मादक औषधियों के आदी व्यक्ति के द्वारा उपयोग में ली गई सिरिंज व सूई का प्रयोग न करें। एड्स पीड़ित महिलाए गर्भधारण न करेंए क्योंकि उनसे पैदा होने वाले शिशु को यह रोग लग सकता है। रक्त की आवश्यकता होने पर अनजान व्यक्ति का रक्त न लेंए और सुरक्षित रक्त के लिए एचआईवी जांच किया रक्त ही ग्रहण व्यक्ति का प्रयोग में लिया हुआ ब्लेड/पत्ती काम में ना लेवें। डिस्पोजेबल सीरिन्ज एवं सूई तथा अन्य चिकित्सीय उपकरणों का प्रयोग करें।

पीएम मोदी के स्वर्णिम कार्यकाल ने बदल दी भारत की तस्वीर: सांसद

● चित्रकूट के बंदरी गांव पहुंची विकसित भारत संकल्प यात्रा

संवाददाता। चित्रकूट

विकसित भारत संकल्प यात्रा के तहत जिले के सदर विकास खंड अन्तर्गत ग्राम पंचायत बंदरी में आयोजित ग्रामीण संवाद जनजागरण कार्यक्रम में बांदा-चित्रकूट सांसद आर के सिंह पटेल ने कहा कि संकल्प को साकार करने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने साढ़े 9 वर्षों में ऐतिहासिक निर्णय लिये है। जिससे विकास के साथ-साथ भारत को वैश्विक स्तर पर नई पहचान और सम्मान दिलाया है।

शुक्रवार को बंदरी गांव में आयोजित ग्रामीण संवाद जनजागरण कार्यक्रम का बांदा-चित्रकूट सांसद आर के सिंह पटेल ने भाजपा जिला प्रभारी अनिल यादव,जिला सहकारी बैंक के अध्यक्ष पंकज अग्रवाल,जिला महामंत्री आलोक पांडेय आदि की मौजूदगी में शुभारंभ करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने साढे 9 वर्षो के कार्यकाल में महत्वपूर्ण निर्णयों, दूरदर्शी सोच एवं योजनाओं से देश भर में जो माहौल बनाया है, वह किसी भारतीय से छिपा नहीं है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के इस संकल्प में केंद्र और राज्य सरकार की योजनाएं काफी सहायक बनी हैं। जिसका भव्य रूप आज हम सभी को देखने को मिल रहा है।

विकसित भारत संकल्प यात्रा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में आने वाले कुछ वर्षों में विकसित भारत की संकल्पना को स्थापित करेगी। इसमें हम सब का भी योगदान जरूरी है। बताया कि इसी उद्देश्य से 15 नवंबर को जनजातीय गौरव दिवस पर विकसित भारत संकल्प यात्रा का शुभारंभ किया गया है।

सदन में सदर विधायक अनिल प्रधान ने उठाया श्रमिकों के कल्याण का मुद्दा

संवाददाता। चित्रकूट

विधान सभा शीतकालीन सत्र में श्रमिकों के कल्याण को योजनाओं में अधिकारियों की अनियमितता को विधान सभा सदन में रखते हुए सदर विधायक अनिल प्रधान ने श्रम मंत्री से कहा कि श्रमिकों को कोई लाभ नहीं मिल रहा है।

शुक्रवार को विधायक अनिल प्रधान ने सदन को बताया कि श्रमिकों के कल्याण को शिक्षा, मातृत्व, शिशु, बालिका मदद योजना, कन्या विवाह, मृत्यु, दिव्यांगता की योजनायें चल रही है। उनके विधानसभा चित्रकूट व जिले में भ्रष्टाचार की भेट चढ़ गई हैं। उनके बार-बार शासन -प्रशासन से करने के बाद भी दो वर्षों में श्रमिकों के हित के काम नहीं किये जा रहे। आकांक्षी जिला चित्रकूट में एक वर्ष बीतने पर भी श्रम प्रवर्तन अधिकारी की तैनाती नहीं की गई। मानिकपुर में तैनात अधिकारी श्रमिकों को लाभ पहुंचाने की बजाय आवेदन निरस्त करने में रुचि रखते हैं। 15 दिन मुख्यालय कानपुर में रहते हैं। 15 दिन जिले में रहते हैं। पंजीकृत श्रमिक श्रम विभाग के चक्कर लगाते हैं। उन्होंने कहा कि जिले में तैनात सहायक श्रमायुक्त ने जुलाई 2023 में सात सौ पत्रावलियों को बिना भुगतान के पुन: जांच को भेजा। जिलाधिकारी ने 23 सितंबर को कार्यवाही को प्रमुख सचिव श्रम को पत्र भेजा था, कोई कार्यवाही नहीं हुई। जांच में आनन-फानन में 5000 फाइलों में 150 फाइलों को मंजूर किया। विधायक अनिल प्रधान ने अनुपूरक प्रश्न में प्रदेश में श्रम आयुक्त के 20 कार्यालय होने की बात कही। सरकार से मांग किया कि प्रदेश में अपर/श्रमायुक्त के 30 कार्यालय खोले जायें, ताकि श्रमिकों को सुविधाओं का लाभ मिल सके। नियम 301 के तहत भैसौंधा में राजकीय इंटर कॉलेज खोलने की मांग की। कुचारम से परसौंजा, बरवारा में संपर्क मार्ग चौड़ीकरण की मांग की।

शिक्षामित्रों ने धरना देकर समान कार्य के लिए समान वेतन दिये जाने की मांग की

संवाददाता। फतेहपुर

● प्रधानमंत्री को ज्ञापन भेज कर लगाई गुहार

वेतन वृद्धि समेत मांगो व समस्याओं को लेकर शिक्षामित्रों ने धरना देकर अपनी आवाज़ बुलंद की। प्रधानमंत्री को संबोधित ज्ञापन भेजकर शिक्षामित्रों ने अपने हितों में आवश्यक निर्णय लिये जाने की मांग किया।

शुक्रवार को आदर्श समायोजित शिक्षक शिक्षामित्र वेलफेयर एसोसिएशन के बैनर तले जिलाध्यक्ष विजय सिंह गौर की अगुवाई में शिक्षामित्रों ने नहर कालोनी स्थित धरना स्थल में एक दिवसीय धरना दिया। धरने के पश्चात शिक्षामित्रों ने कलेक्ट्रेट पहुंचकर ज़ोरदार नारेबाजी व प्रदर्शन करते हुए जिलाधिकारी के माध्यम से प्रधानमंत्री को चार सूत्रीय मांगों का ज्ञापन भेजकर गुहार लगाई। पीएम को भेजे ज्ञापन में बताया कि बेसिक शिक्षा विभाग द्वारा संचालित प्राथमिक विद्यालयों में विगत 23 वर्षों से शिक्षामित्र कार्यरत हैं। जुलाई 2017 में सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय के बाद से एक लाख पचास हज़ार शिक्षामित्रों व उनके परिवार के सामने भरण पोषण की समस्याएं खड़ी हो गयी हैं। मानसिक समस्याओं के चलते अब तक हज़ारों शिक्षामित्रों की मृत्यु हो चुकी है। उन्होंने शिक्षामित्रों के लिये नियमावली बनाये जाने, शिक्षामित्रों के मामले में भी समान कार्यों के समान वेतन वाला सिद्धांत लागू किये जाने, मूल विद्यालयों में वापसी, महिलाओं को उनकी ससुराल में तैनाती दिए जाने एवं मृतक शिक्षामित्रों के आश्रितों को सरकारी नौकरी या मुआवजा दिये जाने जैसी मांगें शामिल रहीं।

वोटर चेतना महाभियान में भाजपा का महिला मतदाता जोड़ने पर जोर

चित्रकूट। चित्रकूट इंटर कॉलेज में भाजपा महिला मोर्चा ने चेतना वोटर महा अभियान के तहत लगे कैंप में मतदाता सूची पुनरीक्षण के प्रति लोगों को जागरूक कर फार्म भरवाये। महिला मतदाता जोड़ने को जिलाध्यक्ष लवकुश चतुर्वेदी, जिला प्रभारी अनिल यादव एवं महिला मोर्चा की जिलाध्यक्ष दिव्या त्रिपाठी आदि पदाधिकारी मौजूद रहे।

शुक्रवार को भाजपा जिलाध्यक्ष लवकुश चतुर्वेदी ने लोकसभा में वोट के महत्व को समझाते हुए कहा कि ये वोट की ताकत है कि केंद्र व प्रदेश में सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, सबके प्रयास पर कार्य करने वाली देश में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार है। नौ वर्षों में अतुलनीय कार्य हुए हैं। ये सभी विकास कार्य अनवरत जारी रहें, कोई भी व्यक्ति मताधिकार से वंचित न रहे। एक बार फिर ज्यादा से ज्यादा वोटों से पुन: भाजपा को जिताना है। जिला प्रभारी अनिल यादव ने कहा कि महिला मोर्चा के कैंप में नए मतदाता जोड़ने को महिला वोटरों को जोड़ा जाए। चेतना महाअभियान में महिला कार्यकर्ता घर-घर अभियान चलायें। पार्टी के अनुशासित कार्यकर्ता घर-घर दस्तक दें। प्रत्येक घर की दहलीज व गांव की चौपाल तक महिला कार्यकर्ता पहुंचें। नव मतदाताओं से संपर्क कर उन्हें पार्टी से जोड़ें, ताकि फिर भाजपा की सरकार बनाई जा सके। 18 वर्ष आयु पूरी करने वाले को मतदाता बनायें।

रामभद्राचार्य दिव्यांग विश्वविद्यालय में हुआ भाषण प्रतियोगिता का आयोजन

चित्रकूट। विश्व दिव्यांग दिवस 2023 के अवसर पर जगदगुरू रामभद्राचार्य दिव्यांग राज्य विश्वविद्यालय चित्रकूट में भाषण प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। जिसका शीर्षक राष्ट्रीय शिक्षा नीति एवं दिव्यांगता था। भगवान श्रीराम की तपोभूमि चित्रकूट में पदम विभूषण से सम्मानित श्रीतुलसी पीठाधीश्वर जगदगुरू स्वामी रामभद्राचार्य महाराज द्वारा दिव्यांगों को शिक्षित और आत्मनिर्भर बना विकास की मुख्य धारा से जोड़ने के उद्देश्य से एशिया के प्रथम दिव्यांग विश्वविद्यालय की स्थापना की थी। प्रतिवर्ष विश्वविद्यालय में विश्व दिव्यांग दिवस के उपलक्ष्य पर प्रतियोगिताओं का आयोजन कर उत्कृष्ट प्रतिभाओं का सम्मान किया जाता है। इसी क्रम में शुक्रवार को भाषण प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस अवसर पर आयोजन समिति के सदस्य डॉक्टर अमित त्रिपाठी, डॉक्टर नीतू तिवारी, डॉ रमा सोनी, एसपी मिश्रा, डॉक्टर दुर्गेश कुमार मिश्रा, डॉक्टर तृप्ति रस्तोगी, एवं निर्णायक मंडल के सदस्य डॉक्टर विनोद कुमार मिश्रा, डॉ रजनीश कुमार सिंह, डॉक्टर सुनीता श्रीवास्तव, एवं अनेक शिक्षकगण व विद्यार्थी उपस्थित थे।

दिव्यांगों बच्चों ने किया खेलों में प्रतिभा का प्रदर्शन

● कम्पोजिट विद्यालय के बच्चों ने खेलों में दिखाया जबर्दस्त उत्साह

संवाददाता। फतेहपुर

दिव्यांगता किसी तरह का अभिशाप नहीं है। हर कार्य के लिए एक जुनून चाहिए। उक्त पंक्तियां कंपोजिट विद्यालय बिलंदा के दिव्यांग बच्चों व उनके ट्रेनर शिक्षकों ने चरितार्थ किया। दिव्यांग बच्चो की तहसील स्तर रैली व गोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में भाजपा जिलाध्यक्ष समेत अधिकरियो ने शिरकत की। इस दौरान गोष्ठी में दिव्यांगता को किसी तरह का अभिशाप न मानकर बच्चो को आगे बढ़ने का समान अवसर दिये जाने व दियांगता को मात देकर बच्चों को आगे बढ़ाने पर बल दिया गया। शुक्रवार को कम्पोजिट विद्यालय बिलंदा में दिव्यांग बच्चों की तहसील स्तरीय रैली का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप मे भारतीय जनता पार्टी के जिलाध्यक्ष मुखलाल पाल एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में बेसिक शिक्षा अधिकारी पंकज यादव, जिला दिव्यांग जन सशक्तिकरण अधिकारी प्रगति मिश्रा रहीं। कार्यक्रम के दौरान दिव्यांग बच्चों ने विभिन्न खेलो में प्रतिभाग कर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया।

दिव्यांग बच्चों की प्रतिभा देखकर अतिथियों ने कंपोजिट विद्यालय प्रधानाध्यापिका प्रेमलता तिवारी समेत विद्यालय स्टाफ की जमकर प्रशंसा की। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए भाजपा जिलाध्यक्ष मुखलाल पाल ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी व मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा समाज के सभी वर्गों को मुख्यधारा में लाने के लिये योजनाएं चलाई जा रही हैं।

स्वामी मूलानंद महाराज का निर्वाण दिवस मनाया

फतेहपुर। शहर के जीटी रोड राधा वाटिका में शुक्रवार को ब्रम्हलीन परमपूज्य श्रीश्री 1008 श्री मूलानंद जी महाराज सरस्वती के 27 वें निर्वाण दिवस पर प्रत्येक वर्षो की भांति इस वर्ष भी हवन पूजन कर भंडारे का आयोजन किया गया। जिसमें बड़ी संख्या में साधू संतों ने हिस्सा लिया। पूर्व मंत्री समेत विधायक ने साधू संतों को अंग वस्त्र भेंटकर व माल्यार्पण कर सम्मानित किया। कार्यक्रम आयोजक पूर्व मंत्री राधेश्याम गुप्त, गोपाल कृष्ण गुप्त, अयाह-शाह विधायक विकास गुप्ता ने सर्वप्रथम स्वामी मूलानंद जी महाराज सरस्वती की पूजा-अर्चना विधि-विधानपूर्वक की तत्पश्चात वहां उपस्थित साधू संतों को अंग वस्त्र एवं माल्यार्पण कर सम्मानित किया। सभी साधू संतों को पंक्ति में बैठाकर प्रसाद वितरित किया गया।

क्विक न्यूज

रजिस्ट्री कार्यालय में मतदाता जागरूकता हस्ताक्षर अभियान

फतेहपुर। स्वीप के अंतर्गत जिला निर्वाचन अधिकारी/जिलाधिकारी सी. इंदुमती के निर्देशन में मतदाता जागरूकता अभियान के तहत उपनिबंधक अरुण मनोज प्रभाकर त्रिपाठी व स्वीप आइकॉन डॉ अनुराग श्रीवास्तव के नेतृत्व में रजिस्ट्री कार्यालय परिसर में मतदाता जागरूकता हस्ताक्षर अभियान चलाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि अपर जिलाधिकारी अविनाश त्रिपाठी ने फीता काटकर व सर्वप्रथम मतदाता जागरूकता हस्ताक्षर अभियान के बैनर पर हस्ताक्षर करके किया। साथ ही सभी को मतदाता जागरूकता निवेदन पत्रक भी वितरित किये। तत्पश्चात अपर जिलाधिकारी ने सभी अधिवक्ताओं, कर्मचारियों व आमजनमानस को मतदान की शपथ भी दिलाई।

प्रतिभा सम्मान पाकर बानी ने बढ़ाया जिले का मान

फतेहपुर। हिंदी विकास संस्थान दिल्ली की ओर से आयोजित अंतर्राष्ट्रीय हिंदी ओलंपियाड प्रतियोगिता में जिले के चिल्ड्रेन पब्लिक स्कूल की छात्रा बानी सिंह ने प्रतिभा सम्मान पाकर जिले का मान बढ़ाया। स्थानीय रेलवे स्टेशन पर ही बिटिया का माला पहनाकर स्वागत किया गया। बताते चलें कि हिंदी विकास संस्थान की ओर से अंतर्राष्ट्रीय हिंदी ओलंपियाड प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। जिसमें पूरे देश भर के विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने हिस्सा लिया था। जिसमें चिल्ड्रेन पब्लिक स्कूल की कक्षा दस की छात्रा बानी सिंह पुत्री राकेश पासवान ने भी हिस्सा लिया। उन्होने प्रतियोगिता में प्रथम स्थान हासिल कर जिले का मान बढ़ाने का काम किया।

दुष्कर्म के दोनों आरोपी गिरफ्तार, बालसुधार गृह भेजे गए

सुमेरपुर, हमीरपुर। कोचिंग जाते समय छात्रा को रास्ते से जबरियां बाइक में बैठकर बंद पड़ी गल्ला मंडी में ले जाकर दुष्कर्म की घटना को अंजाम देने वाले दोनों बाल अपचारियों को पुलिस ने गिरफ्तार कर बाल सुधार गृह चित्रकूट भेजा है। पुलिस के मुताबिक तीन दिन पूर्व एक गांव की नाबालिग छात्रा सुबह घर से कोचिंग जा रही थी। तभी गांव निवासी शिवांशु सिंह,आर्यन सिंह ने उसे रास्ते में रोककर जबरिया बाइक में बिठा लिया और इंगोहटा छानी मार्ग पर बंद पड़ी गल्ला मंडी ले जाकर सामूहिक दुष्कर्म की घटना को अंजाम दिया। पीड़िता की मां ने दोनों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया था। थानाध्यक्ष रामआसरे सरोज ने बताया कि शुक्रवार को वह अपनी टीम के साथ दोनों आरोपियों को गायत्री तपोभूमि के समीप से गिरफ्तार कर लिया है। दोनों आरोपी नाबालिग होने के कारण उन्हें बाल सुधार गृह चित्रकूट भेजा गया है।

वाहन सीज कर 15 हजार का किया जुर्माना

फर्रुखाबाद। फतेहगढ़-फर्रुखाबाद मुख्य मार्ग पर यातायात प्रभारी को वाहन चौकिंग के दौरान एक बाइक पर पांच लोग और वो भी बिना हेलमेट के बैठे हुए जब मिले तो अधिकारी भी हैरान रह गए। बाइक सवारों को देखकर बोले यह क्या हो रहा है। और साथ ही उन्हें यातायात नियमों का पाठ भी पढ़ाया। इसके साथ उनको सीज भी कर 15 हजार का जुर्माना भी लगाया गया है। दरअसल यातायात माह के तहत यातयात प्रभारी रजनेश यादव अपनी टीम के साथ नेकपुर चौरासी के निकट फतेहगढ़-फर्रुखाबाद मार्ग पर वाहन चेकिंग अभियान चलाया जा रहा था। इस दौरान वाहन चेकिंग करते हुए एक मोटरसाइकिल पर पांच युवा बैठकर जा रहे थे। यातायात प्रभारी ने बाइक को सीज कर कादरी गेट थाने में खड़ा करा दिया।

फिरोजपुर कटरी पट्टा रद्द करो के नारे के साथ पद यात्रा रवाना

फतेहपुर। हुसैनगंज थाना क्षेत्र के फिरोजपुर कटरी में कृषि योग्य भूमि पर बालू खनन का प्रस्तावित पट्टा, न करने व पूरी प्रक्रिया निरस्त करने की मांग को लेकर शुक्रवार को पूर्वान्ह ग्यारह बजे किसानों का एक प्रतिनिधि मंडल पैदल यात्रा करते हुए लखनऊ के लिए रवाना हो गया। जहां मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से भेंट कर पट्टा प्रकिया के निरस्तीकरण, खनिज न्यास अनियमितता की मांग रखेगा। फिरोजपुर कटरी में बालू खनन के नाम पर हुए पट्टे को निरस्त करने की मांग किसानों द्वारा लगातार विगत तीन माह से हो रही है लेकिन खनन विभाग व जिला प्रशासन द्वारा अभी तक कोई कार्यवाही नहीं होने से किसान क्षुब्ध हैं।

एमएलसी बनने की होड़ में बिखर रहे हैं शिक्षक संगठन: लालमणि

संवाददाता। पुखरायां, कानपर देहात

उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षक संघ ठकुरई गुट के प्रांतीय महामंत्री एवं संयुक्त मोचा के संयोजक लालमणि द्विवेदी ने कहा कि सत्ता में भागीदारी शिक्षकों का हितकारी नहीं है। शिक्षक एमएलसी बनने की होड़ में संगठन बिखर गए हैं। वह शुक्रवार को स्थानीय रामस्वरूप ग्राम उद्योग इंटर कॉलेज में आयोजित जनपदीय सम्मेलन एवं शैक्षिक विचार गोष्ठी में शिक्षकों को संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि विधान परिषद में शिक्षक एमएलसी के आरक्षित पदों तक पहुंचने के लिए शिक्षक संगठनों में धड़ेबाजी चरम सीमा पर है। जिसके चलते जातीय आधार पर संगठन बन रहे हैं। जिसका असर विद्यालयों में दिखायी दे रहा है। शिक्षक स्टाफ रूम यही माहौल देखने को मिल रहा है। बिखरते शिक्षकों और शिक्षक संगठनों से सरकार और अधिकारियों पर दबाव नहीं बन रहा है।

विकसित भारत संकल्प यात्रा के तहत भिखनापुर में चौपाल का आयोजन

कानपुर देहात। शुक्रवार को विकसित भारत संकल्प यात्रा के अंतर्गत ग्राम भिखनापुर विकासखंड अकबरपुर जनपद कानपुर देहात में गोष्ठी /चौपाल आयोजित की गई। इस कार्यक्रम में उप कृषि निदेशक, राम बचन राम द्वारा उपस्थित कृषकों को श्री अन्न फसलों के बारे में, मृदा स्वास्थ्य कार्ड के बारे में, पीएम किसान सम्मान निधि के बारे में, तथा पराली प्रबंधन के बारे विस्तार से चर्चा की गई। कार्यक्रम में उपस्थित जिला कृषि अधिकारी डॉ0 उमेश कुमार गुप्ता द्वारा कृषकों को कृषि विभाग में उपलब्ध गेहूं की उन्नतिशील प्रजातियों के बारे में जानकारी दी गई तथा गेहूं की समय से बुवाई 15 दिसंबर तक अनिवार्य रुप से करें नही तो पैदावार पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।

'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' के तहत नुक्कड़ नाटक टीम को सीडीओ ने दिखाई हरी झंडी

कानपुर देहात। शुक्रवार के दिन निदेशक महिला कल्याण द्वारा दिनांक-1 दिसम्बर 2023 से 15 दिसम्बर 2023 तक बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ पखवाड़ा अभियान चलाये जाने के निर्देश दिये गये हैं। जिसके अनुक्रम में जिलाधिकारी महोदय के निर्देशानुसार बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ पखवाड़ा अभियान के शुभारम्भ पर जनपद के कम बाल लिंगानुपात वाले विकासखण्डों में नुक्कड़ नाटक के माध्यम से जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करायें जाने हेतु मुख्य विकास अधिकारी द्वारा हरी झण्डी दिखाकर नुक्कड़ नाटक टीम को रवाना किया गया। इस मौके पर मुख्य विकास अधिकारी महोदया द्वारा बताया गया कि जनपद के कम बाल लिगानुपात वाले विकासखण्डों में नुक्कड़ नाटक के माध्यम से गिरते लैंगिक अनुपात में सुधार लाना, बालिकाओं की सुरक्षा को सुनिश्चित करना, कल्याणकारी सेवाएं उपलब्ध कराने में सुधार, आर्थिक क्षेत्रों में बेटियों की भागीदारी को बढ़ावा देने हेतु प्रचार-प्रसार कराया जाना है साथ ही यह भी बताया कि घटता लिंगानुपात महिलाओं के बुनियादी अधिकारों एवं संविधान द्वारा प्रदत्त जीवन जीने के अधिकार का उल्लंघन है। संविधान के अनुच्छेद 14, 15 और 16 कानून के समक्ष समानता, अवसर की समानता, और भेदभाव के निषेध पर केन्द्रित हैं। अनुच्छेद 21 में जीवन जीने के अधिकार की गारन्टी दी गई है।

पेज एक का शेष

गलतियों को...

में ले जाएगा। मोदी का बयान इस संदर्भ में आया है कि गरीब और विकासशील देशों को अमीर देशों द्वारा ऐतिहासिक कार्बन उत्सर्जन के कारण बढ़ते तापमान से बदलती जलवायु के परिणामस्वरूप बाढ़, सूखा, गर्मी, शीत लहर जैसी जलवायु संबंधी चरम घटनाओं का खामियाजा भुगतना पड़ता है। प्रधानमंत्री ने जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को कम करने और अनुकूलन के बीच संतुलन बनाए रखने का आह्वान किया और कहा कि दुनिया भर में ऊर्जा रूपांतरण न्यायसंगत और समावेशी होना चाहिए। उन्होंने विकासशील देशों को जलवायु परिवर्तन से निपटने में मदद करने के लिए अमीर देशों से प्रौद्योगिकी हस्तांतरित करने का आह्वान किया। प्रधानमंत्री पर्यावरण के लिए जीवन शैली (लाइफ अभियान) की पैरोकारी कर रहे हैं, देशों से धरती-अनुकूल जीवन पद्धतियों को अपनाने और गहन उपभोक्तावादी व्यवहार से दूर जाने का आग्रह कर रहे हैं। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी (आईईए) के एक अध्ययन का हवाला देते हुए कहा कि यह दृष्टिकोण (लाइफ अभियान) कार्बन उत्सर्जन को दो अरब टन तक कम कर सकता है। उन्होंने देशों से मिलकर काम करने और जलवायु संकट के खिलाफ निर्णायक कदम उठाने का आह्वान किया। मोदी ने कहा, हम एक-दूसरे के साथ सहयोग करेंगे और एक-दूसरे का समर्थन करेंगे। हमें सभी विकासशील देशों को वैश्विक कार्बन बजट में अपना उचित हिस्सा देने की जरूरत है। यदि भारत का सीओपी33 की मेजबानी का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया जाता है, तो यह इस साल की शुरुआत में जी20 शिखर सम्मेलन के बाद देश में अगला बड़ा वैश्विक सम्मेलन होगा। भारत ने 2002 में नई दिल्ली में सीओपी8 की मेजबानी की, जहां देशों ने दिल्ली मंत्रिस्तरीय घोषणापत्र को अपनाया, जिसमें विकसित देशों द्वारा प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और विकासशील देशों पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को कम करने के प्रयासों का आह्वान किया गया। जलवायु विज्ञान कार्बन बजट को ग्रीनहाउस गैसों की मात्रा के रूप में परिभाषित करता है जो ग्लोबल वार्मिंग के एक निश्चित स्तर (इस मामले में 1.5 डिग्री सेल्सियस) तक उत्सर्जित किया जा सकता है। विकसित देशों ने पहले ही वैश्विक कार्बन बजट का 80 प्रतिशत से अधिक उपभोग कर लिया है, जिससे विकासशील और गरीब देशों के पास भविष्य के लिए बहुत कम कार्बन स्पेस बचा है। मोदी ने यह रेखांकित किया कि भारत दुनिया की 17 प्रतिशत आबादी का घर है, लेकिन वैश्विक कार्बन उत्सर्जन में इसकी हिस्सेदारी 4 प्रतिशत से कम है। उन्होंने कहा, भारत दुनिया की उन कुछ अर्थव्यवस्थाओं में से एक है जो अपने एनडीसी (राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान) लक्ष्यों को हासिल करने की राह पर है। भारत ने अपने उत्सर्जन तीव्रता संबंधी लक्ष्यों को निर्धारित समय सीमा से 11 साल पहले और गैर-जीवाश्म ईंधन लक्ष्यों को निर्धारित समय से नौ साल पहले हासिल कर लिया। उन्होंने कहा, भारत यहीं नहीं रुका है, हम महत्वाकांक्षी बने हुए हैं। देश का लक्ष्य 2005 के स्तर से 2030 तक सकल घरेलू उत्पाद की उत्सर्जन तीव्रता को 45 प्रतिशत तक कम करना और 2030 तक गैर-जीवाश्म ईंधन-आधारित ऊर्जा संसाधनों से 50 प्रतिशत संचई विद्युत स्थापित क्षमता हासिल करना है। इसने 2070 तक नेट जीरो अर्थव्यवस्था बनने के लिए भी प्रतिबद्धता जताई है। इस वर्ष जी20 की अध्यक्षता के तहत भारत ने विकास और पर्यावरण के बीच संतुलन बनाने के लिए हरित विकास समझौते को लेकर दुनिया की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं से आम सहमति प्राप्त की।

कतर से...

पर विचार कर रहा है। मौत की सजा के खिलाफ अपील दायर की जा चुकी है और कतर की एक उच्च अदालत ने इसे स्वीकार कर लिया है। यह अपील जेल में बंद इन भारतीय नागरिकों की कानूनी टीम ने दायर की है। ये सभी आठ भारतीय नागरिक अल दाहरा कंपनी में काम कर रहे थे और इन्हें पिछले साल जासूसी के कथित मामले में हिरासत में ले लिया गया था।

बेंगलुरु के...

गए हैं। मैं लोगों से अपील करता हूं कि वे चिंता न करें, क्योंकि संभवत: ये सभी फर्जी कॉल (मेल) हैं। पुलिस के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि तलाशी अभियान लगभग पूरा हो गया है और अब तक, हमारी टीम को किसी भी स्कूल परिसर में कोई संदिग्ध वस्तु नहीं मिली है। उन्होंने कहा, प्रथम दृष्टया यह फर्जी संदेश प्रतीत होता है। हम इस संबंध में मामला दर्ज करने की प्रक्रिया में हैं और गहन जांच की जा रही है। ईमेल से मिली धमकी के बारे में पता चलने से पहले ही बच्चे स्कूल पहुंच गए थे। घबराए हुए माता-पिता अपने बच्चों को सुरक्षित घर वापस लाने के लिए अपने-अपने कार्यालयों और घरों से स्कूल पहुंचे। जिन स्कूलों में बम रखा होने की धमकियां दी गईं उनमें से कई के छात्रों ने बताया आज उनकी परीक्षाएं थीं। मुख्यमंत्री सिद्धरमैया ने कहा कि मैंने पुलिस अधिकारियों से बात की है और उन्हें सभी स्थानों पर पर्याप्त सुरक्षा व्यवस्था करने, सतर्क रहने और इसके पीछे के लोगों का पता लगाने का निर्देश दिया है। उन्होंने कहा कि किसी को चिंता करने की कोई जरूरत नहीं है। मैंने सुरक्षा कड़ी करने और जिन स्कूलों को धमकियां मिली हैं, उनकी जांच करने को कहा है। कर्नाटक के उपमुख्यमंत्री डी के शिवकुमार ने उन विद्यालयों में से एक स्कूल का दौरा किया जहां बम होने का दावा किया गया है। उन्होंने स्कूल और पुलिस से स्थिति की जानकारी ली। उन्होंने कहा, टीवी पर समाचार देखकर मैं थोड़ा परेशान हो गया था, क्योंकि कुछ ऐसे विद्यालयों का जिक्र किया गया है जिन्हें मैं जानता हूं और जो मेरे घर के पास हैं, इसलिए मैं स्थिति का पता लगाने बाहर गया। पुलिस ने मुझे मेल दिखाया है। प्रथम दृष्टया यह फर्जी प्रतीत हो रहा है। मैंने पुलिस से बात की... लेकिन हमें सतर्क रहना चाहिए। माता-पिता चिंतित हैं, लेकिन चिंता करने की जरूरत नहीं है। पुलिस इसकी जांच कर रही है।

सोशल कॉमर्स...

हुए, ब्रांड कैप्टिव दर्शकों को ग्राहकों में बदलने के लिए नए तरीके ईजाद कर रहे हैं। कैट ने शुक्रवार को नई दिल्ली में सामाजिक वाणिज्य पर एक व्यापारी कार्यशाला का आयोजन करके एक राष्ट्रीय प्रशिक्षण अभियान 'व्यापार आपके द्वार' की शुरुआत की, जिसमें दिल्ली के 200 से अधिक प्रमुख व्यापार संघों के व्यापार नेताओं ने भाग लिया। अभियान के तहत कैट की देश भर में 250 कार्यशालाएँ आयोजित करने की योजना है। खंडेलवाल ने कहा कि वर्तमान में भारत में व्हाट्सएप पर 75 करोड़, फेसबुक पर 37 करोड़ और इंस्टाग्राम पर 33 करोड़ उपयोगकर्ता हैं, जो ई-कॉमर्स परिदृश्य की तुलना में बहुत बड़ी संख्या है और स्मार्ट फोन के लगभग 100 करोड़ उपयोगकर्ता होने से सोशल कॉमर्स उभर कर सामने आएगा। खंडेलवाल ने कहा कि सोशल कॉमर्स को प्राथमिकता दी जाती है क्योंकि इसमें खरीदारी को सरल बनाया गया है, स्केलेबल ट्रस्ट-बिल्डिंग, स्मार्ट क्यूरेशन, विक्रेताओं के लिए उपकरण, नए उपभोक्ता खंडों को अनलॉक करना, उच्च मूल्य श्रेणियों की फिर से कल्पना करना और सोशल-कॉमर्स पारिस्थितिकी तंत्र के लिए सक्षम बनाना है। खंडेलवाल ने कहा कि औसतन, लोग प्रतिदिन तीन घंटे ऑनलाइन बिताते हैं - पोस्ट करना, स्क्रॉल करना, वीडियो देखना और मैसेज करना। यह अवधि अवसर की खिड़की है जब ब्रांडों द्वारा तैनात विपणन उपकरण उपभोक्ताओं को लक्षित कर सकते हैं। अन्य बड़े पैमाने पर लेन-देन संबंधी खरीद-बिक्री मॉडल के विपरीत सामाजिक वाणिज्य एक विशिष्ट समुदाय के विकास के इर्द-गिर्द घूमता है। दूसरे शब्दों में ब्रांड निर्माण समर्पित प्रशंसकों या अनुयायियों पर आधारित है जो ब्रांड की प्रशंसा करते हैं और उसकी प्रशंसा करते हैं। उसकी पेशकशों के बारे में टिप्पणी करते हैं और यहां तक कि उसे साझा और प्रचारित भी करते हैं। उन्होंने कहा कि सोशल कॉमर्स का विस्तार होना तय है क्योंकि इसमें पहले से ही विक्रेताओं और खरीदारों दोनों की बड़ी संख्या है और केवल एक चीज की जरूरत है कि इन दोनों सिरों को एक सामंजस्यपूर्ण तरीके से जोड़ा जाए जो कि एक आसान तरीका है। उन्होंने कहा कि देश के हर बाजार में सोशल कॉमर्स की गूंज को ले जाने के लिए कैट पूरे देश में 45 हजार से अधिक व्यापार संघों के अपने सहयोगियों को शामिल करेगा।

कॉलेजों में...

कहा कि विभिन्न क्षेत्रों में भारत की प्रगति से ली गई प्रेरणा के साथ अपने दिमाग को ढालने, युवाओं की ऊर्जा और उत्साह का उपयोग करने का एक अनूठा अवसर है। इन संस्थानों में सेल्फी प्वाइंट राष्ट्रीय गौरव की भावना पैदा करने के लिए एक गतिशील और आकर्षक स्थान के रूप में उभरेंगे और युवाओं के बीच जागरूकता और भावी पीढ़ियों को प्रेरित करना। शिक्षा मंत्रालय पिछले कुछ वर्षों के दौरान देशभक्ति, सांस्कृतिक और राष्ट्रवाद के प्रति जागरूकता पैदा करने के लिए माध्यमिक और उच्च शिक्षा दोनों स्तरों पर विभिन्न पहल कर रहा है। तमिल काशी संगम जैसी पहल दक्षिणी और उत्तरी भारत के बीच छात्र समुदाय को जोड़ रही है और उत्तर पूर्वी राज्यों से देश के मध्य भागों के साथ-साथ सुदूर दक्षिण के बीच अंतर को पाटने के लिए अन्य कार्यक्रम कई अंतरालों पर हो रहे हैं। प्रधानमंत्री के वैश्विक नागरिक के दृष्टिकोण के साथ और आजादी का अमृत महोत्सव के हिस्से के रूप में युवा लेखकों को सलाह देने की प्रधानमंत्री योजना (युवा) देश में पढ़ने, लिखने और पुस्तक संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए युवा और उभरते लेखकों (30 वर्ष से कम) को प्रशिक्षण दे रही है। देश, और विश्व स्तर पर भारत और भारतीय लेखन को प्रोजेक्ट करना। एक अन्य कार्यक्रम में विभिन्न व्यक्तित्वों के योगदान, नए गतिशील शहरों के निर्माण, ऐतिहासिक घटनाओं और अन्य सामाजिक-सांस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक विचारों और विषयों का दस्तावेजीकरण करेगी, जिन्होंने भारत को एक परिपक्व, स्वतंत्र, मजबूत राष्ट्र बनाया है। 1947 अपनी प्राचीन ज्ञान और संस्कृति को प्रगतिशील और आधुनिक दृष्टि से आगे बढ़ाना पहले से ही मौजूद है। यह श्रृंखला देश के युवा पाठकों (12+) को पाठक-अनुकूल तरीके से इन विचारों को प्रदान करने पर केंद्रित है, और चार वैचारिक स्तंभों पर आधारित है: लोग, स्थान, घटनाएँ और थीम। स्वतंत्रता सेनानियों पर 75 पुस्तकों के एक सेट का प्रकाशन भी श्रृंखला का एक हिस्सा है। एक अलग परियोजना 'द्विभाषी पुस्तकें' ने असमिया-अंग्रेजी में द्विभाषी किताबें निकाली हैं। हिंदी-अंग्रेजी, मलयालम-अंग्रेजी; मराठी-अंग्रेजी; उड़िया-अंग्रेजी; पंजाबी-अंग्रेजी; युवा पाठकों की आवश्यकताओं के अनुसार तेलुगु-अंग्रेजी और उर्दू-अंग्रेजी प्रारूप, जबकि भारत की सभी प्रमुख, छोटी और आदिवासी भाषाओं को बढ़ावा देने के उद्देश्य से आदिवासी भाषाओं में किताबें असुरी, भतरी, भीली, बिहो, भूमिज, भूटिया, बिराजिया, बोडो, गारो, गोंडी, हो, हल्बी, खासी, कोकबोरोक, लेप्चा, मिज़ो और संथाली सहित विभिन्न आदिवासी भाषाओं में लाई जा रही हैं। एनबीटी-इंडिया अब जनजातीय भाषाओं में एक नवीन त्रिभाषी प्रारूप में मूल शीर्षक ला रहा है। बड़े पैमाने पर जनता के लिए 360 डिग्री शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए ज्ञान संचार केंद्र जैसी पहल के अलावा; भारतीय ज्ञान प्रणाली श्रृंखला गणित, विज्ञान, खगोल विज्ञान, योग, वास्तुकला, चिकित्सा, कृषि, इंजीनियरिंग, भाषा विज्ञान, खेल सहित अन्य क्षेत्रों में भारतीय ज्ञान प्रणालियों (आईकेएस) पर व्यापक फोकस पर विचार कर रही है।

युद्धविराम के बाद इजराइल ने शुरू किए गाजा पर हवाई हमले

● दक्षिण में हमले की चेतावनी

भाषा। (गाजा पट्टी)

इजराइल की सेना ने शुक्रवार को हमास के साथ युद्धविराम की समयसीमा समाप्त होने के बाद गाजा में हमास के ठिकानों पर लड़ाकू विमानों से हमले किए। इजराइल ने दक्षिणी गाजा के कुछ हिस्सों में पर्चे गिराए हैं, जिनमें लोगों से खान यूनिस शहर स्थित घरों को छोड़ने के लिए कहा गया है। पर्चों में यह भी कहा गया है कि खान यूनिस अब एक "खतरनाक युद्ध क्षेत्रै है। इस दौरान गाजा पट्टी से आ रही तस्वीरों में क्षेत्र के ऊपर घना काला धुआं दिखाई दे रहा है। युद्ध शुरू होने के बाद से गाजा की अधिकतर आबादी दक्षिणी गाजा चली गई है और इन लोगों ने खान यूनिस तथा अन्य स्थानों पर शरण ले रखी है। शुक्रवार को इजराइल की ओर से शुरू किए गए हवाई हमलों में खान यूनिस में एक बड़ी इमारत नष्ट हो गई। इसके कुछ ही देर बाद निवासियों को मलबे में जीवित लोगों की तलाश करते हुए देखा गया। एक घायल व्यक्ति को स्ट्रेचर पर ले जाया गया। हमाद शहर में एक बहुमंजिला आवासीय इमारत का एक अपार्टमेंट हमले में क्षतिग्रस्त हो गया। मगाजी के शरणार्थी शिविर में बचावकर्मियों ने युद्धक विमानों की चपेट में आई एक बड़ी इमारत के मलबे में तलाश शुरू की। गाजा में स्वास्थ्य मंत्रालय के प्रवक्ता अशरफ अल-किद्रा ने बताया कि इजरायली हमलों में 14 लोग मारे गए और दर्जनों घायल हो गए।उधर, इजराइल में गाजा के पास के इलाकों में रॉकेट हमलों की चेतावनी देने वाले सायरन बजने लगे जिससे यह संकेत मिलता है कि हमास ने भी हमले शुरू कर दिए हैं। इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने कहा कि युद्ध फिर से शुरू हो गया क्योंकि हमास ने युद्धविराम की शर्तों का उल्लंघन किया। उन्होंने एक बयान में कहा, उसने सभी महिला बंधकों को रिहा करने के अपने दायित्व को आज पूरा नहीं किया और इजराइली नागरिकों पर रॉकेट दागे हैं। इजराइल और फलस्तीन के चरमपंथी समूह हमास के बीच अस्थाई युद्धविराम शुक्रवार सुबह सात बजे समाप्त हो गया और इसके ठीक आधे घंटे बाद इजराइली सेना ने हमले की घोषणा की। यह युद्धविराम एक सप्ताह पहले 24 नवंबर को शुरू हुआ था। शुरुआत में यह चार दिनों के लिए था और फिर कतर तथा मध्यस्थता में मदद करने वाले देश मिस्र की सहायता से इसे दो दिन के लिए तथा फिर एक दिन के लिए और बढ़ाया गया। सप्ताह भर के युद्धविराम में गाजा में हमास और अन्य समूहों ने 100 से अधिक बंधकों को रिहा किया, जिनमें से अधिकतर इजरायली थे। ले में इजरायल की जेलों से 240 फलस्तीनियों को रिहा किया गया। अभी तक अधिकतर महिलाओं और बच्चों को रिहा किया गया है लेकिन अब भी हमास के कब्जे में कुछ बंधक हैं। हमास का गाजा पर 16 वर्ष से शासन है और माना जा रहा है कि हमास शेष बंधकों खासतौर पर सैनिकों की रिहाई के लिए कड़ी शर्तें रख सकता है। गाजा में अब भी सौ से अधिक बंधक हैं जबकि शेष को रिहा कर दिया गया है। मध्यस्थता में अहम भूमिका निभाने वाले कतर तथा मिस्र ने युद्धविराम को दो और दिन बढ़ाने के प्रयास किए थे। इजराइल पर उसके मुख्य सहयोगी देश अमेरिका की ओर से इस बात का दबाव है कि जब वह हमास के खिलाफ हमले शुरू करे तो इस बात का ध्यान रखे कि इसमें आम नागरिक नहीं मारे जाएं। अमेरिकी विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन ने बृहस्पतिवार को इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू और अन्य अधिकारियों से मुलाकात की।

इजराइल ने फलस्तीनियों से दक्षिणी गाजा छोड़ने को कहा

दीर अल-बलाह (गाजा पट्टी)। इजराइल ने दक्षिणी गाजा के कुछ हिस्सो मे पर्चे गिराए है, जिनमे लोगो से खान यूनिस शहर स्थित घरो को छोड़ने के लिए कहा गया है। पर्चों मे यह भी कहा गया है कि खान यूनिस अब एक खतरनाक युद्ध क्षेत्रै है। क्षेत्र के निवासियो ने यह जानकारी दी। इन पर्चो से संकेत मिलता है कि इज़राइल अपने आक्रमण को व्यापक बनाने की तैयारी कर रहा है, जिसने अब तक गाजा पट्टी के उत्तरी भाग पर बड़े पैमाने पर ध्यान केंद्रित किया है। युद्ध की शुरुआत मे हजारो लोग उत्तरी गाजा से पलायन कर गए थे, जिनमे से कई ने खान यूनिस और दक्षिण के अन्य शहरो मे शरण ली थी।

गाजा पर हमलों के बीच कतर ने कहा–इजराइल–हमास के बीच संघर्ष विराम पर वार्ता जारी

दीर अल-बलाह (गाजा पट्टी)। इजराइल-हमास संघर्ष विराम के लिए मध्यस्थ की भूमिका निभा रहे कतर ने शुक्रवार को कहा कि संघर्ष विराम बरकरार रखने के प्रयास जारी है। कतर ने एक सप्ताह के संघर्ष विराम की समय सीमा समाप्त होने के बाद इजराइल द्वारा बमबारी फिर से शुरू किए जाने पर अफसोस व्यक्त किया। इजराइल और हमास ने एक दूसरे पर संघर्ष विराम की शर्तों का उल्लंघन करने का दोष मढ़ा है। मिस्र के साथ मध्यस्थ के रूप में काम कर रहे कतर ने हमले के लिए इजराइल की भूमिका का संकेत दिया। कतर के विदेश मंत्रालय ने कहा कि युद्ध विराम की समाप्ति के बाद पहले घंटो में गाजा पट्टी पर जारी बमबारी मध्यस्थता के प्रयासों को जटिल बनाती है। इससे क्षेत्र में मानवीय तबाही बढ़ेगी। कतर ने अंतरराष्ट्रीय समुदाय से हिंसा को रोकने के लिए शीघ्रता से आगे बढ़ने का आग्रह किया।

क्विक न्यूज

युद्धविराम के सातवें दिन इजराइल ने और फलस्तीनी कैदियों को रिहा किया

दीर अल बलाह (गाजा पट्टी)। फलस्तीन के चरमपंथी संगठन हमास और इजराइल के बीच अस्थाई युद्धविराम समझौते के तहत बृहस्पतिवार को गाजा पट्टी में हमास की कैद से आठ इजराइली बंधकों को रिहा किया। इजराइली सेना ने यह जानकारी दी। सेना ने बताया कि युद्धविराम समझौते के तहत शुक्रवार तड़के इजराइल ने 30 फलस्तीनी कैदियो को रिहा किया। सात अक्टूबर को इजराइल पर हमास के घातक हमले के बाद इजराइल ने युद्ध का ऐलान किया था। कई हफ्तो तक इजराइली बमबारी और जमीनी अभियान के बाद युद्धविराम का अंतरराष्ट्रीय दबाव बढ़ गया था। युद्ध के दौरान हजारो फलस्तीनी नागरिको की मौत हुई तथा वहां मानवीय संकट पैदा हो गया है। इजराइल ने युद्धविराम खत्म होने के बाद हमास को खत्म करने के लक्ष्य के साथ फिर से युद्ध शुरू करने का संकल्प लिया है। एक वीडियो सामने आया है जिसमें हमास को बंधको को रेड क्रॉस को सौपते हुए दिखाया गया है। वही, इजराइल द्वारा रिहा किए गए 30 फलस्तीनी कैदियो से भरी बस का वेस्ट बैंक मे लोगो ने स्वागत किया। गाजा पट्टी में आठ सप्ताह की कैद के बाद आठ इजराइली बंधक शुक्रवार तड़के रामल्ला शहर पहुंचे।

थाईलैंड के 17 बंधक बैंकॉक में अपने परिवारों से मिले

बैंकॉक। उग्रवादी समूह हमास द्वारा रिहा किए गए थाईलैंड के 17 बंधको के समूह का स्वदेश पहुंचने पर बैंकॉक के अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उनके परिजनो एवं मित्रो, अधिकारियो और पत्रकारो ने बृहस्पतिवार को स्वागत किया। ए 17 लोग थाईलैंड के उन 23 लोगो में शामिल है, जिन्हें हमास ने रिहा किया है। थाईलैंड के छह लोग अब भी इजराइल में है क्योकि चिकित्सको का कहना है कि वे अभी यात्रा करने के लिए स्वस्थ नही है। थाईलैंड के अधिकारियो ने कहा है कि थाईलैंड के नौ अन्य लोग गाजा मे अब भी हमास के बंधक है। उत्तर पूर्वी प्रांत नाखोन फनोम (57) से आई रात्री संपन अपने बेटे बुड्डी साएंगबून से मिलने हवाई अड्डे पहुंची। उन्होंने कहा, युद्ध शुरू होने के बाद से मै अपने बेटे से संपर्क नही कर पा रही थी। एक महीने और 18 दिन बीत जाने के बाद मुझे उसके जीवित नही होने की आशंका थी। उन्होंने कहा, मुझे किसी चमत्कार की आस थी और यह हो गया। वह जीवित बच गया। रिहा किए गए थाईलैंड के लोगो में से कई लोग थाईलैंड और इजराइल के झंडो की तस्वीर वाली सफेद टी-शर्ट पहने इजराइली विमानन कंपनी एल अल की उड़ान से अपने देश पहुंचे। इजराइल पर हमास ने सात अक्टूबर को अप्रत्याशित हमला कर सैकड़ो इजराइलियो और थाईलैंड के 38 लोगो की हत्या कर दी थी। हमास के इस हमले से पहले इजराइल मे थाईलैंड के करीब 30,000 लोग काम करते थे। हमास के हमले के बाद इजराइल ने हवाई और जमीनी हमले किए जिनमे हजारो लोगो की मौत हो गई। इजराइल ने हमास को नष्ट करने का संकल्प लिया है।

वैज्ञानिकों ने जीका वायरस के खिलाफ सुई रहित टीका पैच विकसित किया

वाशिंगटन। वैज्ञानिको ने मच्छर जनित जीका वायरस के खिलाफ सुई रहित टीका पैच विकसित किया है जो लगाने मे आसान होगा। ऑस्ट्रेलिया में एडिलेड विश्वविद्यालय के अनुसंधानकर्ताओं द्वारा विकसित प्रायोगिक टीके ने चूहो में जीका वायरस के प्रति प्रभावी प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया उत्पन्न की। इस टीके से संबंधित विवरण मॉलिक्यूलर थेरेपी न्यूक्लिक एसिड पत्रिका मे प्रकाशित हुआ है। जीका वायरस प्रशांत, दक्षिण पूर्व एशिया, भारत, अफ्रीका और दक्षिण एवं मध्य अमेरिका के लोगो के लिए खतरा है। फरवरी 2016 मे विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने तब अंतरराष्ट्रीय चिंता का सार्वजनिक स्वास्थ्य आपातकाल घोषित किया था जब जीका वायरस लातिन अमेरिका के 40 देशो में फैल गया, जिससे छह महीने की अवधि में 15 लाख से अधिक पुष्ट या संदिग्ध मामले सामने आए। टीका पैच प्रौद्योगिकी के मुख्य लक्ष्यों में से एक है। पैच में पानी में घुलनशील करीब 100 सुइयां होती हैं जिनमें टीका होता है। पैच की मदद से लगाए जाने वाले टीके में ए सुइयां मिनटो में त्वचा के भीतर घुल जाती हैं।

नित्यानंद के काल्पनिक देश के साथ समझौते पर हस्ताक्षर करने के बाद पराग्वे के अधिकारी ने इस्तीफा दिया

ब्यूनस आयर्स (अर्जेंटीना)। पराग्वे सरकार के एक अधिकारी ने यह खुलासा होने के बाद इस्तीफा दे दिया कि उसने एक भगोड़े भारतीय गुरु के काल्पनिक देश के प्रतिनिधियो के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए है, जिन पर दक्षिण अमेरिकी देश में कई स्थानीय अधिकारियो को भी धोखा देने का आरोप है। इस रहस्योद्घाटन के बाद सोशल मीडिया पर खूब मज़ाक उड़ाया गया, लेकिन यह शायद पहली बार है कि काल्पनिक देश संयुक्त राज्य कैलासा के स्वघोषित प्रतिनिधियो ने अंतरराष्ट्रीय नेताओं को धोखा दिया है। इस साल की शुरुआत मे, वे जिनेवा मे संयुक्त राष्ट्र समिति की बैठक मे भाग लेने मे कामयाब रहे और अमेरिका तथा कनाडा मे स्थानीय नेताओं के साथ समझौतो पर भी हस्ताक्षर किए। काल्पनिक देश के प्रतिनिधियो के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करने का खुलासा होने पर अर्नाल्डो चमोरो ने बुधवार को पराग्वे के कृषि मंत्रालय के स्टाफ प्रमुख के पद से इस्तीफा दे दिया। सोशल मीडिया पर पोस्ट की गई समझौते की एक प्रति के अनुसार, अन्य बातो के अलावा, 16 अक्टूबर कीै उद्घोषणौ मे संयुक्त राज्य कैलासा के साथ राजनयिक संबंध स्थापित करने पर विचार करने और संयुक्त राष्ट्र सहित विभिन्न अंतरराष्ट्रीय संगठनो मे इसके प्रशासन का संप्रभु एवं स्वतंत्र देश के रूप मे समर्थन करने के लिए पराग्वे सरकार को सिफारिश की गई। चमोरो ने एक रेडियो साक्षात्कार मे कहा कि काल्पनिक देश के प्रतिनिधियो ने उनसे और कृषि मंत्री कार्लोस जिमेनेज से मुलाकात की थी।

दुबई में नए साल का जश्न की तैयारी शुरू

दुबई। नए साल के लिए उल्टी गिनती शुरू हो चुकी हैए ऐसे में दुबई शहर के निवासियों और आगंतुकों के लिए ढेरों ऐसे आयोजन ला रहा है जो 2024 के स्वागत के जश्न को सही मायनों में यादगार बना देंगे। शानदार आतिशबाजी से लेकर एक्सक्लुज़िव पार्टी तक शहर में कई ऐसे कार्यक्रम आयोजित होने जा रहे हैं, जिनके साथ आप अनूठे और यादगार तरीके से नई यात्रा की शुरूआत कर सकते हैं। 31 दिसम्बर को आइकोनिक बुर्ज खलीफ़ा पर शानदार आतिशबाजी का आनंद उठा सकते हैं,यह आतिशबाजी रात में आसमान को जगमगा कर नए साल के स्वागत के लिए बेहतरीन कैनवास बनाएगी। पलाज़ो वर्साचे दुबई ब्यूटी एण्ड द बीस्ट की थीम के साथ आगंतुकों को थिएटर का शानदार अनुभव प्रदान करने के लिए तैयार है। शाम के भोजन के साथ.साथ ब्यूटी एण्ड द बीस्ट की क्लासिक स्टोरी पर आधारित लाईव एंटरटेनमेन्ट का लुत्फ़उठा सकते हैं। 31 दिसम्बर की पूर्व संध्या पर टैरेस पर मेहमानों का स्वागत वैलकम ड्रिंक और कैनापीज़ के साथ किया जाएगा। और मध्यरात्रि के समय दुबई क्रीक पर विशाल आतिशबाजी शो भी होगा। मल्टी सेंसरी रेस्टोरेन्ट लाउंज सीई ला सिक्स दुबई में दुबई के ग्लैमर का लुत्फ़उठाएं। यह रेस्टोरेन्ट मेहमानों को एंटरटेनमेन्ट के बीच 31 दिसम्बर के भव्य जश्न के लिए आमंत्रित कर रहा है।

पाकिस्तान में एक व्यक्ति ने पत्नी, तीन बेटियों की हत्या करने के बाद आत्महत्या की

लाहौर। पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में एक व्यक्ति ने आर्थिक तंगी के कारण अपनी पत्नी और तीन बेटियो की हथौड़ा मारकर कथित तौर पर हत्या करने के बाद आत्महत्या कर ली। पुलिस ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। पुलिस ने बताया कि यह घटना बृहस्पतिवार रात लाहौर से लगभग 130 किलोमीटर दूर फैसलाबाद जिले में हुई। इसने बताया कि ताहिर परवेज नामक व्यक्ति ने पहले अपनी पत्नी और तीन बेटियों को नशीला पदार्थ खिलाया और फिर उनकी हथौड़ा मारकर हत्या कर दी। बेटियो की उम्र दस से 16 साल के बीच बताई गई है।पुलिस ने बताया कि उन्हे मारने के बाद परवेज ने नीद की गोलियां खाकर आत्महत्या कर ली।

इराक के पूर्वी दियाला प्रांत में हमला, 11 लोगों की मौत

बगदाद। पूर्वी इराक मे विस्फोटको और बंदूकों से लैस एक समूह द्वारा किए गए हमले में 11 लोगो की मौत हो गई। सुरक्षा अधिकारियो ने शुक्रवार को यह जानकारी दी।उन्होंने बताया कि ए हमले बृहस्पतिवार रात दियाला प्रांत के मुकदादियाह इलाके में हुए।दो सुरक्षा अधिकारियो ने नाम न छापने की शर्त पर कहा कि सड़क किनारे एक बम विस्फोट हुआ और बंदूकधारियो ने बचावकर्मियो और आसपास खड़े लोगों पर गोलीबारी शुरू कर दी।अधिकारियो ने बताया कि सभी पीड़ति आम नागरिक थे।

ईरान ने जमानत पर रिहा हुए रैपर को फिर से जेल भेजा

दुबई। ईरान ने एक लोकप्रिय रैपर को जमानत पर जेल से रिहा होने के दो सप्ताह के भीतर फिर से जेल भेज दिया। ईरान की एक समाचार वेबसाइट ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी।ईरान की न्यायपालिका से संबद्ध एक ऑनलाइन समाचार पोर्टल मिजानऑनलाइन.आईआर ने कहा कि अधिकारियो ने झूठ फैलाने और जनमत का उल्लंघन करने के एक नए आरोप के तहत सालेही नामक रैपर को गिरफ्तार किया।

फिलीपीन ने निगरानी केंद्र का परिचालन शुरू किया

थिटु आइलैंड (दक्षिण चीन सागर)। फिलीपीन के तटरक्षक बल ने चीनी पोतों पर नजर रखने के लिए विवादित दक्षिण चीन सागर मे अपने कब्जे वाले एक दूरस्थ द्वीप पर शुक्रवार को नए निगरानी केंद्र का परिचालन शुरू कर दिया। यह कदम रणनीतिक जलमार्ग मे चीन की बढ़ती आक्रामक गतिविधियों के चलते उठाया गया है। इस साल विवादित जलक्षेत्र मे चीन और फिलीपीन के पोतो के बीच टकराव तेज हो गया, जिसके परिणामस्वरूप अक्टूबर मे फिलीपीनी समुद्री बल के कब्जे वाले एक अन्य विवादित द्वीप सेकंड थॉमस शोल के पास मामूली लेकिन खतरनाक झड़पे हुई।

लंदन की नदी में मृत मिला भारतीय छात्र

लंदन। ब्रिटेन में पिछले महीने लापता हुआ एक भारतीय छात्र यहां टेम्स नदी में मृत पाया गया है। पुलिस ने बताया कि मीतकुमार पटेल (23) सितंबर में उच्च अध्ययन के लिए ब्रिटेन पहुंचे थे और 17 नवंबर को उनके लापता होने की सूचना मिली थी। मेट्रोपॉलिटन पुलिस को 21 नवंबर को पूर्वी लंदन के कैनरी घाट क्षेत्र के निकट टेम्स नदी में उनका शव मिला। पुलिस ने कहा, इस मामले को संदिग्ध नहीं माना जा रहा है। मीतकुमार के एक रिश्तेदार पार्थ पटेल ने उनके परिवार की मदद के वास्ते धनराशि जुटाने के लिए एक ऑनलाइन अभियान गो फंड मी शुरू किया है। धनराशि जुटाने के लिए एक अपील की गई है जिसमें कहा गया है, मीतकुमार पटेल 23 वर्षीय एक युवक थे जो 19 सितंबर 2023 को उच्च अध्ययन के लिए ब्रिटेन आए थे। इसमें कहा गया था, वह एक किसान परिवार से थे और गांव में रहा करते थे। वह 17 नवंबर 2023 से लापता थे। अब 21 नवंबर को पुलिस को उनका शव मिला है। यह हम सभी के लिए दुखद है। इसलिए, हमने उनके परिवार की मदद के लिए धन जुटाने और उनके शव को भारत भेजने का भी फैसला किया।

भ्रष्टाचार रोधी निकाय ने इमरान व उनकी पत्नी के खिलाफ भ्रष्टाचार का मामला दायर किया

इस्लामाबाद। पाकिस्तान की एक जवाबदेही अदालत ने शुक्रवार को जेल में बंद पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान और उनकी पत्नी समेत अन्य संदिग्ध व्यक्तियों के खिलाफ भ्रष्टाचार का एक मामला दायर किया। राष्ट्रीय जवाबदेही ब्यूरो (एनएबी) के उप-अभियोजक जनरल मुजफ्फर अब्बासी और जांच अधिकारी उमर नदीम ने इस्लामाबाद की जवाबदेही अदालत में मामला दायर किया। इस मामले में कुल आठ लोगों को आरोपी बनाया गया है जिनमें पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) पार्टी प्रमुख खान (71) के अलावा उनकी पत्नी बुशरा बीबी, उनकी दोस्त फरहत शहजादी उर्फ फराह गोगी, पीटीआई नेता जुल्फी बुखारी, शहजाद अकबर और बैरिस्टर जिया-उल-मुस्तफा नसीम शामिल हैं। जियो न्यूज की खबर के अनुसार, एनएबी ने शुक्रवार को 19 करोड़ ब्रिटिश पाउंड (50 अरब पाकिस्तानी रुपए) के निपटान मामले में पूर्व प्रधानमंत्री खान, उनकी पत्नी और अन्य संदिग्धों के खिलाफ भ्रष्टाचार का मामला दायर किया। यह मामला तब सामने आया जब भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो ने अपनी जांच पूरी कर ली और अदालत ने 19 करोड़ ब्रिटिश पाउंड से जुड़े अल-कादिर ट्रस्ट भ्रष्टाचार मामले में पीटीआई प्रमुख को न्यायिक हिरासत में भेज दिया है। अल-कादिर ट्रस्ट मामला 19 करोड़ ब्रिटिश पाउंड के निपटान से जुड़ा है। ब्रिटेन की राष्ट्रीय अपराध एजेंसी ने पाकिस्तान के एक दिग्गज भूमि संबंधी कारोबारी से रकम वसूलने के बाद इसे पाकिस्तान भेजा था। उस समय प्रधानमंत्री होने के नाते खान ने राष्ट्रीय खजाने में इस रकम को जमा कराने के बजाय व्यवसाई को अनुमति दे दी कि वह कुछ साल पहले उच्चतम न्यायालय द्वारा उस पर लगाए गए लगभग 450 अरब रुपए के जुर्माने का आंशिक भुगतान करने के लिए इस राशि का उपयोग करे।

पाक अदालत सुनवाई अडियाला जेल में करेगी

इस्लामाबाद। पाकिस्तान की एक विशेष अदालत ने जेल मे बंद पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान के खिलाफ गोपनीय दस्तावेज लीक होने से जुड़े मामले मे सरकार से मंजूरी मिलने के बाद शुक्रवार को फैसला किया कि रावलपिंडी की अडियाला जेल में शनिवार को खुली सुनवाई की जाएगी। न्यायाधीश अबुअल हसनत जुल्करनैन ने संघीय न्यायिक परिसर भवन में पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) प्रमुख खान और पूर्व विदेश मंत्री शाह महमूद कुरैशी के खिलाफ सुनवाई की, क्योकि सरकार ने जेल मे मुकदमे की औपचारिक अनुमति नही दी थी। हालांकि, सुनवाई के दौरान, अदालत को सूचित किया गया कि कानून और न्याय मंत्रालय द्वारा जारी एक औपचारिक अधिसूचना प्राप्त हुई है, जिसमे गोपनीय दस्तावेज लीक होने के मामले मे आरोपियो पर जेल मे मुकदमे की अनुमति दी गई है।

अमेरिका में भारतीय छात्र को बंधक बनाकर काम कराने में तीन गिरफ्तार

भाषा। वाशिंगटन

अमेरिका में अधिकारियों ने 20 वर्षीय एक भारतीय छात्र को बचाया है, जिसे महीनों तक बंधक बनाकर रखा गया, बेरहमी से पीटा गया और कई बार शौचालय भी नहीं जाने दिया गया। इस भारतीय युवक के चचेरे भाई और दो अन्य लोगों ने ही उसके साथ ऐसा बर्ताव किया और तीन घरों में काम करने के लिए मजबूर किया। इस घटना को पूरी तरह अमानवीय करार दिया गया है। पीड़ति छात्र का नाम उजागर नहीं किया गया है। उसने कई महीने अमेरिका के मिसौरी राज्य में तीन घरों में बंधक की तरह बिताए हैं। पुलिस ने बुधवार को सेंट चार्ल्स काउंटी में एक घर में छापा मारा और वेंकटेश आर सत्तारू, श्रवण वर्मा पेनूमेच्छा और निखिल वर्मा पेनमात्सा को गिरफ्तार कर लिया। बृहस्पतिवार को उन पर मानव तस्करी, अपहरण तथा हमले के अपराधों में मामला दर्ज किया गया। एक जागरूक नागरिक ने पुलिस को फोन कर हालात की जानकारी दी जिसके बाद उसने तफ्तीश शुरू की।

अच्छा है, उचित है : ब्लिंकन ने सिख अलगाववादी की हत्या की कोशिश के आरोपों पर जांच को लेकर कहा

भाषा। वाशिंगटन

अमेरिका ने अपनी धरती पर एक सिख अलगाववादी की हत्या की साजिश रचने में एक भारतीय अधिकारी के शामिल होने के आरोपों पर भारत की ओर से जांच कराए जाने की घोषणा को अच्छा और उचित करार दिया तथा कहा कि वह जांच के निष्कर्षों को लेकर आशान्वित है। बुधवार को अमेरिका में संघीय अभियोजकों ने आरोप लगाया कि निखिल गुप्ता नाम के व्यक्ति ने एक भारतीय सरकारी अधिकारी के साथ मिलकर सिख अलगाववादी गुरपतवंत सिंह पन्नू की हत्या की साजिश रची थी जो सफल नहीं हो पाई। पन्नू के पास अमेरिका तथा कनाडा की नागरिकता है। भारत ने अमेरिकी धरती पर सिख अलगाववादी की हत्या की साजिश रचने के आरोपी व्यक्ति के साथ एक भारतीय अधिकारी को अमेरिका द्वारा जोड़े जाने को बृहस्पतिवार को चिंता का विषय बताया। विदेश मंत्रालय ने कहा कि आरोपों की जांच के लिए गठित समिति के निष्कर्षों के आधार पर आगे की कार्वाई की जाएगी। अमेरिका के विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन ने अपने साथ तेल अवीव में मौजूद पत्रकारों से कहा, सरकार ने आज घोषणा की है कि वह जांच करा रही है, तो यह अच्छा है और उचित है।

गुरुद्वारा प्रबंधन ने तरणजीत सिंह संधू के साथ हुए अभद्र व्यवहार के लिए माफी मांगी

वाशिंगटन। अमेरिका मे लॉन्ग आइलैंड गुरुद्वारा प्रबंधन ने भारतीय राजदूत तरणजीत सिंह संधू के सप्ताहांत दौरे के दौरान संगत के कुछ सदस्यो द्वारा किए गए अभद्र व्यवहार के लिए उनसे माफी मांगी है। न्यूयॉर्क मे लॉन्ग आईलैंड हिक्सविले स्थित गुरुद्वारा गुरु नानक दरबार की प्रबंधन समिति ने 29 नवंबर को राजदूत को लिखे एक पत्र मे कहा, किसी भी असुविधा के लिए हम माफी मांगते है और आपके अगले दौरे पर एक सहज अनुभव सुनिश्चित करने का वादा करते है। न्यूयॉर्क मे भारत के महावाणिज्यदूत रणधीर जायसवाल के साथ संधू ने रविवार 26 नवंबर को लॉन्ग आइलैंड गुरुद्वारे का दौरा किया था। गुरुद्वारा प्रबंधन समिति ने अपने पत्र मे कहा, यह खेद की बात है कि आपके दौरे के दौरान एक घटना घटी।

ब्रिटेनः महाराजा के नस्लीय विवाद में उलझने पर बकिंघम पैलेस सभी विकल्पों पर विचार कर रहा

लंदन। ब्रिटेन में महाराजा चार्ल्स तृतीय और केट मिडलटन के एक नस्लीय विवाद में उलझने पर बकिंघम पैलेस के अधिकारियों ने रविवार को कहा कि वे सभी विकल्पों पर विचार कर रहे हैं जिनमें कानूनी विकल्प भी शामिल है। यह विवाद एक विवादित नई पुस्तक के डच संस्करण के प्रकाशित होने के बाद उपजा जिसमें उनका गलत तरीके से उल्लेख किया गया है। ओमिड स्कोबी की पुस्तक एंडगेमः इनसाइड द रॉयल फैमिली एंड द मोनार्कीज़ फाइट फॉर सर्वाइवल ने इस सप्ताह दुनियाभर में पुस्तकों की दुकानों पर जगह बनाई। इस पुस्तक में उस आरोप को दोहराया गया कि ब्रिटिश शाही परिवार के वरिष्ठ सदस्यों ने प्रिंस आर्ची की त्वचा के रंग को लेकर सवाल उठाए थे। प्रिंस हैरी और मेगन मर्कले के बेटे प्रिंस आर्ची का जन्म मई 2019 में हुआ। अफ्रीकी अमेरिकी मेगन ने दो साल पहले दंपति का ओपरा विन्फ्रे द्वारा साक्षात्कार लेने के दौरान एक अज्ञात शाही व्यक्ति द्वारा उनके पहले बच्चे की त्वचा के रंग का उल्लेख किए जाने का मुद्दा उठाया था।स्कोबी की नई किताब के मुख्य संस्करण में राजघराने के वरिष्ठ सदस्यों का नाम नहीं लिया गया था, लेकिन इसके डच संस्करण में आरोप लगाया गया है कि वह किंग चार्ल्स और प्रिंसेस ऑफ वेल्स केट ही थे, जिन्होंने प्रिंस आर्ची के त्वचा के रंग पर चर्चा की थी।

क्या हम एक विशाल शून्य में रहते हैं ?

● यह ब्रह्मांड के विस्तार की पहेली को सुलझा सकता है

भाषा। लंदन

ब्रह्मांड विज्ञान में सबसे बड़े रहस्यों में से एक वह दर है जिस गति से ब्रह्मांड का विस्तार हो रहा है। इसकी भविष्यवाणी ब्रह्मांड विज्ञान के मानक मॉडल का उपयोग करके की जा सकती है, जिसे लैम्ब्डा-कोल्ड डार्क मैटर के रूप में भी जाना जाता है। यह मॉडल बिग बैंग - तथाकथित कॉस्मिक माइक्रोवेव बैकग्राउंड (सीएमबी) से बचे प्रकाश के विस्तृत अवलोकन पर आधारित है।ब्रह्माण्ड के विस्तार के कारण आकाशगंगाएँ एक दूसरे से दूर चली जाती हैं। वे हमसे जितना दूर होते हैं, उतनी ही तेज़ी से आगे बढ़ते हैं। आकाशगंगा की गति और दूरी के बीच का संबंध "हबल स्थिरांकै द्वारा नियंत्रित होता है, जो लगभग 43 मील (70 किमी) प्रति सेकंड प्रति मेगापारसेक (खगोल विज्ञान में लंबाई की एक इकाई) है। इसका मतलब यह है कि एक आकाशगंगा हमसे हर दस लाख प्रकाश वर्ष दूर होने पर लगभग 50,000 मील प्रति घंटा की रफ्तार पकड़ लेती है।लेकिन दुर्भाग्य से मानक मॉडल के लिए, इस मूल्य पर हाल ही में विवाद हुआ है, जिसके कारण वैज्ञानिक इसे "हबल तनावै कहते हैं। जब हम आस-पास की आकाशगंगाओं और सुपरनोवा (विस्फोट करने वाले तारे) का उपयोग करके विस्तार दर को मापते हैं, तो यह सीएमबी के आधार पर भविष्यवाणी की तुलना में 10ৃ अधिक होती है।अपने नए पेपर में, हम एक संभावित स्पष्टीकरण प्रस्तुत करते हैं: कि हम अंतरिक्ष में एक विशाल शून्य (औसत घनत्व से कम क्षेत्र) में रहते हैं। हम दिखाते हैं कि यह शून्य से पदार्थ के बहिप्रर्वाह के माध्यम से स्थानीय माप को बढ़ा सकता है। बहिप्रर्वाह तब उत्पन्न होता है जब शून्य के आसपास के सघन क्षेत्र इसे खींचकर अलग करते हैं - वे शून्य के अंदर कम घनत्व वाले पदार्थ की तुलना में अधिक बड़ा गुरुत्वाकर्षण खिंचाव लगाते हैं। इस परिदृश्य में, हमें शून्य के केंद्र के पास लगभग एक अरब प्रकाश वर्ष की त्रिज्या में और समग्र ब्रह्मांड के औसत से लगभग 20ৃ कम घनत्व के साथ रहने की आवश्यकता होगी - इसलिए पूरी तरह से खाली नहीं।मानक मॉडल में इतना बड़ा और गहरा शून्य अप्रत्याशित है - और इसलिए विवादास्पद है। सीएमबी नवजात ब्रह्मांड में संरचना की एक झलक देता है, यह सुझाव देता है कि आज पदार्थ को समान रूप से फैलाया जाना चाहिए। हालाँकि, सीधे विभिन्न क्षेत्रों में आकाशगंगाओं की संख्या की गणना करने से वास्तव में पता चलता है कि हम एक स्थानीय शून्य में हैं।

THE PIONEER CLASSIFIEDS

CHANGE OF NAME

I, Kochuthressia Thankanchan W/o Mr. Thankachan K V R/o AD-94, Shalimar Bagh, Delhi- 110088 hereby confirm that my name mentioned in my Pension Account No. 3061000300190940 in Punjab National Bank as Lilly Kotteppillikudy Thankanchan. That Kochuthressia Thankanchan And Lilly Kotteppillikudy Thankanchan are one and the same person.
PD(208)A

TATA POWER-DDL
टाटा पावर दिल्ली डिस्ट्रिब्यूशन लिमिटेड
टाटा पावर एवं दिल्ली सरकार का संयुक्त उपक्रम
रजि. आफिस : एनडीपीएल हाउस, हडसन लाइन, किंग्सवे केम्प, दिल्ली–110009
फोन : 66112222, फैक्स : 27468042, ईमेल : TPDDL@tatapower-ddl.com
CIN No. : U40109DL2001PLC111526, वेबसाइट : www.tatapower-ddl.com

निविदा सूचना आमंत्रित Dec 02, 2023

टाटा पावर–डीडीएल निम्न मदों के लिए निविदाएं आमंत्रित करता है:

निविदा पूछताछ सं. कार्य का विवरण	अनुमानित लागत/धरोहर जमा राशि (रु)	बोली दस्तावेज की बिक्री	बोली जमा कराने की अंतिम तारीख और समय/ निविदा खोलने की तारीख और समय
TPDDL/ENGG/ENQ/200001611/23-24 RC for Supply of 1-P Static Meter (10-60A)	9.25 Crs/ 9,00,000	02.12.2023	26.12.2023;1500 Hrs/ 26.12.2023;1530 Hrs
TPDDL/ENGG/ENQ/200001612/23-24 SITC of 3-Ph Smart Meter Test Benches	2.35 Crs/ 2,75,000	05.12.2023	26.12.2023;1600 Hrs/ 26.12.2023;1630 Hrs

सम्पूर्ण निविदा एवं शुद्धिपत्र दस्तावेज हमारी वेबसाइट पर उपलब्ध
website www.tatapower-ddl.com→Vendor Zone →Tender / Corrigendum Documents
Contracts - 011-66112222

सार्वजनिक सूचना

ICICI Bank
शाखा कार्यालय : आईसीआईसीआई बैंक लि., लैंडमार्क बिल्डिंग, चतुर्थ तल, 228ए, एजेसी बोस रोड, कोलकाता–700020
सीआईएन : L65190GJ1994PLC021012, www.icicibank.com

एतद्द्वारा सूचना दी जाती है कि निम्नलिखित कर्जदार/रों ने उनके द्वारा बैंक से प्राप्त की गई ऋण सुविधाओं के मूलधन और ब्याज के भुगतान में चूक की है और ये ऋण अनार्जक आस्तियों (एनपीए) के रूप में श्रेणीबद्ध किए गए हैं। उनको, वित्तीय आस्तियों का प्रतिभूतिकरण और पुनर्निर्माण तथा प्रतिभूति हित प्रवर्तन अधिनियम, 2002 की धारा 13 (2) के अधीन निम्नवर्णित तिथि को एक सूचना उनके अंतिम ज्ञात पतों पर प्रेषित की गई थी, जोकि तामील नहीं की जा सकी और इसलिए उनको इस सार्वजनिक सूचना द्वारा अधिसूचित किया जा रहा है।

क्र. सं.	कर्जदार/सह-कर्जदार/गारंटर का नाम (ऋण खाता संख्या) एवं पता	प्रत्याभूत आस्ति/प्रवर्तित की जाने वाली आस्ति का सम्पति पता	प्रेषित सूचना की तिथि/सूचना की तिथि तक बकाया राशि	एनपीए तिथि
1.	सुप्रकाश प्रधान/गायत्री पात्रा/शांतनु कुमार प्रधान/गिरिजा कुमार प्रधान/एस/ओ सुभाष चंद्र प्रधान मांडियापल्ली करापल्ली रेंज आईलैंड ओडिशा, गंजाम –760001/ एलबीबीईपी00005412657/एलबीबीबीएस00005607971	प्लॉट नंबर 435, खाता नंबर 1459, ग्राम संकर नया नाम बड़ाबाजार मौजा पी.एस. बड़ाबाजार, एस.आर.ओ. बरहामपुर–1, जिला गंजाम, ओडिशा (क्षेत्रफल परिमाप एसी. 0.092 डेसीमल)	30–09–2023 रू. 83,06,390/–	03–06–2023

सूचना प्रदान करने हेतु वैकल्पिक उपाय किए जा रहे हैं। उपरोक्त कर्जदार/रों तथा/अथवा उनके गारंटरों (जहां कहीं लागू है) को बकाया राशि का भुगतान धारा इस सूचना के प्रकाशन की तिथि से 60 दिन के भीतर करने की सलाह दी जाती है, जिसमें विफल रहने की स्थिति में, आगे वित्तीय आस्तियों का प्रतिभूतिकरण और पुनर्निर्माण तथा प्रतिभूति हित प्रवर्तन अधिनियम, 2002, के प्रावधानों के अनुसार कदम उठाए जाएंगे।
तिथि : 02 दिसम्बर, 2023
स्थान : दिल्ली
प्राधिकृत अधिकारी
आईसीआईसीआई बैंक लिमिटेड

पायनियर
नई दिल्ली , शनिवार, 2 दिसंबर 2023

नागरिक ही बनाते हैं विकसित राष्ट्र : शाह

भाषा। वेरावल (गुजरात)

झारखंड में एक कार्यक्रम के दौरान गृहमंत्री अमित शाह

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने शुक्रवार को कहा कि केवल नागरिक ही भारत को एक विकसित और आत्मनिर्भर देश बना सकते हैं, न कि राज्य या केंद्र सरकारें। वह प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा पिछले माह शुरू की गई विकासित भारत संकल्प यात्रा के स्वागत के लिए गुजरात के गिर सोमनाथ जिले के वेरावल शहर के पास चंदुवाव गांव में आयोजित एक समारोह में बोल रहे थे। शाह ने कहा, सरकार, चाहे वह राज्य की हो या केंद्र की, भारत को एक विकसित देश नहीं बना सकती। केवल 130 करोड़ नागरिक भारत को एक विकसित और आत्मनिर्भर देश बना सकते हैं। शाह ने कहा कि विकासित भारत संकल्प यात्रा 70 करोड़ जरूरतमंद नागरिकों के जीवन को बेहतर बनाने का एक प्रयास है और अधिकारियों से सभी योजनाओं का लाभ 100 फीसदी लाभर्थियों तक पहुंचाने का लक्ष्य रखने का आग्रह किया ताकि कोई भी व्यक्ति पीछे न छूटे। शाह ने कहा कि छोटे और गरीब किसानों को अब पीएम किसान सम्मान निधि योजना के तहत हर साल छह हजार रुपए मिल रहे हैं। उन्होंने कहा, कई सरकारों ने वोट पाने के लिए कृषि ऋण माफी का वादा किया था, लेकिन यह नरेन्द्र मोदी ही थे जिन्होंने यह सुनिश्चित किया कि 2.5 एकड़ से कम जमीन वाले किसानों को कर्ज लेने की जरूरत नहीं है क्योंकि सरकार द्वारा दिए गए छह हजार रुपए से खाद, बीज और कीटनाशक की लागत पूरी हो जाएगी। शाह ने कहा, हम भारत को तभी विकसित देश कह सकते हैं जब हम विकसित हो जाएंगे। हमने यह सुनिश्चित करने का संकल्प लिया है कि कोई भी पीछे न रह जाए। इसीलिए यह यात्रा 26 जनवरी तक देश की प्रत्एक ग्राम पंचायत में जाएगी ताकि जो लोग अभी तक कवर नहीं हुए हैं वे फॉर्म भरकर इन

नीति निर्माताओं को आपदा जोखिमों के प्रति संवेदनशील होना होगा: रिजीजू

देहरादून। केंद्रीय मंत्री किरेन रिजिजू ने शुक्रवार को कहा कि नीति निर्माताओं को प्राकृतिक आपदाओं की बढ़ती बारंबारता और तीव्रता के मद्देनजर आपदा जोखिम में कमी और लचीलेपन की जरूरत के प्रति संवेदनशील होना होगा। यहां छठे विश्व आपदा प्रबंधन कांग्रेस के समापन समारोह में भाग लेते हुए रिजिजू ने कहा, अगर हम तैयार नही रहेंगे, तो एक आपदा भी सब कुछ तबाह कर सकती है और सभी विकास प्रयासों को बेअसर कर सकती है। उन्होंने कहा, आपदाओं की बढ़ती बारंबारता और तीव्रता को ध्यान में रखते हुए नीति निर्माताओं को आपदा जोखिम में कमी लाने और लचीलेपन की आवश्यकता के प्रति संवेदनशील होना चाहिए। हमारी नीतियों को इन चीजों को ध्यान में रखकर तैयार करने की जरूरत है ताकि चाहे रिक्टर पैमाने पर सात की तीव्रता का भी भूकंप आए, लोग सुरक्षित रहें।

गुजरात में छह माह में दिल का दौरा पड़ने से1,052 मौतें, 80 फीसदी 11-25 आयु वर्ग के : शिक्षा मंत्री

अहमदाबाद। गुजरात के शिक्षा मंत्री कुबेर डिंडोर ने शुक्रवार को कहा कि पिछले छह माह के दौरान राज्य में दिल का दौरा पड़ने से कुल ।,052 लोग जान गंवा चुके हैं, जिनमें से 80 फीसदी 11-25 आयु वर्ग के थे। डिंडोर ने बताया कि दिल का दौरा पड़ने के मामलों को देखते हुए लगभग दो लाख स्कूल शिक्षकों और कॉलेज प्राध्यापकों को कार्डियोपल्मोनरी रिससिटेशन का प्रशिक्षण दिया जाएगा। गुजरात में पिछले छह माह में दिल का दौरा पड़ने से ।,052 लोगों की मौत हो चुकी है। इनमें से लगभग 80 फीसदी 11 से 25 वर्ष के थे और इन छात्रों और युवाओं में मोटापे की शिकायत भी नहीं थी। 108 नंबर एम्बुलेंस सेवा को हृदय रोग संबंधित 173 कॉल प्रति दिन औसतन प्राप्त होती हैं। राज्य शिक्षा विभाग की नई पहल के तहत लगभग दो लाख स्कूल और कॉलेज शिक्षकों को सीपीआर का प्रशिक्षण देने के लिए तीन से 17 दिसंबर के बीच 37 मेडिकल कॉलेज में शिविर आयोजित किए जाएंगे।

नौकरी के बदले नकदी घोटाला मामले में असम के 21 अधिकारी निलंबित

भाषा। गुवाहाटी

असम सरकार ने असम लोक सेवा आयोग (एपीएससी) में नौकरी के बदले नकदी घोटाले में कथित संलिप्तता के लिए राज्य की लोक, पुलिस और संबद्ध सेवा के 21 अधिकारियों को निलंबित कर दिया है। आधिकारिक सूत्रों ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। बृहस्पतिवार को जारी आदेशों के माध्यम से निलंबित किए गए 21 अधिकारियों में से 11 असम पुलिस सेवा (एपीएस), चार असम लोक सेवा (एएससी), तीन सहायक रोजगार अधिकारी, सहकारी समितियों के दो सहायक रजिस्ट्रार और एक उत्पाद शुल्क निरीक्षक हैं।. सूत्रों ने बताया कि इनमें से एपीएस के दो अधिकारियों को पिछले सप्ताह इस मामले में गिरफ्तार किया गया था, जबकि मामले की जांच कर रही राज्य पुलिस के विशेष जांच दल (एसआईटी) के सामने पेश होने के लिए कई अन्य को समन जारी किया गया है। कार्मिक विभाग द्वारा जारी निलंबन अधिसूचना में कहा गया है कि ए अधिकारी एपीएससी द्वारा की गई विसंगतियों और कदाचार के लाभार्थी थे और उन्हें अंतिम सारणी शीट में उनके मूल रूप से प्राप्त अंकों को बढ़ा कर नियुक्ति मिली, जिसके आधार पर अंतिम परिणाम घोषित किए गए थे। इसमें कहा गया है कि इन अधिकारियों की भर्ती के लिए एपीएससी की सिफारिश अवैध थी और जिस प्रक्रिया के माध्यम से उन्होंने अपनी नौकरियां प्राप्त कीं वह घोर कदाचार, भ्रष्टाचार और नैतिक अधमता के बराबर है। इसमें कहा गया है कि चूंकि उन पर आपराधिक मामले की जांच जारी है इसलिए उन्हें उनके वर्तमान पद पर बने रहने की अनुमति देना सार्वजनिक सेवा के हित में नहीं हो सकता है और सरकार के लिए शर्मिंदगी का कारण बन सकता है। अधिसूचना में कहा गया है कि यह देखते हुए अधिकारियों को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया गया है। इसमें कहा गया है कि जिन साक्ष्यों के आधार पर अब निलंबित अधिकारी जांच का सामना कर रहे हैं।

पीआईबी की तथ्यान्वेषण इकाई ने नौ यूट्यूब चैनलों का भंडाफोड़ किया

नई दिल्ली। सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय ने शुक्रवार को कहा कि पत्र सूचना कार्यालय की तथ्यान्वेषण इकाई ने भारत में कथित तौर पर फर्जी खबरें और गलत सूचना फैलाने वाले नौ यूट्यूब चैनलों का पर्दाफाश किया है। मंत्रालय द्वारा जारी सूची के अनुसार पीआईबी की तथ्यान्वेषण इकाई द्वारा पहचाने गए इन नौ यूट्यूब चैनलों में भारत एकता न्यूज , बजरंग एजुकेशन , बीजे न्यूज , सनसनी लाइव टीवी , जीवीटी न्यूज , डेली स्टडी , अब बोलेगा भारत , , सरकारी योजना ऑफिशियल और आपके गुरुजी शामिल हैं। मंत्रालय ने कहा, पीआईबी की तथ्यान्वेषण इकाई (एफसीयू) ने भारत में फर्जी खबरें और गलत सूचना फैलाने वाले नौ यूट्यूब चैनलों का भंडाफोड़ किया है। इकाई ने इन चैनलों द्वारा फैलाई गई झूठी सूचनाओं का मुकाबला करने के लिए नौ अलग-अलग ट्विटर थ्रेड में कई तथ्यान्वेषण जारी किए हैं। इन चैनलों के सबक्राइबर की संख्या 11,700 से 34.70 लाख तक है।

क्विक न्यूज

एनजीओ का दावा:भोपाल गैस त्रासदी से पीड़ित लोग बीमारियों की चपेट में अधिक

भोपाल। 1984 की भोपाल गैस त्रासदी के दौरान गैस रिसाव के संपर्क में आने वाले लोगों में मधुमेह, हृदय रोग, न्यूरोपैथी और गठिया जैसी बीमारियों की आशंका गैर गैस पीड़ितों की अपेक्षा तीन गुना ज़्यादा है।गैस पीड़ितों की हित मे काम करने वाले एक गैर सरकारी संगठन ने गैस त्रासदी की 39 वी बरसी के एक दिन पहले शुक्रवार को यह दावा किया।सन 1984 में यहां 2 और 3 दिसंबर की मध्यरात्रि को यूनियन कार्बाइड कीटनाशक फैक्ट्री से जहरीली गैस के रिसाव के बाद कम से कम 3,787 लोग मारे गए थे। अब यह कारखाना बंद हो चुका है।सम्भावना ट्रस्ट क्लीनिक में पंजीकरण सहायक नितेश दुबे ने कहा, हमारे क्लीनिक के आँकड़ो से पता चलता है, कि क्लीनिक में पिछले दो सालों में इलाज कराने वाले 6254 व्यक्तियों में से मधुमेह, हृदय रोग, न्यूरोपैथी और गठिया जैसी बीमारी गैर गैस पीड़ितों की अपेक्षा गैस पीड़ितों मे तीन गुना ज़्यादा हैं ष गैर गैस पीड़ितों की अपेक्षा गैस पीड़ितों में उच्च रक्तचाप, एसिड पेप्टिक रोग, अस्थमा, सीओपीडी, सर्वाइकल स्पोंडिलोसिस और चिंता की बीमारियां दोगुनी है।

मिजोरम में मतगणना की तिथि आगे बढ़ाने में देरी क्यों की गई : कांग्रेस

नई दिल्ली। कांग्रेस ने मिजोरम विधानसभा चुनाव की मतगणना तीन दिसंबर की जगह अब चार दिसंबर को कराए जाने के निर्वाचन आयोग के फैसले के बाद शुक्रवार को सवाल किया कि इतना सरल कदम उठाने में इतनी देरी क्यों क्यों हुई।पार्टी महासचिव जयराम रमेश ने एक्स पर पोस्ट किया,"मिजोरम चुनाव मे भाग लेने वाले राजनीतिक दलो ने वहां मतगणना की तिथि तीन दिसंबर से चार दिसंबर करने के लिए कहा था। एक महीने से अधिक समय पहले प्रतिवेदन दिया गया था, लेकिन निर्वाचन आयोग चुप रहा। आज कुछ देर पहले ही इसकी तारीख आगे बढ़ाई गई है। उन्होने सवाल किया,"इतना सरल और स्पष्ट कदम उठाने में देरी क्यो? निर्वाचन आयोग ने शुक्रवार को कहा कि मिजोरम में विधानसभा चुनाव के लिए मतगणना अब निर्धारित समय से एक दिन बाद यानी चार दिसंबर को होगी। पहले मतगणना तीन दिसंबर (रविवार) को होनी थी। राज्य की सभी 40 विधानसभा सीटो के लिए गत सात नवंबर को मतदान हुआ था।

किशोर कुमार को दिया गया म्यूज़िकल ट्रिब्यूट

मुंबई। सोनी एंटरटेनमेंट टेलीविजन का प्रतिष्ठित सिंगिंग रियलिटी शो इंडियन आइडल सीजन 14 आनंद जी कल्याण जी् की प्रसिद्ध जोड़ी के आनंद जी के साथ 90 के दशक का जादू जगाएगा। कल्याण जी.आनंद जी नाइटका जश्न मनाते हुए प्रतियोगी जज श्रेया घोषाल और गेस्ट जज शेखर रवजियानी आनंद जी और उनकी प्यारी पत्नी शांता बेन शाह को प्रभावित करने के लिए कुछ सदाबहार गाने पेश करेंगे। जहां हर प्रतियोगी अपने असाधारण प्रदर्शन से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर देगा, कनपुरिया लड़का वैभव गुप्ताखाइके पान बनारस वाला और अपनी तो जैसे तैसेपर अपने एक्ट से सुर्खियां बटोरेगा। उन्होंने आनंद जी को पुरानी यादों में जाने के लिए मजबूर कर दिया क्योंकि उन्हें पार्श्व गायन के राजा किशोर कुमार की याद आइ। जिन्होंने अपने कई सुपर हिट गीतों के साथ कल्याण जी ,आनंद जी की यात्रा में बहुत बड़ा योगदान दिया था। आनंद जी ने कहा कि मुझे किशोर दा और वह स्टूडियो याद है जहां हमने यह गाना रिकॉर्ड किया था।

जेकेएस-द लॉजिस्टिक्स मैन ऑफ इंडिया का विमोचन

नई दिल्ली । यूपी के उप मुख्य मंत्री ब्रजेश पाठक ने चेतक समूह के संस्थापक स्व. जय करण शर्मा की जीवनी पर आधारित एक पुस्तक जेकेएस-द लॉजिस्टिक्स मैन ऑफ इंडिया का विमोचन कर उनका सम्मान किया। श्री शर्मा ग्रामीण परिवेश के एक ऐसे उद्यमी थे जिन्होंने बिना पूंजी के अपना उद्यम खड़ा किया। कम्युनिकेशन के क्षेत्र में कई दशकों से काम कर रहे अरुण अरोड़ा ने जय करण शर्मा की जीवन यात्रा को शब्दों में पिरोया है। अंग्रेजी में लिखी गई इस पुस्तक का विमोचन उप मुख्य मंत्री ने किया। इस अवसर पर चेतक समूह के निदेशक और जय करण शर्मा के छोटे बेटे सचिन हरितश के अलावा अरुण अरोड़ा,प्रभात समूह के चेयरमैन प्रभात कुमार, हिन्दी जीवनी के लेखक और पत्रकार मधुरेन्द्र सिन्हा भी उपस्थित थे। जय करण शर्मा हरियाणा के एक छोटे से गांव झिंझर के एक किसान परिवार में पैदा हुए थे। उन्होंने अपने बूते अपना उद्यम खड़ा किया। उनके कनिष्ठ पुत्र सचिन हरितश ने कहा कि हम पाठक के आभारी हैं जिन्होंने अपनी तमाम व्यस्तता के बावजूद शर्मा जी पर प्रकाशित पुस्तक का विमोचन किया। यह हम सभी को उनका आशीर्वाद है। वरिष्ठ कम्युनिकेशन प्रोफेशनल तथा चेतक लॉजिस्टिक्स के निदेशक अरुण अरोड़ा ने इस पुस्तक को लिखने में अपने अनुभव साझा करते हुए कहा कि श्री शर्मा जैसे विरले व्यक्ति की जीवनी लिखना मेरा सौभाग्य रहा।

गाजियाबाद में तेज रफ्तार कार की चपेट में आने से बच्चे की मौत, तीन कारें आपस में टकराईं

गाजियाबाद। गाजियाबाद जिले के मसूरी थाना क्षेत्र मे शुक्रवार की सुबह एक तेज रफ्तार कार की चपेट मे आने से आठ वर्षीय बच्चे की मौत हो गई जबकि इस हादसे के दौरान तीन कारे एक दूसरे से टकरा गई। पुलिस ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। मसूरी के सहायक पुलिस आयुक्त (एसीपी) नरेश कुमार ने बताया कि यह हादसा मसूरी थाना क्षेत्र के सिकरौदा गांव के पास हुआ जब तेज रफ्तार कार ने इसी गांव के समध (आठ) नामक बच्चे को टक्कर मार दी।उनके अनुसार यह बच्चा आज सुबह अपने गांव से खेलने के लिए जैसे ही दिल्ली-मेरठ एक्सप्रेसवे पर पहुंचा, एक तेज रफ्तार कार ने उसे टक्कर मार दी और उसकी मौत हो गई। घायल बच्चे को बचाने के प्रयास मे उसी लेन मे चल रही तीन अन्य कारे एक-दूसरे से टकरा गई।

उपराष्ट्रपति रविवार को छत्तीसगढ़ पहुंचेंगे

नई दिल्ली। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ रविवार को एकदिवसीय यात्रा पर छत्तीसगढ़ पहुंचेंगे और इस दौरान वह एक विधि विश्वविद्यालय के छात्रों से बातचीत करेंगे। उनके कार्यालय ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। एक आधिकारिक बयान के अनुसार, उपराष्ट्रपति का वहां राजभवन का दौरा करने का भी कार्यक्रम है। यह भी बताया गया कि छत्तीसगढ़ की अपनी पहली यात्रा के दौरान धनखड़ रायपुर स्थित हिदायतुल्ला राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय के छात्रों और संकाय सदस्यों के साथ बातचीत करेंगे।

पीडब्ल्यू बच्चों को करेगा प्रशिक्षित

बेंगलुरू। भारत की अग्रणी एडटेक यूनिकॉर्न, फिजिक्स वाला (पीडब्ल्यू), अपनी स्कूल पार्टनरशिप शाखा, पीडब्ल्यू एकेडमी के माध्यम से नर्सरी से 8वीं कक्षा तक एक व्यापक कोर्स शुरू करने के लिए तैयार है। इसका उद्देश्य कम उम्र से ही छात्रों के समग्र विकास को बढ़ावा देना है। इस पहल को ध्यान में रखते हुए, पीडब्ल्यू का लक्ष्य अगले शैक्षणिक वर्ष में 2,000 स्कूलों में इस कैरिकुलम को लागू करने का है। इसके अलावा, पाठ्यक्रम को दो निःशुल्क अपस्किलिंग प्लेटफार्मों के साथ संयोजित किया जाएगा। पीडब्ल्यू रीजनिंग, गणित और मौखिक कौशल में प्रशिक्षण प्रदान करता है, और पीडब्ल्यू क्यूरियस जूनियर, बच्चों में कोडिंग कौशल विकसित करने में मदद करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। पाठ्यक्रम को तीन श्रृंखलाओं में स्कूलों में लागू किया जाएगा। ब्लूम श्रृंखला, नर्सरी से कक्षा 2 तक के बच्चों के लिए है, जो 21वीं सदी के कौशल विकसित करने और ठोस नींव रखने पर फोकस करेगी।

कोयला खनन के मामले में केंद्र पर झारखंड का 1.36 लाख करोड़ रुपए बकाया है: सोरेन

भाषा। मेदिनीनगर (झारखंड)

झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने शुक्रवार को दावा किया कि राज्य से खनन किए गए कोयले के कारण केंद्र पर झारखंड का 1.36 लाख करोड़ रुपए बकाया है। सोरेन ने यहां एक जनसभा को संबोधित करते हुए आरोप लगाया कि जब इस धन के बारे में पूछा जाता है, तो केंद्र इसे टालने के लिए हथकंडे अपनाता है। मुख्यमंत्री ने कहा, झारखंड से कोयला निकाला जाता है और इसके मद में केंद्र का 1.36 लाख करोड़ रुपए बकाया है। बकाया राशि के बारे में पूछने पर कोई न कोई बहाना बनाकर टालमटोल किया जाता है। जिन्होंने 20 साल तक राज्य पर शासन किया, उन्होंने कभी यह राशि या राज्य का अधिकार नहीं मांगा। यह पैसा झारखंड की जनता का है। सोरेन ने आरोप लगाया कि केंद्र ने गरीबों के लिए आवास और सूखे जैसी प्राकृतिक आपदाओं के लिए धन देना बंद कर दिया है। उन्होंने कहा, आज हम अपने दम पर इस राज्य का निर्माण कर रहे हैं। अपने अधिकारों के लिए लड़ना पड़ता है। कभी-कभी इसके लिए लंबे आंदोलन करने पड़ते हैं। इसके लिए हमें एकजुट होना होगा। हम अपनी इस लड़ाई को एक साथ लड़ेंगे और अपना अधिकार बरकरार रखेंगे। विपक्षी दल भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) पर हमला तेज करते हुए उन्होंने कहा कि यह अमीर लोगों का समूह है जो अमीरों के कल्याण के लिए काम करता है। उन्होंने कहा, आम लोगों को बर्बाद करने के लिए रेलवे स्टेशन, बंदरगाहों और सार्वजनिक उपक्रमों को कारोबारियों को बेचा जा रहा है, जिसे हम बर्दाश्त नहीं कर सकते। हम इसका पुरजोर विरोध करते रहे हैं। सोरेन ने आरोप लगाया, भाजपा की राजनीति में पिछड़ों, दलितों, आदिवासियों और अल्पसंख्यकों के लिए कोई जगह नहीं है, क्योंकि वह उस विचारधारा का प्रतिनिधित्व करती है जो पूंजीवाद का समर्थन करती है, जहां गलाकाट प्रतिस्पर्धा है। मुख्यमंत्री सरकार आपके द्वार कार्यक्रम के तहत पलामू जिले में थे। उन्होंने कहा कि राज्य के विकास के लिए ग्रामीण विकास जरूरी है। सोरेन ने कहा कि पलामू में ग्रामीण सड़कों के विकास के लिए करीब एक हजार करोड़ रुपए खर्च किए जा रहे हैं।

अदालत ने यौन उत्पीड़न की घटनाओं में वृद्धि पर चिंता जताई

नई दिल्ली। शादी के बहाने नाबालिग लड़कियों के यौन उत्पीड़न पर चिंता व्यक्त करते हुए दिल्ली उच्च न्यायालय ने कहा है कि ऐसी घटनाएं महिलाओं के सशक्तीकरण की अवधारणा को कमजोर करती हैं। अदालत ने इसके साथ ही पीड़िता के अपहरण और दुष्कर्म के लिए अपनी दोषसिद्धि और 10 साल की सजा के खिलाफ एक व्यक्ति द्वारा दायर याचिका खारिज कर दी। नाबालिग पीड़ितों के अतिसंवेदनशील मन पर गहरा असर पड़ता है क्योंकि उनमें 12 या 14 साल की उम्र में उचित निर्णय लेने की क्षमता नहीं होती है। अदालत ने कहा कि इन लड़कियों को यह विश्वास दिलाकर गुमराह किया जाता है कि वे वैवाहिक बंधन में बंध रही हैं। यौन उत्पीड़न को अक्सर हमलावर द्वारा वैवाहिक शारीरिक संबंध के रूप में पेश किया जाता है ताकि पीड़िता को बिना किसी प्रतिरोध के इसे स्वीकार करने के लिए राजी किया जा सके।

मोइत्रा के निष्कासन संबंधी अचार समिति की रिपोर्ट सोमवार को लोकसभा में पेश की जाएगी

भाषा। नई दिल्ली,

लोकसभा की आचार समिति की वह रिपोर्ट संसद के शीतकालीन सत्र के पहले दिन सोमवार को निचले सदन में पेश की जाएगी जिसमें तृणमूल कांग्रेस की सांसद महुआ मोइत्रा को रिश्वत लेकर सवाल पूछने के मामले में सदन से निष्कासित करने की अनुशंसा की गई है। लोकसभा सचिवालय द्वारा प्रसारित कार्य सूची के अनुसार, आचार समिति के अध्यक्ष विनोद कुमार सोनकर समिति की रिपोर्ट सदन के पटल पर रखेंगे।समिति ने गत 9 नवंबर को एक बैठक में मोइत्रा को लोकसभा से निष्कासित करने की सिफारिश करते हुए अपनी रिपोर्ट स्वीकारी थी।समिति के छह सदस्यों ने रिपोर्ट के पक्ष में मतदान किया था, जिसमें कांग्रेस सांसद परनीत कौर भी शामिल थीं, जिन्हें पहले ही पार्टी से निलंबित कर दिया गया था। विपक्षी दलों से संबंधित समिति के चार सदस्यों ने असहमति नोट प्रस्तुत किए।विपक्षी सदस्यों ने रिपोर्ट को"फिक्स्ड मैचे (पहले से नतीजा तय किया हुआ मैच) करार दिया था और कहा था कि भाजपा के लोकसभा सदस्य निशिकांत दुबे द्वारा की गई शिकायत के पक्ष में कुछ सबूत नहीं दिए गए थे। अगर सदन इस रिपोर्ट को अनुमोदित कर देता है तो मोइत्रा की सदस्यता खत्म हो जाएगी।संसद का शीतकालीन सत्र सोमवार से शुरू हो रहा है और 22 दिसंबर तक चलेगा।

समान विचारधारा वाले देशों को हिंद-प्रशांत क्षेत्र में मिलकर काम करना चाहिए: नौसेना प्रमुख

भाषा। नई दिल्ली

हिंद-प्रशांत क्षेत्र में चीन की बढ़ती सैन्य आक्रामकता पर बढ़ती वैश्विक चिंताओं की पृष्ठभूमि में नौसेना प्रमुख एडमिरल आर हरि कुमार ने शुक्रवार को कहा कि इस क्षेत्र में विवादों के नियंत्रण से बाहर होने और संघर्ष में बदलने की आशंका है।उन्होंने चार दिसंबर को नौसेना दिवस से पहले पत्रकार वार्ता में यह भी कहा कि भारत, हिंद महासागर में चीनी गतिविधियों पर बारीकी से नजर रख रहा है और सुरक्षा बल ने अपनी मौजूदगी बढ़ाने के लिए निगरानी उपकरण, जहाज, विमान, पनडुब्बी और ड्रोन तैनात किए हैं। हिंद महासागर क्षेत्र में चीन की गतिविधियों का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा, हम क्षेत्र में मौजूद अतिरिक्त-क्षेत्रीय ताकतों पर नजर रखने की कोशिश करते हैं ताकि हमें पता चल सके कि उनकी गतिविधियां क्या हैं और इरादे क्या हैं। उन्होंने कहा, यही कारण है कि हम अपने निगरानी उपकरणों और जहाजों, पनडुब्बियों, विमानों, यूएवी (मानव रहित हवाई वाहन) आदि को तैनात करते हैं। उन्हें क्षेत्र में निगरानी रखने के लिए नियमित रूप से तैनात किया जाता है ताकि हम वहां होने वाली सभी घटनाओं से अवगत रहें। हिंद-प्रशांत क्षेत्र पर नौसेना प्रमुख ने कहा कि सभी समान विचारधारा वाले देशों को क्षेत्र में शांति और स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए मिलकर काम करना चाहिए।उन्होंने कहा, हिंद-प्रशांत क्षेत्र में हम जो देखते हैं - विवाद हैं। इन विवादों के नियंत्रण से बाहर होने या बढ़ने की आशंका है और फिर ए संघर्ष में बदल सकते हैं। एडमिरल कुमार ने कहा कि वार्ता यह सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है कि हम नियम-आधारित दृष्टिकोण के आधार पर महासागरों के इस्तेमाल के लिए काम करने के अलावा क्षेत्र में शांति और स्थिरता बनाए रखे।

सीबीआई ने रिश्वत लेने के आरोप में रेलवे के दो अधिकारियों समेत पांच लोगों को गिरफ्तार किया

नई दिल्ली। केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) ने कथित रिश्वतखोरी के अलग-अलग मामलों में भारतीय रेलवे के दो उप मुख्य सामग्री प्रबंधकों समेत पांच लोगों को गिरफ्तार किया है। अधिकारियों ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। एजेंसी ने अलग-अलग मामलों में मुंबई में उप मुख्य सामग्री प्रबंधक के पद पर तैनात 2000-बैच के भारतीय रेलवे स्टोर्स सेवा अधिकारी एच नारायणन और 2010-बैच के अधिकारी अतुल शर्मा को हिरासत में लिया है। नारायणन को ग्रेटर नोएडा स्थित एनेस्ट इवाटा मदरसन प्राइवेट लिमिटेड के दो अधिकारियों-समीर दवे और दीपक जैन के साथ कथित तौर पर भारी रिश्वत के बदले कंपनी को लाभ पहुंचाने के आरोप में गिरफ्तार किया गया। यह आरोप लगाया गया था कि ग्रेटर नोएडा (उत्तर प्रदेश) स्थित एक निजी कंपनी का प्रतिनिधि अपनी कंपनियों के पक्ष निविदाओं के लिए पश्चिम रेलवे के वरिष्ठ अधिकारियों को नियमित रूप से रिश्वत देता था।

राकांपा प्रमुख के रूप में शरद पवार के इस्तीफा वापस लेने के लिए प्रदर्शन कराए गए थे: अजित पवार

भाषा। मुंबई,

राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) के नेता अजित पवार ने शुक्रवार को कहा कि जब शरद पवार ने मई में पार्टी अध्यक्ष के रूप में अपने इस्तीफे की घोषणा की थी, तो कुछ नेताओं को उनसे (शरद से) अपना फैसला वापस लेने की मांग करते हुए प्रदर्शन करने को कहा गया था। रायगढ़ जिले के कर्जत में पार्टी की विचार मंथन बैठक में अजित पवार ने इस इस्तीफा प्रकरण को नौटंकी करार दिया। उन्होंने कहा, जितेंद्र आव्हाड और आनंद परांजपे (राकांपा नेताओं) को (शरद पवार द्वारा) बुलाया गया और उनका (शरद का) इस्तीफा वापस लेने की मांग करते हुए प्रदर्शन आयोजित करने को कहा गया था। अजित पवार ने कहा, परांजपे बाद में मेरे पास आए और मैंने उनसे पूछा कि आप यह नौटंकी क्यों कर रहे हैं। मेरा यह विचार था कि इसकी जरूरत नहीं थी। मैंने उनका (शरद पवार का) इस्तीफा नहीं मांगा था। मुंबई में दो मई को एक कार्यक्रम में राकांपा प्रमुख के रूप में इस्तीफा देने की घोषणा करने के कुछ ही दिनों बाद, शरद पवार ने कहा था कि वह देश भर में पार्टी कार्यकर्ताओं और नेताओं की भावनाओं का सम्मान करते हुए अपना फैसला वापस ले रहे हैं। अजित पवार दो जुलाई को महाराष्ट्र में एकनाथ शिंदे नीत सरकार में शामिल हुए थे। उन्होंने कहा कि शरद पवार नीत गुट समझौते के लिए संपर्क कर रहा है। उन्होंने कहा कि इस तरह की एक बैठक 12 अगस्त को कारोबारी अतुल चोरडिया के पुणे स्थित आवास पर 12 अगस्त को हुई थी।

मणिपुर के हिंसा प्रभावित लोगों के बीच राहत सामग्री वितरित की

चुराचांदपुर। भारतीय युवा कांग्रेस (आईवाईसी) के अध्यक्ष श्रीनिवास बी.वी. ने अपनी पार्टी के कुछ सहयोगियों के साथ शुक्रवार को मणिपुर के चुराचांदपुर जिले मे हिंसा प्रभावित लोगों के बीच राहत सामग्री वितरित की। वितरित की गई सामग्रियो मे दवाएं, कंबल और अन्य जरूरी शामिल थे। कांग्रेस नेताओ ने कहा कि सामग्रियां नौ राहत केंद्रो मे रहने वाले लोगो तक पहुंचाई गईं।उनके साथ आईवाईसी के महासचिव पूर्णचंद पाधी और इसके मणिपुर प्रभारी सरिफा रहमान सहित अन्य लोग थे। अनुसूचित जनजाति (एसटी) का दर्जा देने की मेइती समुदाय की मांग के विरोध मे मई मे पर्वतीय जिलो मे आदिवासी एकजुटता मार्च आयोजित किए जाने के बाद भड़की हिंसा के बाद से 180 से अधिक लोग मारे गए।

आईआईएफएल पूंजी जुटाएगा

मुंबई। भारत की सबसे बड़ी नॉनबैंकिंग माईक्रो फाईनेंस कंपनी आईआईएफएल समस्ता फाईनेंस सिक्योर्ड बॉन्ड्स के अपने पहले पब्लिक इश्यू की मदद से 1,000 करोड़ रुतक की पूंजी जुटाएगा। जिसका उद्देश्य व्यावसायिक वृद्धि और पूंजी निर्माण के लिए किया जाएगा। ये बॉन्ड अत्यधिक सुरक्षा के साथ 10.50 प्रतिशत तक का रिटर्न प्रदान करेंगे। ये इश्यू सोमवार 4 दिसंबर 2023 से मिलना शुरू होंगे। और शुक्र वार 15 दिसंबर 2023 तक मिलेंगे। आईआईएफएल समस्ता आईआईएफएल फाईनेंस का अंग है, जो भारत के सबसे बड़े रिटेल केंद्रित एनबीएफसी समूहों में से एक है, जिसके पास 73,066 करोड़ रुण् के लोन एस्सेट अंडर मैनेजमेंट हैं।आईआईएफएल समस्ता फाईनेंस के एमडी एवं सीईओए श्री वेंकटेश एन ने कहाए ष्आईआईएफएल समस्ता अपनी 1ए500 शाखाओं के द्वारा पूरे भारत में मजबूत स्थिति में मौजूद है।

जम्मू-कश्मीर: कुपवाड़ा में कम खतरे वाले हिमस्खलन की चेतावनी

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर के कुपवाड़ा जिले मे कम खतरे वाले हिमस्खलन की चेतावनी जारी की गई है। अधिकारियो ने शुक्रवार को यह जानकारी दी।एक अधिकारी ने कहा, अगले 24 घंटे मे उत्तरी कश्मीर के कुपवाड़ा जिले मे समुद्र तल से 2,800 मीटर से ऊपर खतरे के लिहाज से कम स्तर का हिमस्खलन होने की आशंका है। इन क्षेत्रो मे रहने वाले लोगो को सावधानी बरतने और अगले आदेश तक हिमस्खलन संभावित क्षेत्रो मे जाने से बचने की सलाह दी जाती है।

नागार्जुन सागर बांध विवाद: आंध्र, तेलंगाना पानी छोड़ने की शर्त पर सहमत

हैदराबाद-अमरावती। आंध्र प्रदेश और तेलंगाना 28 नवंबर की स्थिति के अनुसार नागार्जुन सागर बांध का पानी छोड़ने के केंद्रीय गृह सचिव अजय भल्ला के प्रस्ताव पर सहमत हो गए हैं। बांध को लेकर हुए विवाद के बाद भल्ला ने शुक्रवार को दोनों राज्यों के मुख्य सचिवों और पुलिस महानिदेशकों के साथ ऑनलाइन बैठक की, जिसमें यह सहमति बनी। आंध्र प्रदेश ने 29 नवंबर को राज्य पुलिस का उपयोग करके नागार्जुन सागर बांध के एक हिस्से पर कब्जा कर लिया और एकतरफा तरीके से दाहिनी नहर से पानी छोड़ना शुरू कर दिया, जिससे दोनों राज्यों के बीच तनाव पैदा हो गया। तेलंगाना सरकार की ओर से आज जारी एक विज्ञप्ति में कहा गया है कि दोनों राज्यों ने नागार्जुन सागर बांध का पानी 28 नवंबर की स्थिति के अनुसार छोड़ने के भल्ला के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया है और बांध की निगरानी केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) करेगा।

भारत को चिकित्सा अनुसंधान, स्वास्थ्य देखभाल में अग्रणी शक्ति बनाएं : मुर्मू

भाषा। नागपुर

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने शुक्रवार को स्वास्थ्य देखभाल समुदाय से भारत को चिकित्सा अनुसंधान में अग्रणी शक्ति बनाने और यह सुनिश्चित करने को कहा कि सुविधाएं सस्ती हों जिससे दुनिया भर से लोग उसका लाभ उठाने के लिए यहां आ सकें।

वह नागपुर में राजकीय चिकित्सा महाविद्यालय और अस्पताल (जीएमसीएच) के प्लैटिनम जयंती समारोह के उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि थीं। पिछले 75 वर्षों के दौरान प्रदान की गई सेवाओं के लिए जीएमसीएच की सराहना करते हुए राष्ट्रपति ने कहा कि किसी भी समाज के समग्र विकास के लिए सस्ती चिकित्सा सुविधाएं आवश्यक हैं। उन्होंने कहा कि कोविड महामारी ने सभी को मजबूत स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली के महत्व का एहसास कराया। उन्होंने कहा, यह डॉक्टरों, नर्सों और अन्य चिकित्सा पेशेवरों की कड़ी मेहनत थी जिसने सुनिश्चित किया कि भारत इतनी बड़ी आबादी का इस बीमारी के खिलाफ तेजी से टीकाकरण हो सके। मुर्मू ने कहा, स्वास्थ्य सेवाओं में असमानता भी एक समस्या है और केंद्र सरकार जिलों में मेडिकल कॉलेज खोलकर इसका समाधान कर रही है, जिससे क्षेत्रीय असंतुलन और ग्रामीण-शहरी विभाजन कम होगा।प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना के साथ-साथ मेडिकल रिकॉर्ड के डिजिटलीकरण की सराहना करते हुए मुर्मू ने अंग दान पर जागरूकता फैलाने की आवश्यकता को रेखांकित किया, जो फिलहाल कम है।

आंदोलनकारियों के खिलाफ मामलों को वापस लिया जाना चाहिए: जरांगे

भाषा। जालना

मराठा आरक्षण कार्यकर्ता मनोज जरांगे ने शुक्रवार को कहा कि यहां अंतरवाली सराती में आंदोलनकारियों के खिलाफ पुलिस में दर्ज मामले दो दिन में जबकि राज्यभर में आंदोलन में भाग लेने वाले अन्य लोगों के खिलाफ मामले एक महीने के भीतर वापस लिए जाने चाहिए।जरांगे ने यहां पंजरपोल में एक रैली को संबोधित करते कहा कि मराठा समुदाय के लिए आरक्षण लागू करने की 24 दिसंबर की समय सीमा पर कोई समझौता नहीं किया जाएगा। उन्होंने कहा कि समुदाय को आरक्षण दिलाने की लड़ाई में आगे की कार्वाई की योजना बनाने के लिए 17 दिसंबर को यहां एक बैठक होगी। उन्होंने दावा किया कि महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री देवेन्द्र फडणवीस के कहने पर मंत्रियों उदय सामंत, धनंजय मुंडे, अतुल सावे अंतरवाली सराती गए थे ।

भारत ने जीती श्रृंखला, रिंकू-जितेश चमके

● चौथे टी-20 में आस्ट्रेलिया को 20 रन से हराया

भाषा। रायपुर

भारत ने अपने स्पिनरों की मदद से शुक्रवार को यहां चौथे टी20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट मैच में हाल में वनडे विश्व चैम्पियन बनी आस्ट्रेलिया को 20 रन से हराकर पांच मैचों की श्रृंखला में 3-1 की अजेय बढ़त बना ली। इस तरह सूर्यकुमार यादव ने कप्तान के तौर पर अपनी पहली श्रृंखला में जीत हासिल की। पिछले तीन मैचों की तुलना में इस मुकाबले का स्कोर काफी कम रहा लेकिन भारतीय गेंदबाजों विशेषकर स्पिनर अक्षर पटेल (16 रन देकर तीन विकेट) और रवि बिश्नोई (17 रन देकर एक विकेट) के शानदार प्रदर्शन से आस्ट्रेलिया सात विकेट पर 154 रन ही बना सकी। भारत ने यशस्वी जायसवाल (37 रन) और रूतुराज गायकवाड़ (32 रन) की पारियों के बाद रिंकू सिंह के 29 गेंद में 46 रन और जितेश शर्मा के 19 गेंद में 35 रन की बदौलत 20 ओवर में नौ विकेट पर 174 रन बनाए।इस लक्ष्य का पीछा करने उतरी आस्ट्रेलिया को ट्रेविस हेड ने तेज शुरूआत कराई, जिन्होंने 16 गेंद में पांच चौके और एक छक्के से 31 रन बनाए। पर पावरप्ले में आस्ट्रेलिया ने 52 रन तक हेड और जोश फिलिप (08) के रूप में दो विकेट गंवा दिए। रवि बिश्नोई ने फिलिप का जबकि अक्षर पटेल ने हेड का विकेट झटका। बाएं हाथ के स्पिनर अक्षर पटेल ने फिर आरोन हार्डी (08) और बेन मैकडरमोट (19) को आउट कर आस्ट्रेलिया को करारे झटके दिए। टीम ने 87 रन पर चार विकेट गंवा दिए। दीपक चाहर ने टिम डेविड (19 रन) और मैथ्यू शॉर्ट (22 रन) के विकेट झटककर उनकी बड़ी पारी खेलने की उम्मीदों पर विराम लगा दिया। आस्ट्रेलिया ने 17वें ओवर तक 126 रन पर छह विकेट गंवा दिए थे। मैथ्यू वेड (नाबाद 36 रन) क्रीज पर थे तो टीम को उनसे उम्मीद बंधी थी लेकिन तब तक काफी देर हो चुकी थी। पर वह टीम के लिए सर्वाधिक रन जुटाने वाले खिलाड़ी रहे।

स्कोरबोर्ड

भारत : जायसवाल का मैक्डरमोट बो हार्डी 37,गायकवाड़ का ड्वारशुइस बो संघा 32,अय्यर का ग्रीन बो संघा 08,यादव का वेड बो ड्वारशुइस 01, रिंकू पगबाधा बो बेहरेनडोर्फ 46,जितेश का हेड बो ड्वारशुइस 35, पटेल का संघा बो ड्वारशुइस 00, चाहर का ग्रीन बो बेहरेनडोर्फ 00,बिश्नोई रन आउट 04,खान नाबाद 01,**अतिरिक्त** : 10,**कुल** : 20 ओवर में नौ विकेट पर 174 रन,**विकेट पतन** :1-50, 2-62, 3-63, 4-111, 5-167, 6-168, 7-168, 8-169, 9-174,**गेंदबाजी** : हार्डी 3-1-20-1,बेहरेनडोर्फ 4-0-32-2,ड्वारशुइस 4-0-40-3,ग्रीन 4-0-36-0, संघा 4-0-30-2, शॉर्ट 1-0-10-0

आस्ट्रेलिया : हेड का मुकेश कुमार बो पटेल 31, फिलिप बो रवि बिश्नोई 08, मैक्डरमोट बो पटेल 19, हार्डी बो पटेल 08, डेविड का जायसवाल बो चाहर 19,शॉर्ट का जायसवाल बो चाहर 22 मैथ्यू वेड नाबाद 36, ड्वारशुइस बो आवेश खान 01, ग्रीन नाबाद 02,अतिरिक्त : 08,कुल : 20 ओवर में सात विकेट पर 154 रन,**विकेट पतन** :1-40, 2-44, 3-52, 4-87, 5-107, 6-126, 7-133,**गेंदबाजी** :चाहर 4-0-44-2,मुकेश 4-0-42-0, बिश्नोई 4-0-17-1, पटेल 4-0-16-3 आवेश खान 4-0-33-1

हजारे ट्राफी : सौराष्ट्र ने मुंबई को हराया

● पुजारा की अर्धशतकीय पारी

भाषा। बेंगलुरू

भारतीय टेस्ट टीम से बाहर हुए अनुभवी बल्लेबाज चेतेश्वर पुजारा और अजिंक्य रहाणे ने शुक्रवार को यहां विजय हजारे ट्रॉफी राष्ट्रीय एकदिवसीय प्रतियोगिता के ग्रुप ए मैच में विपरीत परिणामों के साथ क्रमश: सौराष्ट्र और मुंबई के लिए अच्छा प्रदर्शन किया। पुजारा की 114 गेंद में नाबाद 55 रन की पारी के बावजूद सौराष्ट्र की टीम 144 रन पर आउट हो गई। पुजारा ने लिस्ट ए करियर का 35वां अर्धशतक जड़ा। मुंबई के कप्तान रहाणे बल्ले से सिर्फ 12 रन का योगदान दे सके लेकिन उनकी टीम ने 34.4 ओवर में पांच विकेट पर 150 रन बनाकर पांच विकेट से जीत हासिल की। रहाणे और पुजारा दोनों दक्षिण अफ्रीका दौरे के लिए गुरुवार को घोषित भारत की टेस्ट टीम में जगह पाने में असफल रहे थे।मुंबई की जीत में शारदुल ठाकुर के हरफनमौला खेल ने बड़ी भूमिका निभाई। उन्होंने आठ ओवर में 37 रन देकर दो विकेट चटकाने के अलावा बल्ले से भी 44 गेंद में नाबाद 39 रन का योगदान दिया। मुंबई की टीम 76 रन पर पांच विकेट गंवाकर मुश्किल में थी लेकिन शारदुल ने विकेटकीपर बल्लेबाज प्रसाद पवार (63 गेंद में नाबाद 43 रन) के साथ छठे विकेट के लिए 74 रनों की अटूट साझेदारी करके अपनी टीम को जीत दिलाई। दक्षिण अफ्रीका दौरे के लिए भारत ए टीम में जगह पाने वाले देवदत्त पडिक्कल की शतकीय पारी से कर्नाटक ने अहमदाबाद में ग्रुप सी के मैच में चंडीगढ़ को 22 रन से हराया। पडिक्कल की 103 गेंद में 114 और निकिन जोशी की 114 गेंद में 96 रन की पारी से कर्नाटक ने छह विकेट पर 299 रन बनाए। कप्तान मनीष पांडे ने भी 48 गेंद में 53 रन का योगदान दिया। लक्ष्य का पीछा करते हुए चंडीगढ़ की टीम अर्सलान खान (103 गेंद में 102 रन) और अंकित कौशिक (51) की शानदार बल्लेबाजी के बावजूद सात विकेट पर 277 रन ही बना सकी।पंजाब ने तेज गेंदबाज सिद्धार्थ कौल (50 रन पर पांच विकेट) की शानदार गेंदबाजी के दम पर मुंबई में ग्रुप ई मैच में तमिलनाडु को 76 रन से हराया।मनदीप सिंह (68) और प्रभसिमरन सिंह (58) के अर्धशतकों के बाद भी पंजाब की टीम 45.2 ओवर में 251 रन पर आउट हो गई।

लिवरपूल यूरोपा लीग के अंतिम 16 में

लिवरपूल। लिवरपूल ने आस्ट्रिया के एलएएसके क्लब को 4-0 से हराकर यूरोपा लीग फुटबॉल के अंतिम 16 मे प्रवेश कर लिया। लिवरपूल ग्रुप ई मे 12 अंक लेकर चार अंको की बढत बनाए हुए है। टालाउस आठ अंक लेकर दूसरे स्थान पर है जिसने यूनियन सेंट गिलोइस से गोलरहित ड्रॉ खेला। ग्रुप एच मे लीवरकुसेन पांचो मैच जीतकर शीर्ष पर है जिसने हैकेन को 2-0 से हराया। ग्रुप ए में साउसेक ने वेस्ट हैम को 2-1 से मात दी।

राष्ट्रीय सब जूनियर कराटे के पदक विजेता सम्मानित

लखनऊ। हाल ही में नई दिल्ली के तालकटोरा स्टेडियम में आयोजित राष्ट्रीय सब जूनियर कराटे प्रतियोगिता के उत्तर प्रदेश के पदक विजेता व स्कूल नेशनल गेम्स में उत्तर प्रदेश के चयनितों को नोएडा विधायक पंकज सिंह ने अपने आवास पर बुलाकर सम्मानित किया। विधायक पंकज सिंह ने अपने आर्शीवचन में सभी खिलाड़ियों को आगामी राष्ट्रीय टूर्नामेंट में शानदार प्रदर्शन के लिए शुभकामनाएं दी।

बीएसएवी इण्टर कॉलेज को खिताब

लखनऊ। 18वीं कर्नल एस एन मिश्र ओ बी0 ई मेमोरियल क्रिकेट प्रतियोगिता 2023 के फ ाइनल एन आर स्टेडियम मे बीएसएनवी इण्टर कॉलेज ने डी पी एस कॉलेज जानकीपुरम को 3 विकेट से मैच को हराकर खिताब को अपने नाम किया। बी एस एन वी इण्टर कॉलेज ने टॉस जीकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया । डीपीएस कॉलेज के शुभ ने 44 गेंद पर 68 रन ठोक के अपनी टीम को धुआंधार शुरुआत दिलाई । प्रतियोगिता का समापन व पुरुष्कार वितरण मुख्य अतिथि कर्नल एस एन मिश्र ओ बी ई मेमोरियल स्कूल के संस्थापक टी एन मिश्र व डॉ प्रीति बाजपेई जी के द्वारा किया गया।

स्पोर्ट्स क्लब की जीत में जितेंद्र कुमार का कमाल

लखनऊ। मैन ऑफ द मैच जितेंद्र कुमार नाबाद 42 रन, 5 विकेट के हरफनमौला खेल की बदौलत इंटरनेशनल स्पोर्ट्स क्लब ने प्रथम तारा देवी क्रिकेट टूर्नामेंट में फॉरेसिस क्लब को 166 रन के बड़े अंतर से पराजित किया।इंटरनेशनल स्पोर्ट्स क्लब ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 231 रन का स्कोर बनाया। चंदन जायसवाल-9 जल्द पवेलियन लौट गए। उनके जोड़ीदार अभय जायसवाल ने 78 रन की अर्धशतकीय पारी खेली। विकास प्रधान ने 3 विकेट हासिल किए। जवाब में फॉरेसिस क्लब 22.4 ओवर में 65 रन ही बना सका। जितेंद्र ने 7 ओवर में चार मेडन के साथ मात्र 15 रन देकर 5 विकेट हासिल किए। सावंत पाल व शिवा सिंह को दो-दो विकेट मिले।

बिशल ने पिस्टल स्पर्धा में दोहरा स्वर्ण पदक जीता

भोपाल। बिशल श्रेष्ठ ने शुक्रवार को यहां राष्ट्रीय निशानेबाजी चैम्पियनशिप की पुरुषों की 50 मीटर पिस्टल स्पर्धा मे दो स्वर्ण पदक अपने नाम किए। बिशल ने पहले पुरुषों की स्पर्धा मे 563 अंक से स्वर्ण पदक जीता। इसमें उनके साथी आशीष चौधरी 560 अंक से दूसरे और अमनप्रीत सिंह 557 अंक से तीसरे स्थान पर रहे। बिशल ने फिर रविंदर सिंह और जीतू राय के साथ मिलकर 1657 अंक के कुल स्कोर से टीम स्वर्ण पदक हासिल किया।

दिल्ली एफसी ने चर्चिल ब्रदर्स को 2-1 से हराया

लुधियाना। दिल्ली एफसी ने लगातार दो मैच के बाद वापसी करते हुए शुक्रवार को यहां आईलीग मैच मे पूर्व चैम्पियन चर्चिल ब्रदर्स पर 2-1 से जीत हासिल की। इस जीत से दिल्ली की टीम अंक तालिका मे सात मैचों मे 10 अंक लेकर छठे स्थान पर पहुंच गई है और टीम आईजोल एफसी के साथ बराबरी पर है।

प्रियांशु पुरुष सिंगल्स के सेमीफाइनल में

● सैयद मोदी इंडिया इंटरनेशनल बैडमिंटन चैपियनशिप

● युगल में अश्विनी व तनीषा ने कायम रखी चुनौती, महिला डबल्स सेमीफाइनल में इंट्री

लखनऊ। भारत के युवा बैडमिंटन स्टार प्रियांशु राजावत ने सैयद मोदी इंडिया इंटरनेशनल बैडमिंटन चैपियनशिप एचएसबीसी वर्ल्ड टुअर सुपर 300 में शानदार प्रदर्शन जारी रखते हुए पुरुष एकल के सेमीफइनल में स्थान सुरक्षित किया। बाबू बनारसी दास बैडमिंटन अकादमी में भारतीय बैडमिंटन एसोसिएशन के तत्वावधान में उत्तर प्रदेश बैडमिंटन संघ द्वारा आयोजित चैंपियनशिप में अश्विनी पोनप्पा व तनीषा क्रेस्टो की जोड़ी भी महिला डबल्स के सेमीफ इनल में पहुंच गयी। पुरुष एकल क्वार्टर फइनल में प्रियांशु ने वर्ल्ड जूनियर चैंपियन इंडोनेशिया के अल्वी फरहान को सीधे गेम में 21–15, 21–16 से शिकस्त देकर एकल में भारतीय चुनौती कायम रखी।ओरलियांस मास्टर.2023 के विजेता प्रियांशु राजावत ने पहले गेम में प्रतिद्वंद्वी के खिलाफ शुरुआती पांच अंक जुटाए। प्रियांशु के 12.6 अंक से बढ़त बनाने के बाद अल्वी ने भी वापसी की और कुछ उम्दा शॉट खेले। यह गेम काफी रोमांचक रहा और प्रियांशु लगातार अंक जुटाते रहे और इस दौरान उन्होंने 43 रैली अपने नाम करते हुए पहला गेम 21–15 से जीत लिया। दूसरे गेम में दोनों प्रतिद्वंद्वियों के बीच कड़ी टक्कर में प्रियांशु ने वर्ल्ड जूनियर चैंपियन के खिलाफ उम्दा कोर्ट कवरेज का प्रदर्शन किया और एक.एक अंक के लिए हुई कड़ी मशक्कत के बाद 21–16 से गेम और मैच जीतते हुए पुरुष एकल के सेमीफाइनल में जगह बना ली। सेमीफइनल में प्रियांशु की टक्कर अब चीनी ताइपे के ची यू जेन ने से होगी जिन्होंने एक अन्य क्वार्टर फाइनल में हमवतन चिया हाओ ली को मात दी। महिला डबल्स के क्वार्टर फाइनल में सातवीं वरीय अश्विनी पोनप्पा व तनीषा क्रेस्टो ने सैयद मोदी बैडमिंटन टूर्नामेंट के पिछले संस्करण की उपविजेता चौथी वरीय गायत्री गोपीचंद व त्रिशा जॉली की चुनौती को 21–19, 21–8 से रोक लिया। पहले गेम में दोनों खिलाड़ियों के बीच कड़ी टक्कर हुई लेकिन अबुधाबी मास्टर्स–2023 की विजेता अश्विनी व तनीषा ने अपने अनुभव का पूरा इस्तेमाल किया और 21–19 से जीत दर्ज की। दूसरे गेम में अश्विनी व तनीषा ने 21–8 से आसान जीत दर्ज की। इस दौरान गायत्री व त्रिशा ने पूरी कोशिश की लेकिन मैच में वापसी नहीं कर सकी। पुरुष सिंगल्स में पूर्व विश्व जूनियर नंबर वन फ्रांस के एलेक्स लैनियर भी अंतिम चार में पहुंच गए। उन्होंने मलेशिया के सांग जू वेन को मात दी। महिला एकल क्वार्टर फाइनल में ओलंपिक कांस्य विजेता व पूर्व विश्व चैंपियन जापान की नोजोमी आकोहुरा ने आठवीं वरीय चीनी ताइपे की सुंग सुंग शू यून को हराते हुए सेमीफाइनल में जगह बना ली। आकोहुरा की अब सेमीफाइनल में जापान की ही अया ओहारी से टक्कर होगी जिन्होंने डेनमार्क की सातवीं वरीय लिन क्रिस्टोफरसेन को मात दी।

वोंग की उम्दा बल्लेबाजी, इंग्लैंड ए ने भारत ए महिला टीम को हराया

मुंबई। इस्सी वोंग की 15 गेंद में 35 रन की नाबाद पारी के दम पर इंग्लैंड महिला ए ने दूसरे मुकाबले में शुक्रवार को यहां भारत महिला ए को चार विकेट से हराकर तीन मैचों की टी20 श्रृंखला को 1–1 से बराबर किया। भारत महिला ए के नौ विकेट पर 149 रन के जवाब में इंग्लैंड की पारी 15वें ओवर में पांचवां विकेट गिरने से लड़खड़ा गई थी लेकिन वोंग ने इसके बाद पांच चौके और एक छक्का जड़ति नाबाद पारी खेलकर सात गेंद शेष रहते टीम की जीत सुनिश्चित की। उन्होंने अपने आखिरी 23 रन सिर्फ सात गेंदों में बनाए। इंग्लैंड को आखिरी दो ओवर में जीत के लिए 17 रन चाहिए थे। वोंग ने काशवी गौतम (34 रन पर एक विकेट) के खिलाफ दो चौके और एक छक्का लगाकर टीम को जीत दिला दी। श्रृंखला का निर्णायक मुकाबला तीन दिसंबर को खेला जाएगा। वोंग की ताबड़तोड़ पारी से पहले ग्रेस स्क्रिवेन्स ने सर्वाधिक 39 रन बनाने के अलावा माइया बाउचर के साथ पहले विकेट के लिए 38 की साझेदारी कर टीम को मजबूत शुरुआत दिलाई। बाउचर ने 27 रन की आक्रामक पारी में तीन चौके और एक छक्का लगाया।

आईपीएल मीडिया अधिकारों की कीमत 50 अरब अमेरिकी डॉलर तक पहुंच सकती है: धूमल

बेंगलुरू। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) अध्यक्ष अरूण धूमल का मानना है कि अगर खेल प्रेमियो की दिलचस्पी को ध्यान मे रखते हुए लीग मे नयापन और सुधार होता रहे तो इसके मीडिया अधिकारों की कीमत अगले दो दशक मे 50 अरब डॉलर (50 बिलियन) तक पहुंच सकती है। इस समय आईपीएल के पांच साल के लिए मीडिया अधिकारों की कीमत करीब 48000 करोड़ रूपए (6.2 बिलियन डॉलर) है। इस तरह कीमत के हिसाब से नेशनल फुटबॉल लीग (एनएफएल) के बाद आईपीएल दूसरे नंबर की लीग है। एनएफएल ने पिछले साल 11 वर्ष के लिए 110 बिलियन डॉलर की कीमत का करार किया है। धूमल ने यहां आरसीबी इनोवेशन लैब्स के लीडर्स मीट इंडिया कार्यक्रम मे कहा, अगर मुझे देखना है कि यह पिछले 15 साल मे कैसा रहा और आगे यह कैसा होगा तो हमें आईपीएल के मीडिया अधिकारों के करीब 2043 तक 50 बिलियन डॉलर (50 अरब डॉलर) के करीब पहुंचने की उम्मीद है। धूमल भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई(के कोषाध्यक्ष भी है। उन्होंने महिलाओं की प्रीमियर लीग (डब्ल्यूपीएल) की शुरूआत और क्रिकेट के 2028 लास एंजिल्स ओलंपिक मे शामिल किए जाने से भी वित्तीय लाभ की उम्मीद जताई।

विश्व कप ट्रॉफी पर पैर रखने वाले मार्श ने कहा, इसमें कुछ अपमानजनक नही था

मेलबर्न। विश्व कप ट्रॉफी पर पैर रखने के कारण भारतीय क्रिकेटप्रेमियों के कोपभाजन बने आस्ट्रेलियाई हरफनमौला मिशेल मार्श ने शुक्रवार को कहा कि यह अपमानजनक नही था और वह दोबारा ऐसा कर सकते हैं। भारत को छह विकेट से हराकर छठी बार विश्व कप जीतने के बाद आस्ट्रेलियाई कप्तान ने अपने इंस्टाग्राम पर मार्श की एक तस्वीर डाली जिसमे उनका पैर ट्रॉफी पर था। मार्श ने सेन रेडियो से कहा , इस तस्वीर मे कुछ भी अपमानजनक नही था। मैने इतना सोचा नही। सोशल मीडिया भी नही देखा जबकि हर कोई मुझे बता रहा है कि इस पर विवाद पैदा हो गया है। यह पूछने पर कि क्या वह दोबारा ऐसा करेंगे, मार्श ने कहा , ईमानदारी से कहूं तो शायद हां। भारतीय प्रशंसकों को मार्श की यह हरकत नागवार गुजरी थी। तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी ने कहा था , इस ट्रॉफी के लिए दुनिया की सभी टीमो मे मुकाबला था। आप इस ट्रॉफी को सिर पर रखना चाहते थे। उसी ट्रॉफी पर पैर रखा हुआ देखकर मुझे खुशी नही हुई। विश्व कप जीतने के चार दिन बाद भारत और आस्ट्रेलिया पांच मैचो की टी20 श्रृंखला के लिए फिर आमने सामने थे।

द. अफ्रीका टी20 लीग ने डिविलियर्स को ब्रांड दूत बनाया

जोहानिसबर्ग। दक्षिण अफ्रीका की प्रीमियर टी20 क्रिकेट लीग एसएटी20 ने दक्षिण अफ्रीका के पूर्व कप्तान एबी डिविलियर्स को दूसरे सत्र के लिए आधिकारिक ब्रांड दूत बनाया है। लीग का दूसरा सत्र 10 जनवरी से शुरू होगा जिसमे चार सप्ताह के भीतर 34 मैच खेले जाएंगे। इसमे छह वैश्विक टीमो के घरेलू और अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी भाग लेंगे। डिविलियर्स लीग की प्रबंधन टीम के साथ मिलकर काम करेंगे ताकि इसके प्रशंसकों का दायरा बढाया जा सके। एसए टी20 से जुड़ना फख्र की बात है। दक्षिण अफ्रीका क्रिकेट की इस अग्रणी लीग मे वैश्विक क्रिकेट मानचित्र पर चमकने का माद्दा है। डिविलियर्स के जुड़ने के बारे मे बेटवे एसए टी20 लीग के कमिश्नर ग्रीम स्मिथ ने कहा , एबी की अपार क्रिकेट प्रतिभा और दमदार शख्सियत उन्हें इस लीग के लिए परफेक्ट बनाती है। उनके जुड़ने से लीग का दर्जा मैदान के भीतर और बाहर बढेगा।

पीसीबी ने सलमान को चयन समिति में शामिल किया

लाहौर। एक बड़े घटनाक्रम मे पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड ने कलंकित पूर्व कप्तान सलमान बट को न्यूजीलैंड के खिलाफ अगले साल होने वाली पांच मैचों की टी20 श्रृंखला से पहले राष्ट्रीय चयन समिति मे शामिल किया है। 39 वर्ष के बट ने स्पॉट फिक्सिंग मामले मे पाच साल का प्रतिबंध झेलने के बाद 2016 मे क्रिकेट मे वापसी की। उन्हें , कामरान अकमल और राव इफ्तिखार अंजुम को हाल ही मे नियुक्त मुख्य चयनकर्ता वहाब रियाज का सलाहकार नियुक्त किया गया है। अगस्त 2010 मे पाकिस्तान और इंग्लैंड के बीच टेस्ट मैच के दौरान स्पॉट फिक्सिंग मे भूमिका के लिए बट पर पांच साल का प्रतिबंध लगाया गया था। उन्होने 2016 मे क्रिकेट मे वापसी की और घरेलू स्पर्धाओं मे काफी सफल रहे लेकिन राष्ट्रीय टीम मे दोबारा जगह नही बना सके।

राशिद, थॉर्नटन गोल्फ के दूसरे दौर के बाद शीर्ष पर

गुरूग्राम। दो बार के अंतरराष्ट्रीय विजेता राशिद खान कपिल देव ग्रांट थॉर्नटन आमंत्रण गोल्फ टूर्नामेंट के दूसरे दौर के बाद शुक्रवार को यहां कुल छह अंडर 138 के स्कोर के साथ शीर्ष पर चल रहे है। तीन बार के पीजीटीआई ऑर्डर ऑफ मेरिट चैपियन दिल्ली के राशिद दो करोड़ रुपए के पुरस्कार राशि वाले इस टूर्नामेंट के दूसरे दौर मे 70 का कार्ड खेला। उन्होंने पहले दौर मे 68 का स्कोर बनाया था। राशिद के साथ पहले दौर मे संयुक्त रूप से शीर्ष पर रहे गुरुग्राम के करण प्रताप सिंह (68-71) दूसरे दौर मे 71 के स्कोर के बाद संयुक्त रूप से दूसरे स्थान पर खिसक गए। उनका कुल स्कोर पांच अंडर 139 हो गया।सुनहित बिश्नोई (69-70) करण के साथ संयुक्त रूप से दूसरे स्थान पर है। प्रतियोगिता का कट छह ओवर 150 का रखा गया जिसे 53 पेशेवर खिलाड़ियों ने हासिल किया। राष्ट्रीय खेलो के स्वर्ण पदक विजेता मैसुरु के यशास चंद्रा एमएस (68) चार अंडर 140 के स्कोर के साथ चौथे स्थान पर है।

ताईजुल के चार विकेट, बांग्लादेश पहले टेस्ट में न्यूजीलैंड पर जीत से तीन विकेट दूर

सिलहट (बांग्लादेश)। बाएं हाथ के स्पिनर ताईजुल इस्लाम ने शुक्रवार को यहां न्यूजीलैंड के बल्लेबाजी क्रम को झकझोरते हुए 40 रन देकर चार विकेट झटके जिससे बांग्लादेश की टीम श्रृंखला के शुरूआती टेस्ट मे जीत से महज तीन विकेट दूर है। चौथे दिन स्टंप तक न्यूजीलैंड ने जीत के लिए 332 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए 113 तक सात विकेट गंवा दिए थे। डेरिल मिचेल 44 और ईश सोढ़ी सात रन बनाकर क्रीज पर मौजूद थे। सलामी बल्लेबाज डेवोन कॉनवे ही एक अन्य खिलाड़ी रहे जो 22 रन तक टिक सके। तेज गेंदबाज शोरिफुल इस्लाम ने पहले ओवर मे टॉम लैथम को शून्य पर आउट किया। फिर केन विलियमसन भी पहली पारी के शतकीय प्रदर्शन को दोहरा नही कर सके और तेजी से खराब होती पिच पर 11 रन बनाकर ताईजुल की गेंद पर पगबाधा हुए। उन्होंने रिव्यू भी लिया लेकिन कोई फायदा नही मिला। हेनरी निकोल्स आउट होने वाले अगले खिलाड़ी रहे। कॉनवे दूसरे छोर पर गिरते विकेट के बावजूद सकारात्मक बल्लेबाजी करते रहे और स्कोर चलायमान रखा।

ब्रिसबेन अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंट में वापसी करेंगे नडाल

मैड्रिड। स्पेनिश स्टार राफेल नडाल ने शुक्रवार को कहा कि वह जनवरी में आस्ट्रेलिया में होने वाले ब्रिसबेन अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंट में वापसी करेंगे। बाईस बार के ग्रैंडस्लैम चैम्पियन नडाल जनवरी के बाद से टूर पर नही खेले है।उन्होने सोशल मीडिया पर पोस्ट एक वीडियो मे कहा, एक साल तक टूर्नामेंट मे प्रतिस्पर्धा नही करने के बाद अब वापसी का समय। उन्होंने कहा, वापसी जनवरी के पहले हफ्ते मे ब्रिसबेन मे होगी। मिलता हूं। वह आस्ट्रेलियाई ओपन के दूसरे दौर मे मिली हार के दौरान कूल्हे मे चोट लगा बैठे थे। मई मे फ्रेंच ओपन के शुरू होने से पहले नडाल ने घोषणा की थी कि वह टूर्नामेंट मे नही खेलेंगे जिसे वह रिकॉर्ड 14 बार जीत चुके है। उन्होंने कहा था कि उन्हें नही पता कि वह कब वापसी करेंगे।

महिला जूनियर हॉकी विश्व कप में जर्मनी से हारी भारतीय टीम

भाषा। सैंटियागो

दो गोल की बढ़त बनाने के बावजूद भारतीय टीम एफआईएच हॉकी महिला जूनियर विश्व कप के रोमांचक मुकाबले में पिछली उपविजेता जर्मनी से 3 . 4 से हार गई। भारत के लिए अन्नु (11वां मिनट), रोपनी कुमारी (14वां मिनट) और मुमताज खान (24वां मिनट) ने गोल किए जबकि जर्मनी के लिए सोफिया श्वाबे (17वां), लौरा प्लथ (21वां और 36वां) और कैरोलिन सेइडेल (38वां) ने गोल दागे। पहले मैच में कनाडा को 12. 0 से हराने वाली भारतीय टीम ने पहले क्वार्टर में दबदबा बना लिया और जर्मनी की रक्षापंक्ति को खासा परेशान किया। इन हमलों के बीच भारत को लगातार पेनल्टी कॉर्नर मिले और दूसरे पर अन्नु ने गोल करके टीम को बढत दिलाई। इसके तीन मिनट बाद रोपनी ने गोल करके पहले क्वार्टर में भारत की बढत 2 . 0 की कर दी। दूसरे क्वार्टर में जर्मनी के लिए सोफिया ने दूसरे ही मिनट में फील्ड गोल दागा। वहीं लौरा ने बराबरी का गोल किया। मुमताज ने हालांकि 24वें मिनट में गोल करके हाफटाइम तक भारत को फिर 3 . 2 की बढत दिला दी। तीसरे क्वार्टर में भारत का जोर गेंद पर नियंत्रण बनाए रखने पर रहा जबकि जर्मनी ने बराबरी का गोल दाग दिया। लौरा ने 36वें मिनट में यह गोल किया।

टी-20 विश्व कप तक कप्तान रहें रोहित : गांगुली

भाषा। कोलकाता

वनडे विश्व कप में रोहित शर्मा की कप्तानी से प्रभावित पूर्व कप्तान सौरव गांगुली ने शुक्रवार को कहा कि उन्हें कम से कम अगले साल टी20 विश्व कप तक भारत का कप्तान बने रहना चाहिए। रोहित की कप्तानी में भारतीय टीम लगातार दस मैच जीतकर विश्व कप के फाइनल में पहुंची जहां उसे आस्ट्रेलिया ने छह विकेट से हराया। रोहित और विराट कोहली ने दस दिसंबर से दक्षिण अफ्रीका में होने वाली सीमित ओवरों की श्रृंखला से ब्रेक लिया है। गांगुली ने पत्रकारों से कहा कि दोनों को आराम की जरूरत है ताकि आगे के व्यस्त कार्यक्रम के लिए तरोताजा रहें। उन्होंने कहा , रोहित को सभी प्रारूपों में लौटने के बाद भारत की कप्तानी करनी चाहिए क्योंकि उसने विश्व कप में इतना शानदार प्रदर्शन किया। उन्होंने कहा , विश्व कप में आपने देखा कि उन्होंने कैसा खेला। वे भारतीय क्रिकेट का अभिन्न अंग हैं। विश्व कप द्विपक्षीय श्रृंखला से अलग है क्योंकि दबाव अलग है। इस विश्व कप में भारत ने शानदार प्रदर्शन किया और छह सात महीने बाद वेस्टइंडीज में भी उसे दोहराएंगे। रोहित एक लीडर है और मुझे उम्मीद है कि वह टी20 विश्व कप में भी कप्तान होगा।

दक्षिण अफ्रीका में भारत ए टीम के कप्तान होंगे भरत

नई दिल्ली। आंध्र के विकेटकीपर बल्लेबाज केएस भरत दक्षिण अफ्रीका ए के खिलाफ चार दिवसीय दो अभ्यास मैचों मे भारत ए के कप्तान होंगे। बीसीसीआई ने दोनो मैचो के लिए दो अलग अलग टीमो का ऐलान किया। भरत, साइ सुदर्शन, अभिमन्यु ईश्वरन, ध्रुव जुरेल, मानव सुतार और वी कावेरप्पा दोनो मैच खेलेंगे। बंगाल के शीर्ष क्रम के बल्लेबाज ईश्वरन फिट होने पर ही टीम मे होंगे। भरत ने जून मे आस्ट्रेलिया के खिलाफ भारत के लिए विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप फाइनल खेला था। कर्नाटक के देवदत्त पड्डिक्कल को भी पहले मैच के लिए टीम मे रखा गया है। यह मैच सेंचुरियन मे बॉक्सिंग डे टेस्ट से पहले होगा। मुंबई के सरफराज खान, प्रसिद्ध कृष्णा और तुषार देशपांडे भी 11 से 14 दिसंबर तक पहला मैच खेलेंगे। दूसरा मैच 26 से 29 दिसंबर तक खेला जाएगा जिसमें तिलक वर्मा, वाशिंगटन सुंदर, अक्षर पटेल और नवदीप सैनी खेलेंगे। बीसीसीआई ने 20 से 22 दिसंबर के बीच होने वाले अंतर टीम मैच के लिए भी खिलाड़ियों की घोषणा की है।

राष्ट्रीय रैंकिंग टेटे: शरत, साथियान मुश्किल जीत के साथ क्वार्टर फाइनल में पहुंचे

विजयवाड़ा। अनुभवी अचंता शरत कमल और जी साथियान ने शुक्रवार को यहां चौथी यूटीटी राष्ट्रीय रैंकिंग टेबल टेनिस चैपियनशिप के पुरुष एकल क्वार्टर फाइनल में प्रवेश किया। शीर्ष वरीयता प्राप्त मानव ठक्कर ने दिल्ली के यशांश मलिक को आसानी से 3-0 से हराया जबकि दूसरी वरीयता प्राप्त साथियान और छठी वरीयता प्राप्त शरत को क्रमश: आरबीआई के राज मंडल और रेलवे के आकाश पाल से कड़ी चुनौती का सामना करना पड़ा। दोनों खिलाड़ियो ने एकसमान 3-2 के अंतर से जीत दर्ज की।पीएसपीबी (पेट्रोलियम खेल संवर्धन बोर्ड) के सौरव साहा ने प्री-क्वार्टर फाइनल के कड़े मुकाबले मे एएआई के तीसरी वरीयता प्राप्त स्नेहित को 3-2 से हराया जबकि एंथोनी अमलराज ने चौथी वरीयता प्राप्त मानुष शाह को 3-1 से हराया।एक अन्य भारतीय अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी सानिल शेट्टी को रेलवे के रोनित भांजा से उलटफेर का शिकार होना पड़ा। रोनित ने 3-2 से जीत दर्ज की। महिला वर्ग मे छठी और सातवी महिला वरीयता प्राप्त मौमिता दत्ता और स्वास्तिका घोष प्री-क्वार्टर फाइनल में क्रमश: तमिलनाडु की याशिनी शिवशंकर और रेलवे की अनुषा कुटुम्बले से हार का सामना करना पड़ा।

रामनाथन सेमीफाइनल में तागुची से भिड़ेंगे

कलबुर्गी। भारत के पांचवे वरीय टेनिस खिलाड़ी रामकुमार रामनाथन ने शुक्रवार को यहां हमवतन मनीष सुरेशकुमार को हराकर कलबुर्गी ओपन के सेमीफाइनल में प्रवेश किया। रामनाथन ने क्वार्टरफाइनल मे सुरेशकुमार पर 7-5 6-0 से जीत हासिल की। हाल मे दो आईटीएफ25 के खिताब जीतने वाले रामकुमार का सामना अंतिम चार मे जापान के रयोतारो तागुची से होगा जिन्होंने भारतीय क्वालीफायर आर्यन शाह को 6-3 6-2 से हराया। भारत के छठे वरीय ऋषभ अग्रवाल को जापान के दूसरे वरीयता प्राप्त मातसुदा से 0-6, 4-6 से हार मिली। आस्ट्रिया के सातवे वरीय डेविड पिचलर ने जापान के सेटा वातानाबे को 6-0 6-0 से हराकर सेमीफाइनल मे जगह बनाई।

भारतीय मुक्केबाजों ने आठ और पदक पक्के किए

● जूनियर चैम्पियनशिप

भाषा। नई दिल्ली

एशियाई जूनियर चैम्पियन निशा (52 किग्रा) और आकांक्षा (70 किग्रा) ने अर्मेनिया के एरेवान में चल रही आईबीए जूनियर विश्व मुक्केबाजी चैम्पियनशिप के सेमीफाइनल में जगह बनाई जिससे आठ भारतीयों ने पदक पक्के कर लिए। भारत की लड़कियों ने दबदबे भरा प्रदर्शन दिखाया जिससे दिन में रिंग में उतरी सभी पांच मुक्केबाजों ने अपने मुकाबले जीतकर सेमीफाइनल में जगह बनाई। आकांक्षा ने उज्बेकिस्तान की कुरबोनबोएवा रेहोना को 4–1 के विभाजित फैसले में मात दी। निशा ने आयरलैंड की ग्रेस कॉनवे को 5–0 के सर्वसम्मत फैसले में शिकस्त दी। श्रुष्ठि ने 63 किग्राा वजन वर्ग के दूसरे राउंड में रूस की मारिया काजाओवा पर रैफरी के द्वारा मुकाबला रोकने (आरएससी) से जीत हासिल की। कृतिका (75 किग्रा) ने मेक्सिको की मेलेंडेज सांचेज को पहले राउंड में आरएससी से हराया। विन्नी (57 किग्रा) ने त्रिनिदाद एवं टोबैगो की नुनेज नाईओमी के वॉकओवर से सेमीफाइनल में प्रवेश किया। लड़कों के वर्ग में नतीजे मिले जुले रहे जिसमें पांच में से तीन मुक्केबाजों ने अंतिम चार में जगह बनाई। हेमंत सांगवान (80 किग्रा से अधिक) और सिकंदर (48 किग्रा) ने क्रमश: बुल्गारिया के बाचेवस्की रोसेलिन को और किर्गिस्तान के उर्मानोव रामजिदिन को 5–0 के समान अंतर से पराजित किया। वहीं 75 किग्रा के क्वार्टरफाइनल में साहिल ने उज्बेकिस्तान के रूसलन इसानोव के खिलाफ 3–2 के विभाजित फैसले में जीत हासिल की।

थापा, संजीत, पंघाल राष्ट्रीय मुक्केबाजी के फाइनल में

शिलांग। अनुभवी शिव थापा (63.5 किग्रा) और 2021 एशियाई चैम्पियन संजीत (92 किग्रा) को राष्ट्रीय मुक्केबाजी चैम्पियनशिप के सेमीफाइनल में ज्यादा चुनौती का सामना नही करना पड़ा। छह बार एशियाई चैम्पियनशिप मे पदक जीतने वाले थापा ने अपने अनुभव का फायदा उठाते हुए महाराष्ट्र के हरविंश तवारी को 5-0 से शिकस्त दी। खिताबी मुकाबले मे असम के इस मुक्केबाज के सामने एसएससीबी (सेना खेल संवर्धन बोर्ड) की वंशज की चुनौती होगी। एसएससीबी के मुक्केबाज संजीत को हालांकि सेमीफाइनल मे एआईपी के विक्की से अच्छी चुनौती मिली लेकिन यह इस खिलाड़ी को रोकने के लिए काफी नही था। वह फाइनल मे हरियाणा के नवीन कुमार से भिड़ेंगे।एसएससीबी के दबदबे वाले दिन विश्व चैम्पियनशिप (2019) के रजत पदक विजेता अमित पंघाल (51 किग्रा) ने भी आरएसपीबी (रेलवे खेल संवर्धन बोर्ड) के अंकित को 5-2 से शिकस्त दी। स्वर्ण पदक के लिए पंघाल को चंडीगढ़ के अंशुल पूनिया की चुनौती से पार पाना होगा। थापा, संजीत, पंघाल के साथ एसएससीबी के 12 पहलवानों ने फाइनल मे जगह बनाई।

सीएमवाईके प्रिंटेक लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक शोबोरी गाँगुली द्वारा 100के, मिलाप भवन, 8/ए, बहादुर शाह ज़फ़र मार्ग, नई दिल्ली-110002, दूरभाष: 011-40110455 से प्रकाशित तथा बीएफएल इन्फोटेक लिमिटेड सी-9 सेक्टर-3, नोएडा-201301 (उ.प्र.) से मुद्रित। प्रधान संपादक : शोबोरी गाँगुली, स्थानीय सम्पादक: प्रदीप तिवारी। पाठकों को सुझाव दिया जाता है कि इस अखबार के किसी भी विज्ञापन पर प्रतिक्रिया करने से पहले पूरी तरह उसके बारे में दिए गए दावों, शर्तों और तथ्यों की जांच कर लें। पायनियर ग्रुप के मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक या उसका कोई भी कर्मचारी विज्ञापनदाता द्वारा उनके किसी उत्पाद तथा सेवा हेतु किए गए किसी दावे की सच्चाई का आश्वासन या उत्तरदायित्व नहीं लेता है। ऐसे विज्ञापनों के बाद किसी आर्थिक क्षति के लिए वे जिम्मेदार भी नहीं हैं। पत्रवार्ता ऑफिस- एफ-31, सेक्टर 6, नोएडा, गौतमबुद्धनगर-201301, उत्तर प्रदेश, दूरभाष- 120-4879900।